राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

वर्ष 3 अंक 298

मूल्य ₹6 .00, नई दिल्ली, रविवार, 5 अप्रैल 2020

www.jagran.com

पृष्ठ 14

शाह रुख ने अपने चार मंजिला दफ्तर को क्वारंटाइन सेंटर बनाने की पेशकश की >>6

कोरोना मीटर

(स्रोत : वर्ल्डोमीटर्स डॉट इंफो स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय)

	विश्व	अमेरिका	स्पेन	भारत	29 मार्च की स्थिति	दिल्ली
कुल केस	11,82,398	2,77,613	1,24,736	3,645	957	445
मौतें	63,913	7,406	11,744	101	25	6
स्वस्थ हुए	2,44,108	12,294	34,219	215	83	15

भारत के प्रमुख राज्य

राज्य	केस	मौतें
महाराष्ट्र	635	19
तमिलनाडु	485	1
केरल	306	2
तेलंगाना	229	6
राजस्थान	200	0
उत्तर प्रदेश	234	2
आंध्र प्रदेश	161	1
कर्नाटक	144	3
अन्य	806	61

रात 11 :30 बजे तक

अन्य प्रमुख देश

देश	इटली	जर्मनी	फ्रांस
केस	1,24,632	92,050	82,165
मौतें	15,362	1,295	7,560

नोट : कोरोना से प्रभावित लोगों के संदर्भ में आंकड़े उल्लिखित दो सोतों के अतिरिक्त जागरण न्यूज नेटवर्क के रूप में अन्य माध्यमों से भी लिए गए हैं। अत : तालिका तथा दैनिक जागरण के इस अंक में प्रकाशित सामग्री में आंकड़ों का अंतर संभव है।

सच्चे कर्मयोगियों की सराहना भी करें और सहायता भी

अखबार वितरित करने वाले हमारे सहयोगी वास्तविक कर्मयोगी हैं। प्रतिकूल मौसम तो छोड़िए, आज इस कठिन समय में भी वे आपका प्रिय अखबार आप तक पहुंचा रहे हैं और वह भी स्वच्छता का अतिरिक्त ध्यान रखते हुए। आज जब हम हर भारतीय की चिंता कर रहे हैं तब इनकी मदद करना हमारा कर्तव्य बनता है। कृपया इनके बिल का ऑनलाइन या नगद भुगतान तुरंत करें। आप एक से अधिक माह का अग्रिम भुगतान भी कर सकते हैं ताकि वे अपने परिवार का भरण-पोषण भी कर सकें और समाचारों के सबसे भरोसेमंद स्रोत यानी आपके अखबार को आप तक पहुंचा भी सकें। अपने मोबाइल से इस क्यूआर कोड को स्कैन कर यह वीडियो जरूर देखें।

याद रहे : आज रात नौ बजे, नौ मिनट तक जलाना है दीया

जीत जाएंगे जंग ▶ पीएम की अपील पर कोरोना के खिलाफ करोड़ों भारतीय फिर दिखाएंगे एकजुटता, लॉकडाउन का पूरी सख्ती से करेंगे पालन

जेएनएन, नई दिल्ली

कोरोना के विरुद्ध लड़ाई में आज यानी पांच अप्रैल को देश एक बार फिर एकजुट दिखेगा। इस महामारी के अंधकार को चुनौती देने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अपील पर देश के 130 करोड़ लोग रात नौ बजे नौ मिनट के लिए दीया जलाएंगे। यह दीप जलाना इस बात का प्रतीक होगा कि कोरोना के खिलाफ इस लड़ाई में कोई अकेला नहीं है।

तीन अप्रैल को प्रधानमंत्री मोदी ने एक वीडियो संदेश में देश की जनता से यह अपील की थी। उन्होंने कहा था कि इस रविवार रात नौ बजे नौ मिनट के लिए हर व्यक्ति घर की सभी लाइटें बंद करके अपने दरवाजे या बालकनी में आकर दीया, मोमबत्ती, टॉर्च या मोबाइल की फ्लैशलाइट जलाए। चारों तरफ जब हर व्यक्ति एक-एक दिया जलाएगा, तब प्रकाश की महाशक्ति का अनुभव होगा। यह उजागर होगा कि एक ही मकसद से हम सब लड़ रहे हैं। मोदी ने कहा कि उस प्रकाश के बीच हम सब अपने मन में संकल्प करें कि हम अकेले नहीं हैं। 130 करोड़ भारतीय एक ही संकल्प से बंधे हैं। हमारे उत्साह से बड़ी कोई ताकत नहीं है। कोरोना के विरुद्ध युद्ध को भी इसी उत्साह से जीतना है।

अटल को किया याद : शनिवार को मोदी ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की एक वीडियो क्लिप ट्वीट करते हुए लोगों को फिर दीप जलाने के संकल्प की याद दिलाई। इस क्लिप में वाजपेयी अपनी एक प्रसिद्ध कविता का पाठ करते दिख रहे हैं। इस कविता की पंक्तियां कुछ इस तरह हैं-भरी दुपहरी में अंधियारा, सूरज परछाईं से हारा, अंतरतम का नेह निचोड़ें, बुझी हुई बाती सुलगाएं, आओ फिर से दीया जलाएं।

मानें हिदायत : मोदी ने अपने संदेश में विशेषतौर पर उल्लेख किया कि लोग दीप जलाने की इस प्रक्रिया में भी एक-दूसरे से दूरी बनाए रखने के निर्देशों का पूरा पालन करें। कहीं भी एकत्र होकर दीया जलाने जैसे समारोह का आयोजन नहीं किया जाए। लॉकडाउन का पूरी सख्ती से पालन करते हुए अपनी छतों, बालकनी या दरवाजे पर ही दीया जलाना है। स्पष्ट तौर पर प्रधानमंत्री का इशारा उन घटनाओं की ओर था, जब जनता कर्फ्यू के दिन कुछ लोग ताली, थाली बजाने के लिए गलियों में उतर आए थे।

इस बीच सरकार ने दीया, मोमबत्ती जलाने वालों के लिए विशेष निर्देश भी जारी किया है। इसमें कहा गया है कि दीया या मोमबत्ती जलाने से पहले अल्कोहल आधारित सैनिटाइजर का प्रयोग कतई नहीं करें। अल्कोहल बहुत ज्वलनशील होता है। ऐसे में सैनिटाइजर के इस्तेमाल से आग पकड़ने का खतरा रहेगा। सरकार ने कहा है कि दीया जलाने से पहले हाथ धोने के लिए साबुन का इस्तेमाल करें।

लाइट बंद करने से नहीं पड़ेगा बिजली आपूर्ति पर असर पेज>>3

महामारी के विरुद्ध युद्ध में दिखेगी प्रकाश की महाशक्ति, बढ़ेगा देश का मनोबल

नरेंद्र मोदी फाइल

जनता कर्फ्यू में दिखी थी एकजुटता

प्रधानमंत्री मोदी की अपील पर 22 मार्च को जनता कर्फ्यू के दौरान भी देश ने एकजुटता दिखाई थी। उस दिन मोदी ने कोरोना के खिलाफ लड़ाई में जुटे स्वास्थ्यकर्मियों, पुलिस वालों व अन्य आवश्यक सेवाओं से जुड़े लोगों के सम्मान में शाम पांच बजे पांच मिनट के लिए लोगों से ताली, थाली आदि बजाने की अपील की थी। इस अपील पर पूरे देश ने एक साथ ताली, थाली और शंख बजाकर इस युद्ध में अपनी एकजुटता दिखाई थी।

हेल्पलाइन नंबर

कोरोना से जुड़ी सही जानकारी देने के लिए भारत सरकार और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वाट्सएप हेल्पलाइन नंबर जारी किए हैं। इन नंबरों को मोबाइल में सुरक्षित करके कोई भी प्रामाणिक सूचना पाई जा सकती है। कृपया नंबर दर्ज करके वाट्सएप पर सिर्फ नमस्कार का संदेश भेजें। तुरंत एक मेन्यू आएगा, जिसके अनुसार वांछित जानकारी ली जा सकती है।

who:+41 798931892

mygov : +919013151515

कोरोना वायरस को रोकने के लिए कंटेनमेंट प्लान तैयार ● पेज 3

'जिन जिलों से ज्यादा फोन, उन डीएम पर होगा फैसला' ● पेज 5

लोग नहीं माने तो महाराष्ट्र में लंबा खिंचेगा लॉकडाउन ● पेज 6

सरोकार

अखबार पहुंचाकर जन-जागरण में जुटीं 'कर्मयोगी' बेटियां

फर्रुखाबाद : घरों में सिमटे लोगों को आसपास और देश-दुनिया की सूचनाओं से अपडेट रखा जाना भी संकटकाल में अत्यावश्यक है। इसीलिए मीडिया को अनिवार्य सेवा का दर्जा है। उप्र के फर्रुखाबाद की ये दो कर्मयोगी बेटियां इस सेवा की पूर्ति में जुटी हैं। (पेज-12)

रविवार विशेष

कोरोना से कराह रहे कश्मीर को संघ का सहारा

श्रीनगर : अलगाववादियों और जिहादियों के गढ़ कश्मीर में भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्थानीय मुस्लिम कार्यकर्ता आम लोगों तक मदद पहुंचाने में जुट गए हैं। ये कार्यकर्ता जरूरतमंद लोगों को राशन के साथ-साथ दवाएं और मास्क भी वितरित कर रहे हैं। (पेज-12)

संक्रमितों में एक तिहाई तब्लीगी जमात वाले

कहर ▶ देशभर में जमात से जुड़े 1,000 से ज्यादा लोगों में हुई कोरोना की पुष्टि, संदिग्धों की पहचान के लिए अभियान जारी

अब तक इनसे जुड़े 22,000 से ज्यादा लोगों को किया गया है आइसोलेट

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

आंकड़े इस बात के गवाह हैं कि कैसे कोरोना के खिलाफ देश की लड़ाई को तब्लीगी जमात ने कमजोर किया है। स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक दिल्ली के निजामुद्दीन में तब्लीगी जमात के मजहबी आयोजन में शामिल होने और उनके संपर्क में आने वाले 1,000 से ज्यादा लोगों में अब तक संक्रमण की पुष्टि हो चुकी है। यह देश में संक्रमण के कुल मामलों के एक तिहाई के बराबर है। आयोजन में शामिल हुए या उनके संपर्क में आए 22 हजार से अधिक लोगों को आइसोलेशन में रखा गया है। तब्लीगी जमात के लोगों और उनके संपर्क में आने वाले संदिग्धों की पहचान के लिए सघन अभियान जारी है।

देश की राजधानी में तब्लीगी जमात के आयोजन को नहीं रोक पाने को कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई में बड़ा धक्का बताते हुए स्वास्थ्य मंत्रालय के संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने कहा कि देश में कुल कोरोना केस का 30 फीसद एक जगह से आया है। हम इस खतरे को समझने और रोकने में विफल रहे। गृह मंत्रालय की संयुक्त सचिव पुण्य सलिला श्रीवास्तव ने बताया कि पूरे देश में चलाए गए सघन अभियान के बाद तब्लीगी जमात से जुड़े और उनके संपर्क में आने वाले 22 हजार से अधिक लोगों की पहचान की गई है। उन सभी को आइसोलेशन में रखा गया है। जिन 17 राज्यों में तब्लीगी जमात से जुड़े कोरोना के मरीज पाए गए हैं, उनमें तमिलनाडु, दिल्ली, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, जम्मू-कश्मीर, असम, कर्नाटक, अंडमान-निकोबार, उत्तराखंड, हरियाणा, महाराष्ट्र, केरल, हिमाचल, अरुणाचल प्रदेश और झारखंड शामिल हैं। तब्लीगी जमात में फैले कोरोना की कड़ी को तोड़ने में सफलता मिलने के बारे में पूछे जाने पर लव अग्रवाल ने कहा कि यह हमारी हर दिन की लड़ाई है। आज भी 17 राज्यों में तब्लीगी के संपर्कों की तलाश जारी है। यदि एक भी संपर्क किसी कारण से पता नहीं चला तो हमें नए सिरे से मुसीबत का सामना करना पड़ सकता है।

कोरोना संक्रमितों में बड़ी संख्या नौजवानों की : भारत में कोरोना के मरीजों के वर्गीकरण से साफ हुआ है कि इनमें बड़ी संख्या नौजवानों की है। 60 से अधिक उम्र के कोरोना के मरीज महज 17 फीसद हैं। सबसे अधिक कोरोना के मरीज 21 से 40 साल की उम्र वाले हैं। इस आयु वर्ग के मरीजों का अनुपात 42 फीसद है। 41 से 60 साल के बीच के मरीज 33 फीसद हैं। 20 साल से कम उम्र के मरीज महज नौ फीसद हैं। भारत में गंभीर स्थिति वाले कोरोना के मरीजों की संख्या केवल 58 हैं, जिन्हें वेंटिलेटर जैसे लाइफ सपोर्ट सिस्टम की जरूरत पड़ी है। इनमें अधिकांश केरल, मध्य प्रदेश और दिल्ली के हैं।

लॉकडाउन तोड़कर भी मजहबी प्रचार में जुटे थे जमाती पेज>>4

राजीव गांधी अस्पताल में दो नर्सों से तब्लीगियों ने की छेड़छाड़ पेज>>4

खतरे को समझ पाने और रोकने में विफलता को सरकार ने स्वीकारा

कहा, आयोजन नहीं रोक पाना कोरोना के खिलाफ लड़ाई में बड़ा धक्का

त्रिपुरा की राजधानी अगरतला में शनिवार को स्वास्थ्य कार्यकर्ता दिल्ली के निजामुद्दीन में तब्लीगी जमात के जलसे में शामिल लोगों की स्क्रीनिंग करने पुलिस सुरक्षा में पहुंचे। प्रेट्र

लगातार बढ़ाई जा रही टेस्टिंग की क्षमता

सरकार लगातार टेस्टिंग की क्षमता बढ़ाने की दिशा में भी कार्यरत है। लव अग्रवाल ने बताया कि इस समय रोजाना 10,000 जांच की क्षमता है। 100 से ज्यादा सरकारी और कई निजी लैब में जांच की सुविधा उपलब्ध है। पिछले हफ्ते तक जांच की क्षमता 5000 प्रतिदिन थी। डॉक्टरों के लिए एन95 मास्क और अन्य चीजों की आपूर्ति तय करने के लिए सरकार विभिन्न स्रोतों से इनकी खरीद के प्रयास में है। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च के मुताबिक अब तक 75000 लोगों की जांच हो चुकी है।

आयुष्मान योजना के लाभार्थियों को निजी लैब में मुफ्त जांच की सुविधा

नई दिल्ली : आयुष्मान भारत योजना के सभी लाभार्थियों को अब निजी क्षेत्र की लैब में जांच और योजना में शामिल अस्पतालों में कोरोना के इलाज की मुफ्त सुविधा मिलेगी। इस फैसले से कोरोना के खिलाफ मुहिम में निजी क्षेत्र भी सक्रियता से शामिल होगा। यह जानकारी आयुष्मान योजना लागू करने वाले राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण ने दी। प्राधिकरण के अनुसार इस फैसले से कोरोना के खिलाफ जंग में काफी सहूलियत होगी। एक बयान में एनएचए ने कहा कि अभी सरकारी अस्पतालों में कोविड-19 की मुफ्त जांच व इलाज की सुविधा मिली हुई है। (पेज-6)

अमेरिका में डेढ़ हजार की मौत, ट्रंप बोले-युद्ध जैसे हालात

वाशिंगटन : कोरोना महामारी की चपेट में आए अमेरिका में हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने माना कि उनके देश में युद्ध जैसे हालात हो गए हैं। इस स्थिति से मुकाबले के लिए अमेरिकी सेना की भूमिका बढ़ाई जा रही है। उन्होंने अमेरिकियों को मास्क पहनने की सलाह दी, लेकिन खुद इसे पहनने से परहेज किया। अमेरिका में कोरोना वायरस से संक्रमित होने वाले लोगों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हो रही है। बीते 24 घंटे में ही 33 हजार से ज्यादा नए मामले सामने आने से पीड़ितों का आंकड़ा पौने तीन लाख के पार पहुंच गया है। (पेज-11)

कश्मीर में 'कोरोना बम' फोड़ने की तैयारी में आतंकवादी

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

कोरोना वायरस की आड़ में जम्मू-कश्मीर में 'कोरोना बम' की साजिश रची जा रही है। कश्मीर में सक्रिय जिहादी तत्व किसी भी समय बड़े पैमाने पर कोरोना संक्रमण का कारण बन सकते हैं। इसलिए सेना ने आतंकियों को ढूंढ़-ढूंढ़ कर जल्द मार गिराने के लिए अभियान तेज कर दिए हैं।

यह सनसनीखेज जानकारी दक्षिण कश्मीर में आतंकरोधी अभियानों का जिम्मा संभालने वाली सेना की विक्टर फोर्स के जीओसी मेजर जनरल ए सेन गुप्ता ने दी है। कुलगाम में हिजबुल मुजाहिदीन के चार आतंकियों को मुठभेड़ में ढेर करने के बाद पत्रकारों से मेजर जनरल ए सेन गुप्ता ने कहा कि आतंकियों का मकसद कश्मीर में तबाही, अफरातफरी फैलाना है। इससे ज्यादा कुछ नहीं है। इसके लिए वह कुछ भी कर सकते हैं। कोरोना का संक्रमण आतंकियों व उनके आकाओं के लिए कश्मीर में नया हथियार बन सकता है। इसलिए लोगों को सावधानी बरतनी होगी। आतंकी एक जगह टिक कर नहीं बैठते। वह अपने ठिकानों को लगातार बदलते रहते हैं। इस प्रक्रिया के दौरान वह बहुत से लोगों के संपर्क में आते हैं। इसलिए घाटी में सक्रिय आतंकियों में से कई आतंकियों के कोरोना के संक्रमण होने की आशंका को नहीं नकारा जा सकता।

संक्रमितों के घर में रुक रहे आतंकी पेज>>5

केंद्र सरकार की लोगों को सलाह, घर पर बना मास्क पहनें

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

भारत में कोरोना वायरस के मामलों में तेजी आने के साथ ही केंद्र सरकार ने शनिवार को एक परामर्श (एडवाइजरी) जारी कर लोगों से 'घर पर बना मास्क' लगाने को कहा है। खासतौर पर तब जब वे घरों से बाहर निकलें।

'चेहरे और मुंह के बचाव के लिए घर में बने सुरक्षा कवर के इस्तेमाल पर एडवाइजरी' में सरकार ने कहा, 'जो लोग बीमार नहीं हैं या जिन्हें सांस लेने में कोई समस्या नहीं हैं वे घर में बने बार-बार इस्तेमाल किए जा सकने वाले मास्क या फेस कवर का इस्तेमाल कर सकते हैं खासतौर पर तब जबकि वे घर से बाहर निकलें। इससे बड़े पैमाने पर समुदाय का बचाव करने में मदद मिलेगी।' कई देशों ने घर में बने मास्क को आम लोगों के लिए फायदेमंद होने का दावा किया है। एडवाइजरी में कहा गया है कि स्वास्थ्य कर्मियों, कोविड-19 के मरीजों के साथ या उनके संपर्क में आने वाले व्यक्तियों और कोरोना मरीजों के लिए यह मास्क पहनने की सिफारिश नहीं की जाती है। इन श्रेणी के लोगों को विशिष्ट सुरक्षा मास्क पहनने की जरूरत है। एडवाइजरी में सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार कार्यालय की ओर से जारी एक मैनुअल भी शामिल हैं। इसमें देश के घनी आबादी वाले इलाकों में रह रहे लोगों को खासतौर पर फेस कवर पहने की सलाह दी गई है।

मैनुअल के मुताबिक, 'घर पर बने बार-बार इस्तेमाल किए जा सकने वाले फेस कवर संक्रमित व्यक्ति से हवा में पहुंचीं छोटी बूंदों के सांस के साथ शरीर में जाने की संभावना को कम करते हैं, लेकिन वे पूरी सुरक्षा प्रदान नहीं करते।' मैनुअल के मुताबिक, इस्तेमाल किए जा चुके किसी भी सूती कपड़े को फेस कवर बनाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। कपड़े के रंग से कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन फेस कवर बनाने से पहले उसे उबलते हुए पानी में पांच मिनट तक धोया जाए और अच्छी तरह से सुखा लिया जाए। इसमें घर में फेस कवर बनाने की प्रक्रिया भी बताई गई है। साथ ही यह सुनिश्चित करने के लिए कहा गया है कि यह चेहरे पर पूरी तरह फिट होता हो और इसके दोनों ओर कोई गैप नहीं हो। मैनुअल में लोगों से अनुरोध किया गया है कि वे फेस कवर पहनने से पहले अपने हाथ अच्छी तरह से धोएं। अगर फेस कवर नम हो जाए तो नया फेस कवर इस्तेमाल करें और उसे बिना साफ किए दोबारा इस्तेमाल न करें।

उप्र में लॉकडाउन के बाद भी बिना मास्क नहीं निकल सकेंगे लोग पेज>>5

सतर्कता

- घर से बाहर निकलने से पहले जरूर लगाएं
- घनी आबादी में रहने वालों के लिए खासतौर पर हिदायत

प्रतीकात्मक।

खुल रहे राज

24 बीघे के विशाल फार्म हाउस में है स्वीमिंग पूल, कई लग्जरी गाड़ियां भी, दस-दस किलोवाट के दो बिजली कनेक्शन, छह कारिंदे करते हैं रखवाली, चारों ओर विभिन्न प्रजातियों के फलदार पेड़ों से घिरी है यह संपत्ति

मौलाना साद के कांधला फार्म हाउस में मौज-मस्ती के सारे इंतजाम

जागरण संवाददाता. शामली

देशव्यापी लॉकडाउन के दौरान दिल्ली के निजामुद्दीन स्थित तब्लीगी मरकज में कोरोना संक्रमण को लेकर बरती गई लापरवाही के आरोपित मौलाना साद का उप्र के शामली (कांधला) में विशाल फार्म हाउस है। करीब 24 बीघे में फैले फार्म हाउस में सुख-सुविधा और मौज-मस्ती के पूरे इंतजाम हैं। इसमें स्वीमिंग पूल से लेकर लग्जरी गाड़ियों की पार्किंग व नौकरों के रहने की खास व्यवस्था है। चारों ओर विभिन्न प्रजातियों के फलदार पेड़ों से घिरी यह संपत्ति मौलाना साद को पुश्तैनी बंटवारे में मिली है। बेशकीमती फार्म हाउस को विशाल दीवारें चारों ओर से घेरे हैं। फार्म हाउस की रखवाली में छह कारिंदे लगे हुए हैं।

तब्लीगी जमात का अमीर (मुखिया) मौलाना साद मूलरूप से शामली जिले के कांधला कस्बे का रहने वाला है। हालांकि आजादी से पहले ही साद का परिवार दिल्ली में रहने लगा था। कांधला में उसकी पुश्तैनी जमीन व संपत्ति है। उसका जन्म दिल्ली में ही 10 मई 1965 को हुआ था। कांधला स्थित गांव मलकपुर-जिडाना की छोटी नहर के पास मौलाना साद का 24 बीघे का फार्म हाउस है। यह संपत्ति उसी के नाम है। फार्म हाउस के लगभग तीन सौ गज के हिस्से को आवासीय रूप दिया गया है। इसमें आधा दर्जन से ज्यादा कमरे, लॉबी व बरामदें हैं। फार्म हाउस में एक स्वीमिंग पूल भी है। बताया जाता है कि यहां फिलहाल आधा दर्जन से ज्यादा लग्जरी गाड़ियां मौजूद हैं। फार्म हाउस की बाकी जमीन पर लॉन व सड़कें हैं। प्रवेश करने के लिए दो गेट हैं। सुरक्षा के लिहाज से बाउंड्री को बिजली के तारों से कवर किया गया है। बताया जाता है कि यहां मौज-मस्ती की सभी सुविधाएं मौजूद हैं। पावर कॉरपोरेशन के अवर अभियंता संदीप कुमार के अनुसार, फार्म हाउस के आवासीय परिसर के लिए दस किलोवाट का आवासीय बिजली कनेक्शन मौलाना साद के बेटे यूसुफ के नाम से है, जबकि फार्म हाउस में पेड़ों व अन्य व्यवस्था के लिए दस किलोवाट का ट्यूबवेल कनेक्शन मौलाना साद के नाम से है।

शामली के कस्बा कांधला स्थित तब्लीगी जमात के अमीर मौलाना साद के फार्म हाउस में बना स्वीमिंग पूल। सौजन्य : सोशल मीडिया

अब प्रवेश बंद, छोड़े गए कुत्ते : निजामुद्दीन प्रकरण से पहले यहां साद के करीबियों का आना-जाना था, लेकिन मरकज में कोरोना को लेकर उपजे विवाद के बाद फार्म हाउस में बाहरी लोगों की आमद बंद कर अंदर से ताला लगा दिया गया है। बाउंड्री पर लगे तारों में अब बिजली आपूर्ति शुरू कर पालतू कुत्तों को भी सुरक्षा के लिए छोड़ दिया गया है। फार्म हाउस के आवासीय परिसर में फिलहाल सन्नाटा पसरा है।

डेढ़ माह पूर्व आया था सपरिवार पेज>>4

एयरलाइन व रेलवे चरणबद्ध तरीके से सेवाएं शुरू करने को तैयार

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

कोरोना वायरस का प्रसार रोकने के लिए लागू 21 दिन के लॉकडाउन की अवधि पूरी होने के बाद एयरलाइन कंपनियों और रेलवे ने अपनी सेवाएं चरणबद्ध तरीके से शुरू करने की तैयारी शुरू कर दी हैं। एयरलाइनों ने जहां टिकटों की बुकिंग शुरू कर दी है वहीं रेलवे ने यात्री ट्रेनें बहाल करने की तैयारी प्रारंभ कर दी है। हालांकि उनका संचालन सरकार के फैसले पर ही निर्भर करेगा।

रेलवे ने शनिवार को एक बयान जारी कर बताया कि यात्री ट्रेनें बहाल करने पर अभी कोई अंतिम फैसला नहीं लिया गया है, लेकिन उसके सभी जोनों ने उनके संचालन की योजना बनानी शुरू कर दी हैं। रेलवे ने यह बयान रेल मंत्री पीयूष गोयल और रेलवे बोर्ड के चेयरमैन व अन्य अधिकारियों के बीच शुक्रवार को हुई वीडियो कांफ्रेंस के मद्देनजर जारी किया है। बैठक में फैसला किया गया कि यात्री ट्रेन सेवाएं चरणबद्ध तरीके से बहाल की जाएंगी। एक अधिकारी ने बताया, 'रेलवे बोर्ड से हर ट्रेन के बारे में विशिष्ट मंजूरी मिलने के बाद ही ट्रेन सेवाओं को बहाल किया जाएगा।'

रैकों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए रेलवे के सभी 17 जोन और डिवीजन ट्रेनों की पहचान करने और 15 अप्रैल से उनकी सेवाएं बहाल करने की योजना बना रहे हैं। उदाहरण के तौर पर उत्तर रेलवे की फिरोजपुर डिवीजन ने अमृतसर, जम्मू तवी, श्री वैष्णो देवी कटरा और फिरोजपुर रेलवे स्टेशनों पर उपलब्ध रैकों की उपलब्धता के आधार पर 23 ट्रेनों को बहाल करने की योजना बनाई है।

ट्रेन सेवा बहाल होने पर सभी यात्रियों की होगी थर्मल स्क्रीनिंग पेज>>5

न्यूज गैलरी

होटल व धार्मिक स्थलों की अब नियमित जांच

नई दिल्ली : तब्लीगी मरकज में बड़ी संख्या में लोगों को ठहराए जाने का मामला सामने आने के बाद दिल्ली पुलिस ने जांच का दायरा तो बढ़ा ही दिया है। साथ ही सभी जिलों के डीसीपी को अतिरिक्त सुरक्षा बरतने के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही सभी धार्मिक व व्यावसायिक केंद्रों की नियमित चेकिंग के निर्देश दिए हैं। पुलिस आयुक्त एसएन श्रीवास्तव ने सभी 15 जिलों के डीसीपी को निर्देश दिए हैं कि वे अपने-अपने जिले में स्थित सभी मस्जिदों, मदरसों, गुरुद्वारों, मंदिरों, धर्मशालाओं व कम्युनिटी सेंटरों की प्रतिदिन बार-बार चेकिंग करवाएं। सभी जिलों को सख्त निर्देश हैं कि कहीं भी लॉकडाउन के नियमों का उल्लंघन नहीं होने दिया जाए। यदि कहीं भी किसी तरह की गड़बड़ी हुई तो पुलिस के स्थानीय अधिकारियों पर कार्रवाई होगी। (जासं)

पुलिस की हेल्पलाइन नंबर पर आई 996 कॉल

नई दिल्ली : लॉकडाउन के दौरान लोगों की मदद करने के लिए दिल्ली पुलिस की तरफ से जारी किए गए हेल्पलाइन नंबर 23469526 पर शुक्रवार दोपहर से लेकर शनिवार दोपहर तक 996 कॉल आईं। हेल्पलाइन के शुरू होने से लेकर अब तक कुल 11 हजार 348 कॉल आई हैं। शनिवार को 111 कॉल दूसरे राज्यों से आईं। 29 कॉल ऐसे लोगों ने की, जिनके पास खाना और खाने के लिए पैसे नहीं थे। इन सभी लोगों की मदद एनजीओ के जरिये पुलिस ने राशन पहुंचाकर की। 30 कॉल स्वस्थ्य संबंधी आईं। 653 कॉल मूवमेंट पास से संबंधित थीं। पुलिस ने प्रेम नगर, नांगलोई, स्वतंत्र नगर और नरेला में 310 राशन के पैकेट भी बांटे। शनिवार को एक एनजीओ नारायण महिला विकास संस्थान की मदद से 200 लोगों को खाने के पैकेट और सैनिटाइजर उपलब्ध कराए गए। (जासं)

आम व दूध लेकर हजरत निजामुद्दीन पहुंचेगी मालगाड़ी

नई दिल्ली : उत्तर भारत के शहरों में आम, खरबूजा व दूध की आपूर्ति करने के लिए आंध्र प्रदेश से एक विशेष मालगाड़ी रविवार रात हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर पहुंचेगी। यहां से उत्तर भारत के अन्य शहरों में इसे भेजा जाएगा। लॉकडाउन में आवश्यक सामान व खाद्य सामग्री की कमी न हो इसके लिए मालगाड़ी का परिचालन किया जा रहा है। इन दिनों ट्रेन नहीं चलने से मालगाड़ी पूरी रफ्तार से चल रही हैं। इसी कड़ी में आंध्र प्रदेश से दूध दूरंतो स्पेशल मालगाड़ी चलाई गई है। इससे 2.4 लाख लीटर दूध के साथ ही 23 टन आम और 23 टन खरबूजा लाया जा रहा है। लॉकडाउन 14 अप्रैल को समाप्त हो रहा है। संभव है कि 15 अप्रैल से रेलवे ट्रैक पर मालगाड़ी के साथ ही प्रीमियम व लोकल ट्रेन चलाई जाए। (जासं)

बगैर राशन कार्ड वालों को मिलेगा पांच किलो राशन

योजना ▶ 6.5 लाख लोगों को जल्द राशन मिलने की उम्मीद

40 से 50 हजार लोगों ने वेबसाइट पर जाकर आवेदन किया

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली में पिछले कुछ वर्षों में राशन कार्ड के लिए आवेदन करने वाले करीब 6.5 लाख लोगों को दिल्ली सरकार 5-5 किलो राशन देगी। अभी तक दिल्ली सरकार की वेबसाइट पर भी करीब 40 से 50 हजार लोगों ने आवेदन किया है। इन्हें बुधवार या गुरुवार से राशन मिलने लगेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि शुक्रवार को हम लोगों ने 663928 लोगों को लंच कराया था और 678544 लोगों को डिनर कराया था। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार ने 10 लाख लोगों को लंच और डिनर कराने की व्यवस्था की है। अब इंतजाम ज्यादा है और लोग कम आ रहे हैं। हम दिल्ली में किसी को भूखा मरने नहीं देंगे। सरकार लोगों के लिए जो कर रही है, उसके अलावा बहुत सारी सामाजिक और धार्मिक संस्थाएं अपने स्तर पर 200, 400, 1000 और 10,000 खाने के पैकेट बांट रही हैं। पुण्य का काम करने का यही समय है। हमने कहा था कि जिन लोगों के पास राशन कार्ड हैं, ऐसे 71 लाख लोगों को हम प्रत्येक को 7.5 किलो राशन मुफ्त दे रहे हैं। दिल्ली में कुछ ऐसे भी लोग हैं, जिनके पास राशन कार्ड नहीं है। ऐसे लोगों के लिए दिल्ली सरकार की वेबसाइट पर एक फार्म बना कर डाला है। आप वहां पंजीकरण कर सकते हैं। आपके पंजीकरण की जरूरत इसलिए है, क्योंकि बिना पंजीकरण के राशन बांटते हैं, तो एक ही व्यक्ति कई बार आकर राशन ले सकता है और इतना राशन नहीं है।

अरविंद केजरीवाल। (फाइल)

दिल्ली में 6.5 लाख लोग ऐसे हैं, जिन्होंने पिछले कुछ वर्षों में राशन कार्ड के लिए आवेदन किया था, लेकिन उन्हें राशन कार्ड नहीं मिला है। उन सब लोगों को हम राशन देंगे। पंजीकरण करने के लिए 3 अप्रैल से वेबसाइट खुली है। मुख्यमंत्री ने अपील की कि वेबसाइट पर जाकर इस फार्म को खुद भी भर सकते हैं। इसके अलावा, जितने भी पढ़े-लिखे लोग हैं, वे अपने आसपास के गरीब लोगों के फार्म भरवा दें।

लॉकडाउन को एक अवसर के रूप में लेना चाहिए : सीएम

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना वायरस के मद्देनजर जारी लॉकडाउन के बीच मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उप-मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने विशेषज्ञों के साथ मिलकर दिल्ली के माता-पिता और बच्चों के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग से बातचीत की। इस दौरान केजरीवाल ने कहा कि कोरोना के बारे में बच्चों के बहुत सारे सवाल हैं। माता-पिता को उन्हें कैसे संबोधित करना चाहिए इस बारे में वह विशेषज्ञों की राय जान सकते हैं।

बच्चों ने पूछा कि लॉकडाउन में स्कूल बंद होने के कारण गर्मियों की छुट्टियां कम तो नहीं हो जाएंगी? इस सवाल का जवाब देते हुए सिसोदिया ने कहा कि इस पर आगे के हालात, अभिभावकों और विशेषज्ञों की राय के अनुसार ही कोई अंतिम निर्णय लेंगे। हालांकि, अभी तक गर्मियों की छुट्टियां कम करने के संबंध में कोई निर्णय नहीं लिया गया है।

लॉकडाउन के दौरान स्कूल फीस माफ करने के सवालों पर कहा कि अगर फीस नहीं दी गई तो स्कूलों के सामने शिक्षकों को वेतन देने की समस्या आएगी। हालांकि इस पर केजरीवाल ने अभिभावकों से ही सुझाव मांगे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि लॉकडाउन को हमें एक अवसर के रूप में लेना चाहिए, जिसका हम कई तरह से सदुपयोग कर सकते हैं।

'केंद्र कोरोना से लड़ने में नहीं कर रहा मदद'

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

आरोप

- **सिसोदिया ने कहा, केंद्र दिल्ली की जरूरतों की अनदेखी कर रहा**
- **राज्यों को 17,287 करोड़ रुपये दिए, लेकिन दिल्ली को नहीं**

दिल्ली के उपमुख्यमंत्री और वित्त मंत्री मनीष सिसोदिया ने शनिवार को कोरोना से लड़ने के लिए केंद्र सरकार से दिल्ली सरकार को कोई सहायता राशि नहीं देने का आरोप लगाया है। उन्होंने इसे अनुचित बताते हुए केंद्र पर कड़ी नाराजगी जताई है। उन्होंने इसे शर्मनाक और सौतेला व्यवहार करार देते हुए कहा कि कोरोना से लड़ने के लिए अन्य राज्यों को आपातकालीन सहायता के रूप में 17,287 करोड़ रुपये प्रदान किए गए हैं। उन्होंने वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को संबोधित करते हुए एक पत्र में अपनी निराशा व्यक्त की है।

सिसोदिया ने कहा कि पूरा देश कोरोना वायरस से पीड़ित है। दिल्ली सरकार और दिल्ली की जनता केंद्र सरकार के साथ सामूहिक रूप से इसके खिलाफ लड़ाई लड़ने के लिए काम कर रही है। केंद्र की ओर से आपातकालीन आपदा प्रबंधन राहत के तहत सभी राज्यों को 17,000 करोड़ रुपये की राशि दी गई पर दिल्ली को इसमें से एक रुपया भी नहीं दिया गया। इससे हम काफी हतोत्साहित हुए हैं और काफी निराशा हुई है।

उन्होंने कहा कि दिल्ली देश की राष्ट्रीय राजधानी है और कोरोना को नियंत्रित करने के लिए केंद्र के साथ दिल्ली में काम कर रही है। दिल्ली को किसी भी प्रकार की सहायता प्रदान नहीं करना, सिर्फ यह दर्शाता है कि कोरोना जैसी आपदा के समय भी केंद्र सरकार राजनीति कर रही है।

सिसोदिया ने कहा कि उन्होंने इस संबंध में केंद्र सरकार को पत्र लिखा है कि जब पूरा देश कोरोना के खिलाफ लड़ाई लड़ रहा है, तो दिल्ली को राहत देने के दायरे से बाहर रखा जा रहा है। हमने केंद्र से दिल्ली सरकार को और अधिक पीपीई और जांच किट प्रदान करने का अनुरोध किया है। इस समय हम सभी एकजुट रहें और राजनीति न करें। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को संबोधित पत्र में उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि दिल्ली को पैसे के आवंटन से बाहर रखा गया है।

उन्होंने यह भी कहा कि कोरोना पॉजिटिव के मामले अन्य राज्यों की तुलना में दिल्ली में सर्वाधिक हैं। मुख्यमंत्री केजरीवाल ने 23 मार्च को दिल्ली में पूर्ण रूप से लॉकडाउन की घोषणा की थी, जिसके बाद प्रधानमंत्री मादी द्वारा देश को पूरी तरह से बंद कर दिया गया।

स्थिति को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए, सिसोदिया ने कहा कि कोरोना के खिलाफ लड़ाई में दिल्ली केंद्र का सर्वाधिक साथ दे रही है। दिल्ली सरकार दिन में दो बार 6.5 लाख से अधिक लोगों को भोजन प्रदान कर रही है और लगभग 10 लाख लोगों को भोजन प्रदान करने की क्षमता रखती है। दिल्ली सरकार ने दिल्ली में 71 लाख लाभार्थियों को 7.5 किलोग्राम राशन मुफ्त देने का प्रावधान किया है और गैर-राशन कार्ड धारकों को राशन प्रदान करने के लिए योजना पर काम शुरू कर दिया है। ऐसी स्थिति में दिल्ली को राहत कोष के दायरे से बाहर रखा जाना दिल्ली के लोगों के प्रति अनुचित व्यवहार है।

रोजाना दो लाख लोगों को भोजन करा रही दिल्ली पुलिस

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : लॉकडाउन में बेवजह बाहर निकलने वाले लोगों पर सख्ती करने के साथ ही दिल्ली पुलिस विभिन्न जिलों में प्रतिदिन दो लाख लोगों को भोजन भी करा रही है। इसके लिए 15 जिलों में 400 एनजीओ का सहयोग लिया जा रहा है। अब तक दिल्ली पुलिस की हेल्पलाइन पर पैसे और खाना न होने से संबंधित 474 कॉल आ चुकी हैं। विभिन्न एनजीओ की मदद से ऐसे परिवारों को भोजन और घर पर खाना बनाने के लिए राशन उपलब्ध कराया गया है।

हर थाना क्षेत्र में सड़क पर रहने वाले, रिक्शा चालक, कबाड़ बीनने वाले और बेघर लोगों के लिए खाने की व्यवस्था की जा रही है। इसके लिए दिल्ली पुलिस ने 15 जिलों में 250 केंद्र बनाए हैं, जहां दोपहर और रात का भोजन लोगों को बांटा जा रहा है। लोगों को कोरोना वायरस से बचने के लिए जागरूक भी किया जा रहा है। शनिवार को मध्य दिल्ली में 20 हजार 400 लोगों को दोपहर और रात का भोजन कराया गया। राजधानी के 15 जिलों में शनिवार को दो लाख से अधिक लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था की गई। वहीं, कुछ एनजीओ व कंपनियों की मदद से जरूरतमंद लोगों के घरों तक राशन पहुंचाने की व्यवस्था भी की जा रही है।

राजधानी में 221 से ज्यादा डॉक्टर और पैरामेडिकल कर्मचारी क्वारंटाइन

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

- **गंगाराम अस्पताल के 108 डॉक्टर, नर्स व कर्मचारी किए गए क्वारंटाइन**
- **पश्चिमी दिल्ली के भी एक निजी अस्पताल के 85 डॉक्टर व कर्मचारी हैं क्वारंटाइन**

कोरोना के मामले बढ़ने के साथ ही डॉक्टरों व अन्य पैरामेडिकल कर्मचारियों में संक्रमण का खतरा भी बढ़ता जा रहा है। दिल्ली में अब तक विभिन्न अस्पतालों के 221 से ज्यादा स्वास्थ्यकर्मी क्वारंटाइन किए जा चुके हैं।

गंगाराम अस्पताल के 108 कर्मचारी क्वारंटाइन किए गए हैं। दिल्ली राज्य कैंसर संस्थान में एक डॉक्टर सहित चार कर्मचारियों के कोरोना से पीड़ित होने के बाद इस अस्पताल को कुछ समय के लिए बंद करने का फैसला किया गया है ताकि कैंसर संस्थान को सैनिटाइज किया जा सके। इसके बाद इसे दोबारा शुरू किया जाएगा। वहीं गंगाराम अस्पताल का कहना है कि क्वारंटाइन किए गए सभी डॉक्टर व कर्मचारियों की पहली जांच रिपोर्ट नेगेटिव आई है। एक और जांच होनी अभी बाकी है। एहतियात के तौर पर सभी को क्वारंटाइन में रहने की सलाह दी गई है।

गंगाराम अस्पताल के 108 कर्मचारियों में से 23 डॉक्टर व कर्मचारी अस्पताल में क्वारंटाइन किए गए हैं, जबकि 85 लोगों को घर में क्वारंटाइन रहने का निर्देश दिया गया है। अस्पताल प्रशासन के अनुसार, पिछले दिनों दो मरीज इलाज के लिए आए थे। उन्हें दूसरी बीमारी थी। इलाज के दौरान सांस लेने में परेशानी होने पर भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) के दिशा-निर्देश के अनुसार उनकी जांच कराई गई तो उनमें कोरोना की पुष्टि हुई। इसके बाद दोनों मरीजों को सरकारी अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया गया। साथ ही गंगाराम अस्पताल में उनके संपर्क में आए सभी डॉक्टर, नर्स व पैरामेडिकल कर्मचारियों को तुरंत क्वारंटाइन रहने का निर्देश दिया गया।

कई मरीजों को भी जोखिम

क्वारंटाइन होने से पहले डॉक्टर व अन्य कर्मचारी अस्पताल में अपनी सेवाएं भी दे रहे थे। ऐसे में उस दौरान उनके संपर्क में आए कई मरीजों को भी जोखिम हो सकता है। वहीं, पश्चिमी दिल्ली के महाराजा अग्रसेन अस्पताल में 85 डॉक्टर व कर्मचारी क्वारंटाइन किए गए हैं।

एम्स में तीन फैकल्टी सहित 11 डॉक्टर क्वारंटाइन

एम्स में तीन फैकल्टी सहित 11 डॉक्टर क्वारंटाइन हैं। इनमें आठ रेजिडेंट डॉक्टर हैं। उनके सैंपल भी जांच के लिए भेजे गए हैं। इसके अलावा आरएमएल अस्पताल में 17 डॉक्टर व कर्मचारी पहले से क्वारंटाइन हैं। सफदरजंग अस्पताल में भी कुछ कर्मचारी क्वारंटाइन किए गए हैं।

अब तक आठ डॉक्टरों समेत 12 कर्मचारियों को कोरोना

राजधानी के विभिन्न अस्पतालों के आठ डॉक्टरों सहित अब तक कुल 12 कर्मचारी कोरोना वायरस से पीड़ित हो चुके हैं। इनमें से तीन नर्सिंग कर्मचारी और डीडीयू अस्पताल के एक अन्य कर्मचारी शामिल हैं। इन्हें क्वारंटाइन किया गया है।

बची हैं सात-आठ हजार ही पीपीई किट, 50 हजार की जरूरत

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना वायरस के खिलाफ जारी जंग में दिल्ली के स्वास्थ्य कर्मचारियों को जल्द ही परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। दरअसल, दिल्ली में कोरोना वायरस के इलाज में जरूरी पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्यूपमेंट (पीपीई) किट का अभाव है। स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन ने कहा है कि हमारे पास सिर्फ 7 से 8 हजार पीपीई किट ही बची हैं, जिनसे अगले दो-तीन दिनों तक काम चलाया जा सकता है। शनिवार को स्वास्थ्य मंत्री जैन ने कहा कि दिल्ली सरकार ने तत्काल 50 हजार पीपीई किट की मांग की है, जो उपलब्ध कराया जाना जरूरी है। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा है कि पीपीई किट की कमी हो गई। मैं अपने डॉक्टर्स नर्स और सभी स्टाफ को लेकर चिंतित हूं। उन्होंने कहा है कि दिल्ली में 67 फीसद मरीज मरकज से संबंधित हैं।

बीते 24 घंटों के बीच दिल्ली की तस्वीर बेहद चिंताजनक करने वाली है। उन्होंने कहा कि तब्लीगी जमात के 600 और लोगों को दो दिन में पहचान करके क्वारंटाइन करा दिया गया है। 200 और लोगों की पहचान का काम चल रहा है। हो सकता है कि वे दूसरे राज्यों में चले गए हों।

साफ हुई यमुना

भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं की साक्षी रही यमुना नदी भारतवासियों के लिए पवित्र नदी है। मगर इसमें गंदे नालों व प्रदूषित जल बहाने से यमुना बदरंग हो गई है। इन दिनों देश में लॉकडाउन की वजह से सारी फैक्ट्रियां बंद हैं जिससे प्रदूषित पानी इसमें नही बहाया जा रहा है। उसी की वजह से इन दिनों यमुना अपने असली नीले रंग में बह रही है। ऐसा नजारा देख आइटीओ घाट पर यमुना को प्रणाम करता एक युवक। संजय

पतंगबाजी से बिजली हो रही गुल

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : लॉकडाउन के दौरान निर्बाध बिजली आपूर्ति बड़ी चुनौती है। लोग कार्यालय का जरूरी कामकाज घर से कर रहे हैं। बिजली गुल होने से इन्हें काम करने में परेशानी हो रही है। अस्पतालों व क्वारंटाइन सेंटर में भी निर्बाध रूप से बिजली आपूर्ति होती रहे इसके लिए दिल्ली ट्रांसको लिमिटेड (डीटीएल) सहित निजी बिजली वितरण कंपनियां अपने स्तर पर जरूरी कदम उठा रही हैं, लेकिन पतंगबाज इनके प्रयासों पर पानी फेर रहे हैं। इनकी ओर से पतंगों को उड़ाने के लिए प्रयोग किए जाने वाले धातु वाले मांझे से बिजली लाइन क्षतिग्रस्त हो रही है। इसके कारण कई इलाकों में बिजली आपूर्ति करने में परेशानी आ रही है। लोग छत पर चढ़कर पतंगबाजी कर रहे हैं।

डीटीएल के प्रवक्ता डॉ. ऋषि राज का कहना है कि कोरोना का संक्रमण न बढ़े इसे ध्यान में रखकर कम कर्मचारियों को ड्यूटी पर बुलाया जा रहा है। ऐसे में पतंगबाजी की वजह से बिजली लाइन में आने वाली खराबी से परेशानी बढ़ सकती है। उन्होंने बिजली लाइन के आसपास पतंग नहीं उड़ाने की सलाह दी है।

स्वयंसेवकों ने पशु-पक्षियों की सेवा का उठाया बीड़ा

नेमिष हेमंत, नई दिल्ली

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के स्वयं सेवकों ने लॉकडाउन में बेजुबान पशु-पक्षियों की सेवा का भी बीड़ा उठाया है। देशभर में कोरोना संक्रमण के बाद हुए लॉकडाउन का विपरीत असर जहां गरीब लोगों और मजदूरों पर पड़ रहा है, वहीं पशु-पक्षियों के सामने भी दाना-पानी का संकट खड़ा हो गया है। राजधानी दिल्ली में कई स्थानों पर लोग पक्षियों को दाना डालने का काम करते थे। आम दिनों में कई स्वयंसेवी संस्थाओं की ओर से भी इनके भोजन की व्यवस्था की जाती है मगर लॉकडॉउन के बाद इनके सामने भी संकट खड़ा हो गया है। ऐसे में संघ के स्वयंसेवकों ने पक्षियों को दाना डालने की मुहिम शुरू की है। लाजपत नगर, करोलबाग, कनॉट प्लेस, साउथ एक्स, नीति बाग, पटेल चौक, बाराखंभा रोड जैसे अनेक स्थानों पर पक्षियों को दाना डालने के स्थान बने हुए हैं। पार्कों, मंदिरों व दूसरे सार्वजनिक स्थानों पर भी लोग पक्षियों को दाना डालते हैं मगर अब पक्षियों को दाना और पानी मिलना बंद हो गया है। लोग घरों से बाहर नहीं निकल रहे पा रहे थे और मंदिर और दूसरे धार्मिक न्यास भी बंद थे। ऐसे में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने दिल्ली में 100 से ज्यादा स्थानों पर पक्षियों के लिए दाना डालने की व्यवस्था की शुरू की है। पक्षियों के लिए रोज पांच-छह किस्म के अनाज का दाना डाला जा रहा है।

दिल्ली के प्रांत प्रचार प्रमुख रितेश अग्रवाल ने बताया कि उनके स्वयंसेवक रोज सुबह पक्षियों के लिए दाना-पानी की व्यवस्था कर रहे हैं। ऐसे में अन्य स्थानों पर से भी अगर उनके पास लोगों के संदेश आते हैं तो वहां भी पक्षियों के लिए दाना भेजा जाता है।

दिल्ली के रोहिणी स्थित जापानी पार्क, रोहिणी सेक्टर-11 और रोहिणी सेक्टर-9 के गोल चक्कर, लाजपत नगर फ्लाई ओवर, बाराखंभा क्रॉसिंग, कनॉट प्लेस, करोलबाग, झंडेवालान मंदिर, साउथ एक्स, द्वारका पार्क, हनुमान मंदिर, यमुना बाजार और साईं मंदिर के पास बने पक्षियों के दाना पानी के स्थान पर संघ के स्वयंसेवक पक्षियों के लिए निरंतर दाना डालने के काम में जुटे हैं। ऐसे में इन स्थानों पर एक बार फिर भूखे पक्षियों का तांता लगा हुआ है। बाहरी दिल्ली के पूठकला गांव में जवाहर झील के पास भी पक्षियों के लिए दाना डाला जा रहा है। जवाहर झील के पास रोज हजारों पक्षी दाना चुगने आते थे, मगर लॉकडाउन के बाद लोगों ने वहीं दाना डालना बंद कर दिया था। रितेश अग्रवाल ने बताया कि लॉकडाउन की अवधि में स्वयंसेवक रोज दाना लेकर जाते हैं। दाने के साथ ही पक्षियों के लिए ताजा पानी का इंतजाम भी किया जाता है। दाना स्थल पर बने पानी के स्थान की सफाई करके वहां रोज ताजा पानी भी पक्षियों के लिए भरा जाता है। संघ के स्वयंसेवकों की ओर से स्ट्रीट डॉग के लिए भी बिस्कुट और दूध देने का काम भी किया जा रहा है। रितेश अग्रवाल ने बताया कि लॉकडॉउन की अवधि के दौरान उनके स्वयंसेवक सड़कों पर घूमने वाली गायों और गोवंश के लिए हरे चारे की व्यवस्था भी कर रहे हैं और दिल्ली में 50 से अधिक स्थानों पर गायों को हरा चारा डाला जा रहा है। लॉकडाउन की अवधि के दौरान पक्षियों, गायों और स्ट्रीट डॉग के लिए दाना, चारा और खाने की व्यवस्था स्वयंसेवक करते रहेंगे।

विशेष बात यह है कि पक्षियों और जानवरों की सेवा के दौरान स्वयंसेवकों की ओर से कोरोना संक्रमण से बचाव के प्रोटोकॉल का पूरा पालन किया जा रहा है।

अच्छी खबर

किसी कोरोना पीड़ित गर्भवती का प्रसव कराने का देश में पहला मामला, एम्स में मां के पास ही आइसोलेशन वार्ड में रखा गया है बच्चे को

कोरोना पीड़िता ने दिया स्वस्थ बच्चे को जन्म

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना के बढ़ते संक्रमण के बीच एम्स के डॉक्टरों ने इस बीमारी से पीड़ित गर्भवती का ऑपरेशन कर प्रसव कराने में सफलता हासिल की। शुक्रवार रात को गायनी विभाग के डॉक्टरों ने यह प्रसव कराया। इस टीम में करीब 10 लोग थे, जिसमें डॉक्टरों के अलावा नर्स भी शामिल हैं। बच्चा बिल्कुल ठीक है। उसे मां के पास ही आइसोलेशन वार्ड में रखा गया है। महिला कोरोना पॉजिटिव जरूर हैं, लेकिन उन्हें बीमार होने का लक्षण नहीं है। किसी कोरोना पीड़ित गर्भवती का प्रसव कराने का देश में यह पहला मामला है। स्वाइन फ्लू के मामले भी इस तरह के कई केस देखे गए हैं, जब इससे पीड़ित गर्भवती महिला का ऑपरेशन कर प्रीमैच्योर प्रसव कराया गया। उल्लेखनीय है कि एम्स में भर्ती कोरोना पीड़ित महिला के पति एम्स के फिजियोलॉजी विभाग में डॉक्टर हैं, जो कोरोना से पीड़ित पाए गए।

एम्स फाइल फोटो।

आइसोलेशन वार्ड को बनाया गया ऑपरेशन थियेटर : डॉक्टर की गर्भवती पत्नी को कोरोना का संक्रमण होने की बात का पता चलने पर एम्स के डॉक्टरों ने गुरुवार को ही सिजेरियन ऑपरेशन की तैयारी शुरू कर दी थी। आइसोलेशन वार्ड में ही ऑपरेशन थियेटर तैयार किया गया। 10 डॉक्टरों व नर्सों की टीम ने मिलकर प्रसव कराया। एहतियात के लिए बच्चे में संक्रमण की जांच भी की जा रही है।

मां के पास है बच्चा : एम्स के गायनी विभाग की प्रोफेसर डॉ. नीरजा भाटला ने कहा गर्भवती महिला से बच्चे को भी संक्रमण होने का अभी प्रमाण नहीं मिला है। इस वजह से उसे मां के पास ही रखा गया है। साथ ही उसे मां का दूध भी पिलाया जा रहा है। मां को मास्क पहनाकर रखा जा रहा है।

नवजात में नहीं देखा गया कोरोना का संक्रमण : ईरान में हाल ही में एक शोध पत्र प्रकाशित हुआ है। इसमें कोरोना से पीड़ित 31 गर्भवती महिलाओं की केस स्टडी की गई है। इसमें कहा गया है कि किसी भी महिला के शिशु को कोरोना का संक्रमण नहीं देखा गया।

गर्भवती महिलाएं रखें विशेष ध्यान : गर्भवती महिलाओं को इन दिनों विशेष ध्यान रखना चाहिए क्योंकि कोरोना का संक्रमण होने पर उन्हें सांस की परेशानी बढ़ सकती है। यह खतरनाक भी साबित हो सकता है। विदेश में हुए शोध में भी यह बात कही गई है।

लोगों को अब मिल रही साफ हवा

जासं, नई दिल्ली : लॉकडाउन का सबसे अच्छा असर अगर पड़ा है तो वह प्रदूषण पर। आमतौर पर दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण का स्तर काफी ज्यादा रहता है। लेकिन इन दिनों लॉकडाउन के कारण यह काफी कम दर्ज हो रहा है।

शनिवार को केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) में दिल्ली का एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआइ) 87 दर्ज हुआ। वहीं, फरीदाबाद, गुरुग्राम, नोएडा एवं ग्रेटर नोएडा में भी एक्यूआइ संतोषजनक श्रेणी में दर्ज हुआ, जबकि गाजियाबाद में यह मध्यम श्रेणी में रहा। मौसम विभाग के नई दिल्ली के प्रादेशिक मौसम पूर्वानुमान के प्रमुख डॉ. कुलदीप श्रीवास्तव ने बताया कि दिल्ली-एनसीआर के वातावरण में उद्योग व वाहनों से सबसे ज्यादा प्रदूषण दर्ज होता है। लेकिन लॉकडाउन की वजह से यह बंद है। इस कारण दिल्ली की हवा साफ हो गई है। आगे भी इसी तरह वातावरण भी साफ रहेगा।

अगले तीन दिन तक तेज हवा के साथ बादल-बारिश का दौर

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

- **राजधानी में शनिवार को अधिकतम तापमान 33.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ**

राजधानी में शनिवार को दिनभर धूप छाई रही। हवा की रफ्तार भी 18 से 20 किलोमीटर प्रतिघंटे रही। अधिकतम तापमान सामान्य के साथ 33.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। न्यूनतम तापमान सामान्य से 4 डिग्री कमी के साथ 14.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। हवा में नमी का अधिकतम स्तर 85 फीसद और न्यूनतम स्तर 26 फीसद दर्ज हुआ। मौसम विभाग के नई दिल्ली के प्रादेशिक मौसम पूर्वानुमान के प्रमुख डॉ. कुलदीप श्रीवास्तव ने बताया कि दिल्ली-एनसीआर में अगले तीन दिनों तक बादल छा सकते हैं।

डॉ. कुलदीप के अनुसार, रविवार दोपहर बाद से एक बार फिर उत्तर भारत से पश्चिमी विक्षोभ दस्तक देगा। इससे बादल छाएंगे। 15 किलोमीटर की रफ्तार से हवा भी चल सकती है।

इस दौरान अधिकतम तापमान 34 डिग्री और न्यूनतम तापमान 16 डिग्री रहने का अनुमान है। सोमवार को अधिकतम तापमान 34 से 35 डिग्री सेल्सियस तक रहने की संभावना है।

मंगलवार को बारिश होने की स्थिति बनेगी। धूल भरी आंधी भी चल सकती है और 30 से 40 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से हवा चल सकती है। अधितकम तापमान में गिरावट होगी और यह 33 डिग्री सेल्सियस तक जा सकता है। इसका प्रभाव पूरे दिल्ली-एनसीआर, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में भी पड़ेगा। गौरतलब है कि इससे पहले पश्चिमी विक्षोभ की वजह से 31 मार्च को बारिश हुई थी।

लाइट बंद करने से नहीं पड़ेगा बिजली आपूर्ति पर असर

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- मोदी की अपील पर आज रात नौ मिनट के लिए लाइट ऑफ करेंगे भारतीय
- सरकार का आश्वासन - ग्रिड की व्यवस्था है चौक-चौबंद

केंद्र सरकार ने आश्वस्त किया है कि पीएम नरेंद्र मोदी की अपील पर पूरे देश में रविवार की रात नौ बजे नौ मिनट के लिए सिर्फ घरों की लाइट बंद होने से देश में बिजली आपूर्ति को लेकर कोई बाधा उत्पन्न नहीं होगी। पीएम की तरफ से इस बारे में अपील किए जाने के बाद विपक्षी पार्टी कांग्रेस के कुछ नेताओं के अलावा कुछ विद्युत इंजीनियरों ने आशंका जताई थी कि नौ मिनट बिजली की खपत अचानक एकदम घट जाने से ग्रिड के फेल होने का खतरा है। वैसे पीएम की अपील के बाद कई राज्य सरकारों की तरफ से भी किसी आपातकालीन स्थिति से निपटने की तैयारी शुरू कर दी गई थी कि अगर बिजली की आपूर्ति अचानक बाधित हो जाती है तो किस तरह से काम चलाया जाएगा। स्वयं बिजली मंत्री आरके सिंह ने शुक्रवार को इस बारे में समीक्षा बैठक की थी।

सरकार की तरफ से बताया गया है कि जनता को सिर्फ अपने घर की लाइट बंद करनी है। बिजली से चलने वाले घर के बाकी उपकरण जैसे फ्रिज, टीवी आदि को बंद नहीं करना है। साथ ही अस्पतालों या अन्य आवश्यक सामान उपलब्ध कराने वाली जगहों पर लाइट भी बंद नहीं की जाएगी। स्थानीय निकायों को भी कहा गया है कि वे स्ट्रीट लाइटों को बंद नहीं करें। बिजली मंत्रालय के मुताबिक देश का ग्रिड सिस्टम बहुत ही मजबूत है, जो बिजली की मांग में आने वाली थोड़ी बहुत कमी को आसानी से सहन कर सकता है। देश में बिजली की मांग में कमी या वृद्धि का संतुलन बनाए रखने की उचित व्यवस्था है।

बिजली ग्रिड का प्रबंधन करने वाली एजेंसी पावर सिस्टम ऑपरेशन कॉर्प लिमिटेड भी हर तरह की स्थिति से निपटने के लिए तैयार है। एजेंसी की तरफ से बताया गया है कि घरेलू स्तर पर रोशनी के लिए पूरे देश में 12 से 13 हजार मेगावाट बिजली की खपत होती है। दो से तीन मिनट में 12-13 हजार मेगावाट मांग में अचानक कमी और फिर नौ मिनट बाद अचानक इतनी ही मांग बढ़ जाना असामान्य स्थिति है। ऐसे में हाइड्रो व गैस आधारित बिजली स्त्रोतों की मदद से किसी भी आपात स्थिति से निपटा जा सकता है। इसकी तैयारी भी का जा रही है। एजेंसी इस हालात के लिए कुछ ताप बिजली परियोजनाओं को पहले बंद करने और कुछ पनबिजली परियोजनाओं को उसी हिसाब से स्टार्ट करने की तैयारी में है। दरअसल, ताप बिजली परियोजनाओं को बंद करने और स्टार्ट करने में ज्यादा समय लगता है। राज्य आधारित डिस्पैच सेंटर को भी रविवार रात नौ बजे के हिसाब से लोड शेडिंग करने को कहा गया है। केंद्रीय बिजली सचिव संजीव नंदन सहाय ने राज्यों को पत्र लिखकर कहा है कि बिजली की मांग में आने वाले बदलाव के मद्देनजर ग्रिड प्रबंधन बनाए रखने की पूरी व्यवस्था की गई है। लोगों को बेवजह परेशान नहीं होना चाहिए।

राज्यों को और आर्थिक सहायता दे केंद्र : कांग्रेस

नई दिल्ली, प्रेट्र : कांग्रेस ने शनिवार को केंद्र सरकार से आग्रह किया कि कोरोना संकट से निपटने के लिए राज्यों को एक लाख करोड़ रुपये के आर्थिक पैकेज की घोषणा की जाए और उन्हें जीएसटी के बकाये का भुगतान भी किया जाए। पार्टी प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने कहा कि केंद्र सरकार कोरोना के खिलाफ लड़ाई में राज्य सरकारों एवं राजनीतिक दलों को साथ ले और आम सहमति बनाए। उन्होंने वीडियो लिंक के माध्यम से संवाददाताओं से कहा कि कोरोना के खिलाफ जंग में राज्य सरकारें अग्रिम पंक्ति में खड़ी हैं। इस संदर्भ में नीति एवं निर्णयों का क्रियान्वयन उनके द्वारा किया जा रहा है। हम केंद्र सरकार से आग्रह करते हैं कि राज्य सरकारों को इस लड़ाई में और मजबूत बनाया जाए।

सुप्रिया ने कहा कि राज्य सरकारों के पास धन और संसाधन की कमी है। हमारी मांग है कि केंद्र सरकार राज्य सरकारों के लिए एक लाख करोड़ रुपये के कोरोना आर्थिक पैकेज की घोषणा करे।

उन्होंने केंद्र से यह आग्रह भी किया कि राज्यों को जीएसटी के बकाये का 42 हजार करोड़ रुपये तत्काल जारी किया जाए। कांग्रेस प्रवक्ता ने कहा कि राज्यों के पास कर्ज देने की क्षमता बहुत सीमित है। रिजर्व बैंक राज्य सरकारों के लिए ऐसी व्यवस्था करे, ताकि उन्हें कम दर अथवा शून्य प्रतिशत की ब्याज पर कर्ज मिल सके। उन्होंने आग्रह किया कि इस लड़ाई को कोई सरकार या दल अकेले नहीं लड़ सकता। केंद्र सरकार कोरोना के खिलाफ लड़ाई में राज्य सरकारों एवं राजनीतिक दलों को साथ ले और आम सहमति बनाए।

ताली बजवाने और दीये जलवाने से समस्या हल नहीं होगी : राहुल

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर कटाक्ष करते हुए कहा कि भारत में कोरोना की पर्याप्त जांच नहीं हो रही है। ऐसे में लोगों से तालियां बजवाने एवं दीये जलवाने से समस्या का समाधान नहीं होगा। गांधी ने दुनिया के कई प्रमुख देशों और भारत में कोरोना की जांच के आंकड़े से जुड़ा एक ग्राफ साझा करते हुए ट्वीट किया, भारत कोविड-19 से लड़ने के लिए पर्याप्त जांच नहीं कर रहा है। उन्होंने प्रधानमंत्री का नाम लिए बगैर तंज कसते हुए कहा कि लोगों से ताली बजवाने और दीये जलवाने से समस्या हल नहीं होगी।

राहुल गांधी। फाइल

आंध्र प्रदेश हाई कोर्ट में तेजी से हो रही है ऑनलाइन सुनवाई

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : सुप्रीम कोर्ट की तर्ज पर हाई कोर्ट ने भी कोरोना वायरस संकट के काल में अति आवश्यक मामलों की सुनवाई का काम जारी रखा है। आंध्र प्रदेश के मुख्य न्यायाधीश जेके माहेश्वरी ने पिछले तीन-चार दिनों में ही लगभग चार दर्जन ऐसे मामलों को पंजीकृत करने का आदेश दिया है।

मुख्य न्यायाधीश माहेश्वरी ने आंध्र प्रदेश की निचली अदालतों को भी आदेश दिया है कि अति आवश्यक मामलों की वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये सुनवाई करें।

सुनवाई की पूरी प्रक्रिया जूम साफ्टवेयर के जरिए होती है। सभी जस्टिस, एडवोकेट जनरल, सॉलिसिटर जनरल, संबंधित वकील अपने-अपने घरों से ही इस साफ्टवेयर के जरिये जुड़ते हैं और सुनवाई के बाद आदेश अपलोड कर दिया जाता है। आंध्र प्रदेश में ऑनलाइन सुनवाई की प्रक्रिया 31 मार्च से की गई है और अब तक कुल 46 मामले सुनवाई के लिए पंजीकृत हुए हैं। बता दें कि कोरोना वायरस के कारण सुप्रीम कोर्ट में ऑनलाइन सुनवाई हो चुकी है।

कोरोना को रोकने के लिए कंटेनमेंट प्लान तैयार

योजना ▶ हॉटस्पॉट वाले इलाकों को पूरी तरह से कर दिया जाएगा लॉक

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

देश में कोरोना वायरस के बढ़ते मरीजों की संख्या और उनके हॉटस्पॉट की पहचान के बाद सरकार ने वायरस को उन्हीं इलाकों तक सीमित रखने के लिए कंटेनमेंट प्लान तैयार कर लिया है। हॉटस्पॉट वाले इलाके में कोरोना वायरस के और फैलने की स्थिति में कंटेनमेंट प्लान लागू किया जाएगा। प्लान में विस्तार से बताया गया है कि वायरस को फैलने से रोकने के लिए किन-किन उपायों की जरूरत होगी और किस-किस की क्या भूमिका होगी।

शनिवार को जारी कंटेनमेंट प्लान के अनुसार, कोरोना वायरस के स्वाइन फ्लू के एच1एन1 वायरस की तरह कुछ इलाकों में आउटब्रेक होने की आशंका है। वहीं, देश के अधिकांश हिस्से इससे बचे रहेंगे। ऐसे में इस वायरस को उसी इलाके तक सीमित रखने का काम युद्धस्तर पर करना होगा। इसमें जरा भी चूक से वायरस दूसरे इलाके में तबाही मचा सकता है। सरकार को आशंका है कि कोरोना वायरस के आउटब्रेक की संभावना शहरों के घनी आबादी वाले इलाकों में ज्यादा और खुले ग्रामीण इलाके में कम है।

कोरोना आउटब्रेक की स्थिति में तैयारियों की रूपरेखा बताते हुए कंटेनमेंट प्लान में कहा गया है कि इससे पीड़ित 81 फीसद मरीजों में सामान्य रूप से बीमारी के लक्षण होते हैं। केवल 14 फीसद मरीजों को अस्पताल में रखने की जरूरत होगी और केवल पांच फीसद ऐसे मरीज होते हैं जिन्हें वेंटिलेटर जैसे लाइफ सपोर्ट सिस्टम पर रखना होगा।

जाहिर है कि सामान्य रूप से बीमार लोगों को अस्पताल में रखने की जरूरत नहीं पड़ेगी और उनके लिए कोरोना के लिए बने विशेष अस्पतालों के पास ही निगरानी में रखे जाने की व्यवस्था की जानी चाहिए। इसके लिए होटल, गेस्ट हाउस से लेकर मौजूदा क्वारंटाइन सेंटर का इस्तेमाल किया जा सकता है। कोरोना के लिए बने विशेष अस्पताल में केवल उन्हीं मरीजों को रखा जाएगा जिनकी स्थिति गंभीर हो। स्वास्थ्य सेवाओं के बेहतर इस्तेमाल के लिए यह जरूरी है।

कंटेनमेंट प्लान का सबसे अहम हिस्सा ऐसे इलाके को पूरी तरह अलग-थलग रखने का है। इसके अनुसार ऐसे इलाके से किसी भी व्यक्ति को बाहर निकलने की इजाजत नहीं होगी। सारे रास्तों को बंद कर दिया जाएगा। जरूरी सेवाओं के लिए हर आने-जाने वाले की विस्तृत जानकारी रखी जाएगी और उसके बारे में लगातार अधिकारियों को अपडेट किया जाएगा।

जिला मजिस्ट्रेट की निगरानी में चलने वाले कंटेनमेंट प्लान में लोगों में बड़े पैमाने पर टेस्टिंग अभियान चलाया जाएगा और कोरोना के हर पॉजिटिव को तत्काल अलग-थलग किया जाएगा। वहीं, आम लोगों को वायरस से बचाने के लिए व्यापक और सघन प्रचार अभियान चलाया जाएगा ताकि जो लोग इससे बचे होंगे, उन्हें वायरस से बचाया जा सके। आउटब्रेक वाले इलाके में सांस और जुकाम से ग्रसित हर व्यक्ति की कोरोना जांच कराकर इसके वायरस की उपस्थिति सुनिश्चित की जाएगी। इसके साथ ही उन लोगों की भी सैंपल टेस्टिंग की जाएगी जिनमें कोरोना के लक्षण सामने नहीं आए हैं। ताकि पता लगाया जा सके कि कितने लोग ऐसे हैं जो कोरोना वायरस से ग्रसित तो हुए, लेकिन वह उन्हें प्रभावित नहीं कर सका।

बफर जोन पर भी रहेगी चौकस नजर : कंटेनमेंट प्लान में चिह्नित किए गए इलाके के चारों ओर एक बफर जोन की पहचान किए जाने का भी प्रावधान है। इस बफर जोन में कोरोना वायरस के लक्षण वाले मरीजों पर खास ध्यान रखा जाएगा। ताकि किसी तरह यदि कंटेनमेंट वाले इलाके से वायरस बाहर निकलने में सफल भी हो जाए तो इसे बफर जोन में ही रोका जा सके।

मनरेगा मजदूरों को लॉकडाउन अवधि के लिए पूरा पैसा मिले

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट में जनहित याचिका दायर कर सरकार और प्राधिकरणों को यह निर्देश देने का आग्रह किया गया है कि वो मनरेगा योजना के तहत काम करने वाले लोगों को लॉकडाउन अवधि के लिए पूरी मजदूरी दें। कोरोना वायरस की चेन को तोड़ने के लिए केंद्र सरकार ने 25 मार्च को 21 दिन के लॉकडाउन की घोषणा की थी।

मजदूर किसान शक्ति संगठन की तरफ से यह याचिका दायर की गई है। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कानून (मनरेगा) योजना के तहत सात करोड़ मजदूर पंजीकृत हैं। याचिका में कहा गया है कि लॉकडाउन अवधि के दौरान अन्य कर्मचारियों की तरफ इन्हें भी काम पर माना जाए। इसमें ग्रामीण विकास मंत्रालय को राज्यों को यह निर्देश देने का भी आग्रह किया गया है कि लॉकडाउन के दौरान वो मनरेगा मजदूरों को जो कुछ भी संभव है वो काम करने की अनुमति दें। मनरेगा मजदूरों को संविधान के अनुच्छेद 21 और 14 के तहत मिले स्वास्थ और जीविका के मौलिक अधिकारों की रक्षा की मांग की गई है।

वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये विपक्ष से भी बातचीत करेंगे प्रधानमंत्री मोदी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

संवाद

- आठ अप्रैल को होगी संसद के फ्लोर लीडर से चर्चा
- राजनीतिक एकजुटता, लॉकडाउन की अवधि आदि पर हो सकती है बात

कोरोना से निपटने के लिए लॉकडाउन और प्रधानमंत्री के संबोधनों की आलोचना कर रहे विपक्षी दलों से भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी चर्चा करेंगे। आठ अप्रैल को वह वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये उन सभी दलों के नेताओं से बात करेंगे जिनकी संसद में कम से कम संख्या पांच है। जाहिर है कि विपक्षी नेताओं से चर्चा के जरिये राजनीतिक एकजुटता दर्शाने की कोशिश होगी। लॉकडाउन लागू होने के बाद विपक्षी नेताओं से प्रधानमंत्री का यह पहला संवाद होगा।

यूं तो सभी राज्य केंद्र के साथ ताल से ताल मिलाकर कोरोना से जंग कर रहे हैं, लेकिन कांग्रेस समेत कुछ दल लॉकडाउन की आलोचना भी कर रहे हैं। शुक्रवार को प्रधानमंत्री ने देश की एकजुटता के लिए गरीबों के नाम हर किसी से एक दिया जलाने का आह्वान किया तो विपक्षी दलों की ओर से घोर विरोध हुआ। कुछ ने इसका उपहास भी उड़ाया। ऐसे में आठ अप्रैल की सुबह 11 बजे होने वाली चर्चा का खास महत्व है। दरअसल, यह वह अवसर होगा जब प्रधानमंत्री और विपक्षी नेता आमने-सामने होंगे। प्रधानमंत्री सभी राज्यों के साथ समन्वय के लिए मुख्यमंत्रियों से चर्चा कर चुके हैं। पिछले तीन-चार दिनों में कोरोना संक्रमितों की संख्या जरूर तेजी से बढ़ी है, लेकिन भारत अभी भी दूसरे कई देशों से बेहतर स्थिति में दिख रहा है और इसका एक बड़ा कारण लॉकडाउन को माना जा रहा है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि यह चर्चा लॉकडाउन की अंतिम तिथि 14 अप्रैल से एक सप्ताह पहले होगी और तब तक कई स्थितियां साफ हो सकती हैं। वहीं, विपक्षी नेताओं की ओर से लॉकडाउन अवधि बढ़ाने आदि पर सवाल पूछे जा सकते हैं।

संसदीय कार्य मंत्री प्रहलाद पटेल ने इसकी जानकारी देते हुए कहा कि सिर्फ उन्हीं दलों के फ्लोर नेताओं को चर्चा के लिए बुलाया गया है जिनकी संख्या कम से कम पांच है। नियमानुसार उसी पार्टी को संसद में दल की संज्ञा मिलती है जिनके दोनों सदनों में मिलाकर कम से कम पांच सदस्य हों। बैठक के लिए कांग्रेस से अधीर रंजन चौधरी और गुलाम नबी आजाद और तृणमूल कांग्रेस, बसपा, द्रमुक, बीजद, तेलंगाना राष्ट्र समिति व अन्य पार्टियों के नेताओं को आमंत्रित किया गया है। राजग के विभिन्न दलों के नेता भी बैठक में हिस्सा लेंगे। साथ ही गृह मंत्री अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के भी इसमें शामिल होने की संभावना है।

तृणमूल नहीं लेगी हिस्सा : तृणमूल कांग्रेस सूत्रों ने बताया कि उसके नेता डेरेक ओ ब्रायन और सुदीप बंधोपाध्याय के इस बैठक में हिस्सा लेने की संभावना नहीं है। तृणमूल के एक वरिष्ठ नेता ने कहा कि पार्टी कोविड-19 पर संसद में चर्चा और सर्वदलीय बैठक बुलाने की मांग करती रही है, लेकिन बैठक कभी नहीं बुलाई गई।

मंगलवार को कैबिनेट बैठक की अध्यक्षता करेंगे पीएम

कोरोना वायरस के प्रसार के मद्देनजर सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में मंत्रिपरिषद की बैठक वीडियो कांफ्रेंस से होगी। देश के इतिहास में संभवत: यह पहली बार है जब मंत्रिपरिषद की बैठक वीडियो कांफ्रेंस से होगी। इसके अलावा लॉकडाउन अमल में आने के बाद मंत्रिपरिषद की यह पहली बैठक होगी। इसके बाद मंगलवार को कैबिनेट की बैठक होगी और उसकी अध्यक्षता भी प्रधानमंत्री मोदी करेंगे।

जस्टिस चंद्रचूड़ ने उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों के साथ की बैठक

नई दिल्ली, प्रेट्र : उच्चतम न्यायालय ई-समिति के अध्यक्ष न्यायमूर्ति डॉ. डीवाई चंद्रचूड़ ने अत्यावश्यक मामलों की जल्द सुनवाई करने के लिए उच्च न्यायालयों की ई-समिति के अध्यक्ष न्यायाधीशों के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक की। इसका मकसद था कि लॉकडाउन के दौरान लोगों को अदालत न आना पड़े। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने शुक्रवार की बैठक में 'संकट के इस समय में' तत्परता से कदम उठाने पर जोर दिया।

डॉ. डीवाई चंद्रचूड़। फाइल

उन्होंने कहा कि लॉकडाउन खत्म होने के बाद स्थिति सामान्य होने पर भी इस प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल को संस्थागत बनाया जाना चाहिए। समिति ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से हो रही अदालत की कार्यवाही के सीधे प्रसारण की संभावनाओं पर भी चर्चा की। हालांकि, तकनीकी मुद्दों के आकलन के बाद महसूस किया गया कि कार्यवाही की रिकॉर्डिंग अगले दिन अदालत की वेबसाइट पर अपलोड की जानी चाहिए, ताकि लोगों को इसकी जानकारी मिल सके। समिति ने कहा कि बेहतर होता कि न्यायिक अधिकारी और वकील अपने घरों से काम करते। लेकिन, इसकी व्यावहारिकता के बारे में निर्णय उच्च न्यायालयों पर छोड़ दिया गया। इस बैठक में कंप्यूटर समितियों की अध्यक्षता कर रहे 23 उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों ने हिस्सा लिया। इन समितियों के अध्यक्ष न्यायाधीशों ने इस चुनौती का सामना करने में अपने-अपने दृष्टिकोण और समस्याओं को साझा किया। न्यायाधीशों ने न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ के इस सुझाव से सहमति व्यक्त की कि इस प्रौद्योगिकी को संस्थागत करने के लिए तत्काल कदम उठाए जाने चाहिए। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने न्यायाधीशों को भरोसा दिलाया कि ई-समिति धन और सॉफ्टवेयर की मांग पूरी करने की प्रक्रिया को तेजी से पूरा कर न्याय विभाग को इससे अवगत कराएगी।

वायरस से लड़ने का साजो-समान तैयार करने में जुटीं आइआइटी

अरविंद पांडेय, नई दिल्ली

- देश के शीर्ष प्रौद्योगिकी संस्थानों में 31 प्रोजेक्ट पर युद्ध स्तर पर चल रहा काम
- आइआइटी हैदराबाद ने स्टार्टअप के साथ मिलकर पोर्टेबल वेंटीलेटर किया तैयार

कोरोना के खिलाफ लड़ाई में देश में गजब की एकजुटता और तालमेल देखने को मिल रही है। कोई भी इसमें पीछे नहीं रहना चाहता है। वैज्ञानिक संस्थानों के साथ अब तो भारतीय प्रौद्योगिक संस्थान (आइआइटी) जैसे देश के शीर्ष शैक्षणिक संस्थान भी इस लड़ाई में पूरी ताकत के साथ कूद पड़े हैं। वेंटीलेटर की कमी की बात आई, तो इन संस्थानों ने रातों-रात ऐसा पोर्टेबल इमरजेंसी वेंटीलेटर भी तैयार कर दिया है, जिसे बिजली न होने पर बैटरी से भी संचालित किया जा सकेगा।

कोरोना जैसी महामारी से देश को सुरक्षित रखने का जुनून इन संस्थानों पर हावी है। मौजूदा समय में देश की सभी 23 आइआइटी में कोरोना से लड़ने के लिए अलग-अलग करीब 31 प्रोजेक्ट पर युद्ध स्तर पर काम चल रहा है। इनमें से कइयों को सफलता भी मिल चुकी है। आइआइटी हैदराबाद और उससे जुड़े स्टार्टअप ने एक ऐसा पोर्टेबल वेंटीलेटर तैयार किया है, जिसका संचालन बिजली के साथ-साथ बैटरी से भी हो सकेगा। ऐसे में यह दूर दराज के क्षेत्रों के लिए काफी लाभकारी माना जा रहा है। इसके साथ ही इसका संचालन एक मोबाइल एप के जरिए भी किया जा सकता है। आइआइटी हैदराबाद के निदेशक प्रोफेसर बीएस मूर्ति का दावा है कि उन्होंने जिस स्टार्टअप के साथ मिलकर इसे तैयार किया है, वह फिलहाल हर दिन 50 से 70 वेंटीलेटर तैयार कर सकता है। हालांकि इसे अभी सर्टिफिकेशन के लिए भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) के पास भेजा गया है। मंजूरी मिलते ही इसकी आपूर्ति शुरू कर दी जाएगी। इसके अलावा आइआइटी दिल्ली सहित कई संस्थानों में अलग-अलग तरीके के मास्क को लेकर भी काम हुआ है। इनमें जल्द ही कुछ बाजार में आने वाले है। इसके साथ ही डॉक्टरों और स्वास्थ्यकर्मियों के लिए व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पीपीई) तैयार करने का काम भी किया जा रहा है। इसके अलावा आइआइटी में टेस्टिंग किट, चिकित्सकीय उपकरण, रोबोट, फार्माकोलोजिकल, डाटा एनालिटिक्स आदि विषयों पर भी काम हो रहा है। बता दें कि देश की लगभग सभी प्रमुख आइआइटी के पास मौजूदा समय में एक स्टार्टअप सेंटर भी है।

आइआइटी दिल्ली। फाइल

'आवश्यक चिकित्सा उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित करें'

नई दिल्ली, प्रेट्र : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कोविड-19 के खतरों से निपटने संबंधी विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यों की योजना एवं उसका अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए गठित अधिकार प्राप्त समूहों की संयुक्त बैठक की अध्यक्षता की। प्रधानमंत्री ने अधिकारियों को मास्क, दस्ताने, वेंटीलेटर, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण सहित सभी आवश्यक चिकित्सा उपकरणों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

- अधिकार प्राप्त समूहों की संयुक्त बैठक में पीएम मोदी ने दिए निर्देश
- लॉकडाउन के बाद मुश्किलें कम करने के लिए 11 समूहों का किया गया था गठन

प्रधानमंत्री कार्यालय के ट्वीट के अनुसार, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशभर में अस्पतालों की उपलब्धता, अलग-थलग रखने की सुविधा के साथ बीमारी की निगरानी, जांच एवं देखरेख प्रशिक्षण जैसे विषयों एवं तैयारियों की भी समीक्षा की। मोदी ने संबंधित समूहों और अधिकारियों से मास्क, दस्ताने, वेंटीलेटर, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण सहित सभी आवश्यक चिकित्सा उपकरणों का उत्पादन, खरीद और उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

सरकार ने पिछले रविवार को स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने और लॉकडाउन के बाद जल्द से जल्द लोगों की मुश्किलें कम करने के उपाय सुझाने के लिए 11 अधिकार प्राप्त समूहों का गठन किया था।

केंद्रीय गृह सचिव अजय कुमार भल्ला की ओर से जारी एक अधिसूचना के मुताबिक इन समूहों को समस्या वाले क्षेत्रों की पहचान करने और उनका प्रभावी समाधान सुझाने, नीति बनाने, योजनाएं बनाने और संबंधित क्षेत्रों के लिए रणनीतिक अभियान तैयार करने और उनके प्रभावी व समयबद्ध अमल के लिए सभी जरूरी कदम उठाने के अधिकार दिए गए हैं। इन 11 अधिकार प्राप्त समूहों में से नौ की अध्यक्षता सचिव स्तर के अधिकारी, एक की नीति आयोग के सदस्य और एक की अध्यक्षता नीति आयोग के सीईओ कर रहे हैं। उम्मीद जताई जा रही है कि जल्दी ही कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों को रोक लिया जाएगा।

बड़ा कदम

मानव संसाधन विकास मंत्री ने इग्नू वीसी की अगुआई में कमेटी गठित करने का किया एलान, सभी केंद्रीय विवि के कुलपतियों के साथ कोरोना से निपटने की तैयारियों को लेकर की चर्चा

शिक्षा के साथ अब ऑनलाइन परीक्षा की भी तैयारी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना के चलते देश में लॉकडाउन की जो स्थिति है, उसे देखते हुए सरकार ने छात्रों को घर बैठे ऑनलाइन पढ़ाने के साथ ही अब ऑनलाइन परीक्षा कराने की दिशा में कदम बढ़ाया है। मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने शनिवार को इसको लेकर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) के कुलपति की अगुआई में एक कमेटी गठित करने का एलान किया। उन्होंने ऑनलाइन शिक्षा और ऑनलाइन परीक्षा कराने से जुड़े सुझाव जल्द देने को कहा।

निशंक शनिवार को देशभर के केंद्रीय विश्वविद्यालयों के कुलपतियों से वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये कोरोना से जुड़ी तैयारियों को लेकर बात कर रहे थे। उन्होंने कोरोना के चलते नए शैक्षणिक सत्र के शुरू होने में देरी को देखते हुए सभी कुलपतियों से छात्रों की ऑनलाइन पढ़ाई शुरू कराने का निर्देश दिया। साथ ही यूजीसी की अगुआई में एक नया एकेडमिक कैलेंडर तैयार करने का भी सुझाव दिया, जिसमें कम समय में कोर्स पूरा कराया जा सके, ताकि सत्र में विलंब न हो। उन्होंने इसे लेकर यूजीसी की अगुआई में एक कमेटी गठित करने का भी निर्देश दिया।

इस बीच, उन्होंने सभी विवि से कोरोना के किसी भी संदिग्ध की तुरंत जांच कराने का भी निर्देश दिया है। इस बीच अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपतियों ने अपने यहां कोरोना से निपटने के लिए 40 बिस्तरों वाले क्वारंटाइन कक्षों को तैयार करने की भी जानकारी दी। हालांकि, इस पर केंद्रीय मंत्री ने दोनों संस्थानों से अपने अस्पतालों को भी कोरोना के लड़ने के लिए पूरी तरह से तैयार रखने का निर्देश दिया। केंद्रीय मंत्री ने इस दौरान कुलपतियों से प्रधानमंत्री के पांच अप्रैल को रात्रि नौ बजे नौ मिनट तक के लिए घरों की सभी लाइटों को बंद करके बालकनी में खड़े होकर दीया, मोमबत्ती, टार्च लाइट आदि जलाने के अनुरोध में सभी से बढ़-चढ़कर शामिल होने की अपील की। साथ ही छात्रों को भी इसके लिए प्रोत्साहित करने को कहा।

बीएचयू के कुलपति को फटकारा

निशंक ने कोरोना काल में अपने विश्वविद्यालय को छोड़कर दिल्ली में बैठे बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो राकेश भटनागर को जमकर फटकार लगाई। दरअसल शनिवार की वीडियो कांफ्रेंसिंग में मानव संसाधन विकास मंत्री सभी कुलपतियों से अपील कर रहे थे कि छात्रावासों में रह रहे बच्चों का ध्यान रखें। छात्रावासों में अभी रह रहे बच्चों के बारे में जानकारी ली जा रही थी कि किस राज्य के कितने बच्चे हैं और कितने विदेशी। चर्चा के दौरान निशंक अचानक ही भटनागर से पूछ बैठे कि वह अभी कहां हैं? वीसी ने बताया कि वह अभी दिल्ली में हैं। इस पर मंत्री ने फिर पूछा-कब से हैं? इस पर उन्होंने लॉकडाउन से पहले से ही दिल्ली में मौजूद होने की बात कही। इसके बाद निशंक भड़क गए। बताया जाता है कि उन्होंने कहा कि कुलपति की जिम्मेदारी है कि वह ऐसे वक्त में अपने विवि में रहें।

आंध्र सरकार ने प्रत्येक बीपीएल परिवार को 1000 रुपये दिए

अमरावती, एएनआइ : आंध्र प्रदेश सरकार ने गरीबी रेखा से नीचे (बीपीएल) के प्रत्येक परिवार को 1000 रुपये की आर्थिक सहायता दी है। आंध्र प्रदेश मुख्यमंत्री के कार्यालय ने यह सूचना दी है। 1.3 करोड़ गरीब या जरूरतमंद एवं वंचित परिवारों को 1000 रुपये की यह राहत एक बार मुहैया कराई गई है।

राज्य सरकार ने आर्थिक सहायता बांटने के लिए शनिवार को ग्राम/वार्ड स्वयंसेवकों को तैनात किया। सरकारी विज्ञप्ति में कहा गया है कि यदि किसी परिवार को शनिवार को यह वित्तीय मदद नहीं मिल पाती है तो उसे रविवार को मुहैया करा दी जाएगी। आंध्र प्रदेश सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए आर्थिक मदद मुहैया करा रही है कि किसी भी नागरिक को भोजन और पानी से नहीं जूझना पड़े। परीक्षा की इस घड़ी में आर्थिक मदद का लक्ष्य गरीबों और जरूरतमंदों को समर्थ बनाना है।

कह के रहेंगे माधव जोशी

लॉकडाउन तोड़कर भी मजहबी प्रचार में जुटे थे जमाती

खतरनाक इरादे ▶ हरियाणा की सभी प्रमुख मस्जिदों में होने वाली मजलिसों में करनी थी तकरीर

क्वारंटाइन अवधि के बाद ही जमातियों से पूछताछ में सामने आएगा असल मकसद

बिजेंद्र बंसल, नई दिल्ली

हरियाणा के पांच जिलों में तब्लीगी जमातियों ने लॉकडाउन से पहले ही मजहब प्रचार के लिए डेरा जमा लिया था। ये जमाती 13 से 17 मार्च तक की समयावधि में ही पलवल, नूंह, फरीदाबाद, पानीपत और अंबाला जिलों की प्रमुख मस्जिदों में पहुंच गए थे। यहां से इन्हें अप्रैल माह के मध्य तक राज्य के प्रत्येक जिलों की प्रमुख मस्जिदों तक पहुंचना था। ताकि वहां की स्थानीय जमात के साथ मजहबी तकरीर की जा सके। इन जमातियों को मौलाना मुहम्मद साद की तरफ से लगातार आदेश मिल रहे थे।

पहले 22 मार्च को जनता कर्फ्यू और फिर 25 मार्च से शुरू हुए लॉकडाउन के बाद भी इन जमातियों ने अपने मजहबी कार्यक्रमों में कोई बदलाव नहीं किया। ये मस्जिदों में एकत्र 100 से 300 लोगों की जमात के समक्ष अपनी बात रखते। इस दौरान इन्होंने कोरोना वायरस से बचाव के बारे में जमात को कुछ नहीं बताया। असल में तब्लीगी जमातियों के लिए मजहबी प्रचार के सामने कोरोना की वैश्विक महामारी और लॉकडाउन का कानून कोई मायने नहीं था।

ऐसा भी नहीं है कि तब्लीगी जमाती कोरोना के खतरे से अनजान रहे हों। फरवरी और मार्च की शुरुआत में इन्होंने पाकिस्तान, बांग्लादेश, मलेशिया और कंबोडिया में जलसे (सभा) किए, जिनके बाद उनके संक्रमित होने के मामले सामने आए। पलवल में जिन दस बांग्लादेशी जमातियों को क्वारंटाइन किया गया उनमें से तीन की रिपोर्ट पॉजिटिव आई है।

डॉक्टरों के साथ कर रहे कुतर्क : खास बात यह है कि इलाज के दौरान इनमें कोरोना वायरस के लक्षण जैसे खांसी, जुकाम या फिर बुखार नहीं हैं। लिहाजा डॉक्टर विटामिन सी व शाकाहारी भोजन दे रहे हैं। जमाती इसका भी विरोध कर रहे हैं। ये डॉक्टरों से कुतर्क कर रहे हैं कि उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता ज्यादा है इसलिए कोरोना उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। नूंह जिले की बड़ी मस्जिदों के मौलवियों से पलवल प्रशासन के पास इनके लिए सिफारिशें आ रही हैं।

हरियाणा में 28 जमाती पॉजिटिव : हरियाणा में अब तक 28 तब्लीगी जमाती कोरोना पॉजिटिव मिले हैं। इनमें 16 पलवल, पांच फरीदाबाद, चार नूंह, दो अंबाला, एक गुरुग्राम और एक कैथल में है। फिलहाल हरियाणा में कुल तब्लीगी जमातियों की संख्या 1373 है। इनमें से 107 विदेशी, 302 हरियाणा के और 964 शेष भारत के हैं। इनमें पंचकूला में 115, गुरुग्राम में 26, फरीदाबाद में 136, अंबाला में 45, पानीपत में 93, सोनीपत में 32, नूंह में 665, चरखी दादरी में 17,जींद में आठ ,पलवल में 87, कैथल में आठ , करनाल में एक, यमुनानगर में 137 और तीन कुरुक्षेत्र में हैं।

त्रिपुरा की राजधानी अगरतला में शनिवार को प्रशासन ने दिल्ली के निजामुद्दीन में तब्लीगी जमात के कार्यक्रम में शामिल हुए लोगों को क्वारंटाइन सेंटर भेजा। एएनआइ

उलमा ने एकसुर में कहा–डॉक्टरों पर हमला नाजायज, निंदनीय

जेएनएन, नई दिल्ली

▶ कहा, सरकार और स्वास्थ्य मंत्रालय के निर्देशों का पालन करें

इंदौर के एक मुहल्ले में कोरोना स्क्रीनिंग करने गई डॉक्टरों की टीम पर हुए हमले की उलमा ने निंदा की है। मुस्लिम समुदाय से डॉक्टरों, प्रशासन और सरकार के साथ सहयोग और उनके निर्देशों का पालन करने की अपील की गई है। उलमा ने कहा है कि अगर कोरोना अनियंत्रित हुआ तो देश को बर्बादी का सामना करना पड़ेगा।

जमीयत उलमा-ए-हिंद के अध्यक्ष और दारुल उलूम, देवबंद में हदीस के शिक्षक मौलाना सैयद अरशद मदनी, दिल्ली की जामा मस्जिद के शाही इमाम सैयद अहमद बुखारी, फतेहपुरी शाही मस्जिद के इमाम मुफ्ती मुकर्रम अहमद और शिया जामिया मस्जिद के इमाम मौलाना मोहसिन अली तकवी ने जागरण समूह के उर्दू समाचारपत्र इन्किलाब से विशेष बातचीत की। मौलाना मदनी ने कहा कि डॉक्टरों पर हमला और सरकारी निर्देशों की अनदेखी उचित नहीं है। हमें झूठी खबर या अफवाह से बचना चाहिए। सरकार व स्वास्थ्य मंत्रालय के कदमों का समर्थन करने की जरूरत है।

डॉक्टर इंजेक्शन से नहीं फैलाते संक्रमण : मौलाना मदनी ने कहा कि कोई इस बात पर कैसे यकीन कर सकता है कि डॉक्टर इंजेक्शन से कोरोना संक्रमण फैलाएंगे। यह समझना चाहिए कि प्रकोप फैल गया तो हम सभी बर्बाद हो जाएंगे। उन्होंने कहा कि पोलियो उन्मूलन अभियान के दौरान भी इसी प्रकार की अफवाहें फैलाई गई थीं और उलमा को सामने आना पड़ा था।

घर में रहें, डॉक्टरों की सहायता करें : मुफ्ती मुकर्रम अहमद ने कहा कि कोरोना एक खतरनाक बीमारी है। जो भी निर्देश दिए गए हैं, उनका पालन करना चाहिए। अकारण घर से बाहर नहीं निकलें, डॉक्टर की सलाह का पालन करें। मौलाना मोहसिन अली तकवी ने कहा कि डॉक्टरों पर हमले से हमें ही चोट पहुंचेगी और कोरोना के खिलाफ चल रही हमारी लड़ाई विफल हो जाएगी।

कोरोना की जांच में क्या नुकसान है : शाही इमाम

शाही इमाम ने कहा कि डॉक्टर कोरोना रोगियों की सेवा कर रहे हैं। वे अपनी जान को संकट में डाल हमें बचा रहे हैं। कोरोना संक्रमण की जांच में क्या नुकसान है? इसे केवल जांच से ही रोका जा सकता है। ऐसे में डब्ल्यूएचओ और स्वास्थ्य मंत्रालय के दिशानिर्देशों का पालन जरूरी है।

कर्मचारी के पॉजिटिव होने से कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट सकते में

राज्य ब्यूरो, कोलकाता : दिल्ली के निजामुद्दीन स्थित मरकज से लौटे हल्दिया बंदरगाह पर काम करने वाले एक ठेका कर्मी के कोरोना पॉजिटिव पाए जाने के बाद कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट (केपीटी) सकते में है। हालांकि, केपीटी से जुड़े एक निजी एजेंसी के जिस बर्थ पर वह काम करता था, लॉकडाउन के कारण पहले से वहां पर काम बंद है। अलबत्ता, 24 मार्च को निजामुद्दीन से लौटने के बाद वह काम करने गया था।

केपीटी की ओर से शनिवार को एक बयान जारी कर बताया गया कि तब्लीगी जमात में शामिल होने दिल्ली गया एक कर्मचारी कोरोना पॉजिटिव पाया गया है। ऐसे में एहतियात के तौर पर हल्दिया बंदरगाह के उक्त बर्थ व संबंधित इलाके में बड़े पैमाने पर सैनिटाइजेशन किया जा रहा है, जहां वह काम करता था। केपीटी के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी संजय मुखर्जी ने बताया कि उक्त ठेका कर्मी के संपर्क में आने वाले अधिकारियों व कर्मियों को हमने पहले ही एहतियात के तौर पर क्वारंटाइन में रहने के लिए कह दिया था। साथ ही आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए बंदरगाह पर सैनिटाइजेशन का काम भी बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। गुरुवार रात में उक्त कर्मचारी में कोरोना के संक्रमण की पुष्टि हुई थी।

कांधला फार्म हाउस पर नोटिस चस्पा कर आय-व्यय सहित मांगीं कई जानकारियां

उत्तर प्रदेश के शामली स्थित कांधला में तब्लीगी जमात के अमीर (मुखिया) मौलाना साद का फार्म हाउस। सौ. सोशल मीडिया

जागरण संवाददाता, शामली

इन दिनों चर्चाओं में चल रहे तब्लीगी जमात के अमीर मौलाना साद के उप्र के शामली स्थित कांधला फार्म हाउस पर दिल्ली पुलिस ने नोटिस चस्पा किया है। इसमें 36 सवालों के तत्काल जवाब मांगे गए हैं। दूसरी ओर कांधला पुलिस ने दिल्ली पुलिस की आमद व नोटिस चस्पा करने की जानकारी से सिरे से इन्कार किया है। मौलाना साद के फार्म हाउस पर मौजूद लोगों ने भी दिल्ली पुलिस के आने और नोटिस मिलने से इन्कार किया।

तब्लीगी जमात के अमीर मौलाना साद कांधला के मूल निवासी हैं। देश में लॉकडाउन के दौरान निजामुद्दीन मरकज में कोरोना वायरस का संक्रमण फैल गया। इसमें तब्लीगी जमात के अमीर मौलाना साद समेत सात लोगों के खिलाफ दिल्ली पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज की है। इसी क्रम में दिल्ली पुलिस को मौलाना साद की तलाश है। दूसरी ओर मौलाना साद ने ऑडियो संदेश जारी कर खुद को दिल्ली में ही क्वारंटाइन करने की बात कही है। बहरहाल, मौलाना साद का पता लगाने के लिए दिल्ली पुलिस ने 36 सवालों का एक नोटिस जारी किया है जिसमें मौलाना के व्यक्तिगत, तब्लीगी जमात प्रबंधतंत्र, संस्था के आय-व्यय समेत विभिन्न जानकारी मांगी गई है। हालांकि एसओ कांधला कर्मवीर सिंह ने बताया कि दिल्ली पुलिस के आने और नोटिस चस्पा करने की उन्हें कोई जानकारी नहीं है। एसओ ने बताया कि दिल्ली पुलिस ने थाने पर भी कोई सूचना दर्ज नहीं कराई है। शनिवार को मौलाना साद के फार्म हाउस के दोनों गेट पर भी दिल्ली पुलिस का कोई नोटिस चस्पा नहीं दिखाई दिया।

सहारनपुर पुलिस को भी जानकारी नहीं : दिल्ली क्राइम ब्रांच की टीम मौलाना साद की ससुराल सहारनपुर में भी गुपचुप तरीके से डेरा डालकर जानकारी जुटा रही है। हालांकि सहारनपुर पुलिस का इस संबंध में कहना है कि दिल्ली क्राइम ब्रांच की सहारनपुर में मौजूदगी की उन्हें कोई जानकारी नहीं है, न ही दिल्ली पुलिस ने उनसे यहां संपर्क किया है।

बेटी की शादी की तिथि आगे बढ़ाई

पुलिस मौलाना साद के संभावित ठिकानों पर उन्हें तलाश रही है। इस पूरे घटनाक्रम के बीच मौलाना साद की ससुराल सहारनपुर की मुफ्ती गली में लॉकडाउन के कारण सन्नाटा है। मौलाना साद का जिक्र छिड़ते ही मुफ्ती गली के बाशिंदे कहते हैं कि मौलाना का तो सहारनपुर से गहरा नाता है। कई करीबी यहां तक जानकारी रखते हैं कि पांच अप्रैल को मौलाना की इकलौती पुत्री का निकाह तय था। निजामुद्दीन मरकज में शादी समारोह संपन्न होना था। देश के कई बड़े चेहरे इस आयोजन में आमंत्रित थे। बताते हैं कि लॉक डाउन के कारण फिलहाल यह आयोजन नहीं हो पाएगा। करीबियों के अनुसार, पांच अप्रैल को प्रस्तावित निकाह की तिथि आगे बढ़ा दी गई है। बताया गया कि डेढ़ माह पूर्व मौलाना अपने साढ़ू के बेटे के हकीका (बच्चे की छठी) में यहां देखे गए।

स्क्रीनिंग करने गए स्वास्थ्य कर्मियों को खदेड़ा

रणविजय सिंह, नई दिल्ली : निजामुद्दीन दिल्ली ही नहीं पूरे देश में कोरोना वायरस के संक्रमण का सबसे हॉट स्पॉट बन चुका है। इसके बावजूद यहां रहने वाले लोग कोरोना के खिलाफ अभियान में सहयोग नहीं कर रहे। इलाके में सर्वे और स्क्रीनिंग करने पहुंची स्वास्थ्य विभाग की टीम को लोगों ने खदेड़ दिया। बताते हैं कि मरकज के पास बस्ती में करीब 5000 घर हैं, जिनमें हजारों परिवार रहते हैं। स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि मरकज से निकाले गए करीब 301 लोग कोरोना पॉजिटिव मिले हैं। एक ही जगह से इतनी बड़ी संख्या में संक्रमित लोगों के मिलने से आसपास की पूरी कॉलोनी में संक्रमण की आशंका है। इसलिए शुक्रवार को स्वास्थ्य विभाग की टीम इलाके में सर्वे व स्क्रीनिंग करने पहुंची थी, लेकिन लोगों ने उन्हें लौटा दिया। अधिकारी का कहना है कि लोगों को लगता है कि एनपीआर (राष्ट्रीय जनसंख्या पंजीकरण) के लिए ब्योरा लिया जा रहा है। लोगों को समझाने की कोशिश की गई, लेकिन वे नहीं माने।

गौजूदा परिस्थिति को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग एक सख्त प्रशासनिक आदेश जारी करने पर विचार कर रहा है। एक-दो दिनों में पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर सघन स्क्रीनिंग शुरू की जाएगी। स्थानीय जन प्रतिनिधियों की मदद लेने पर भी विचार किया जा रहा है।

धारावी में कोरोना से मौत की मरकज लिंक की जांच में जुटी पुलिस

मुंबई, एएनआइ : मुंबई की सबसे बड़ी झुग्गी बस्ती धारावी में कोरोना वायरस से एक व्यक्ति की मौत से पुलिस चौकन्नी हो गई है। पुलिस यह जांच कर रही है कि क्या मरने वाले व्यक्ति का किसी तरह से दिल्ली के तब्लीगी जमात के समारोह से कोई संबंध तो नहीं। धारावी में कुल पांच पॉजिटिव केस मिले हैं।

पुलिस के अधिकारियों ने कहा कि उन्हें उन 10 लोगों की तलाश है जो निजामुद्दीन मरकज में तब्लीगी जमात के कार्यक्रम में शामिल होकर लौटे थे और जिन्होंने धारावी के व्यक्ति से मुलाकात की थी। बाद में इसकी कोरोना से मौत हो गई।

पुलिस के मुताबिक दिल्ली से लौटने के बाद 10 लोगों का यह समूह धारावी में कुछ दिनों तक ठहरा था। फिलहाल पुलिस ने धारावी के कोरोना पीड़ित के घर को सील कर दिया है और पूरे इलाके को क्वारंटाइन कर दिया गया है। पुलिस मरकज से लौटे 155 लोगों की तलाश कर रही है।

कोरोना के खिलाफ लड़ाई में काफी पीछे कर दिया : नुसरत जहां

राज्य ब्यूरो, कोलकाता : निजामुद्दीन में तब्लीगी मरकज का मामला सामने आने के बाद से पूरे देश में हड़कंप मच गया है। कई फिल्मी हस्तियों से लेकर जाने-माने चेहर इस पर अपनी-अपनी प्रतिक्रिया जता चुके हैं और जता रहे हैं। इसी कड़ी में बंगाली फिल्मों की मशहूर अभिनेत्री व तृणमूल कांग्रेस की सांसद नुसरत जहां ने कहा है कि मरकज मामले ने हमें कोरोना के खिलाफ जारी लड़ाई में काफी पीछे कर दिया है। एक न्यूज चैनल पर कहा कि भारत में बहुत सारे धर्म हैं और कोई भी धार्मिक प्रोग्राम या किसी भी तरह के कार्यक्रम में हिस्सा नहीं ले रहा है।

नुसरत जहां ने कहा कि मरकज के मौलाना साद का एक ऑडियो टेप वायरल हुआ है, जिसमें वह लोगों को सलाह देते सुनाई दे रहा है कि लोग कोरोना वायरस से डरकर मस्जिदों को छोड़ कर ना भागें। लेकिन, मैं हाथ जोड़कर सबसे विनती करती हूं कि ऐसे समय में हमें राजनीतिक, धार्मिक और जातियों से जुड़ी बातों को नहीं करना चाहिए।

मौलाना साद से छिन सकती है मरकज की गद्दी

राकेश कुमार सिंह, नई दिल्ली

तब्लीगी मरकज से देश में कोरोना संक्रमण का संकट खड़ा करने वाले मौलाना मुहम्मद साद की गद्दी खतरे में पड़ गई है। एक तरफ जहां क्राइम ब्रांच कानूनी शिकंजा कस रही है, वहीं उसके विरोधी मरकज की गद्दी पर काबिज होने की कोशिश में जुट गए हैं। दरअसल, हर माह करोड़ों रुपये की फंडिंग होने की वजह से तब्लीगी जमात के प्रमुख की गद्दी पर देशभर के मौलानाओं की नजर है।

क्राइम ब्रांच के सूत्रों के मुताबिक कानून का शिकंजा कसता दिखा मरकज के सभी मौलाना भूमिगत हो गए। मौका देख साद विरोधी गुट के मौलानाओं ने शुक्रवार रात मरकज में स्थित मस्जिद में नमाज पढ़ ली। सूत्रों के मुताबिक वर्ष 2000 में मरकज के तत्कालीन प्रमुख की मृत्यु हो गई थी। इसके बाद गद्दी पर काबिज होने के लिए मौलानाओं के दो गुटों के बीच जमकर पत्थरबाजी और मारपीट हुई थी। इस हिंसा के बीच मुहम्मद साद मरकज की गद्दी पर काबिज होने में सफल रहा था। गृह मंत्रालय के निर्देश के बाद अब क्राइम ब्रांच साद के मरकज प्रमुख बनने से लेकर अब तक की पूरी कुंडली खंगालेगी। इसके लिए तीन दिन पूर्व क्राइम ब्रांच ने दिल्ली स्थित उसके तीन घरों के अलावा उत्तर प्रदेश के शामली स्थित फार्म हाउस व कांधला स्थित घर पर नोटिस भेज जल्द से जल्द जवाब देने को कहा है। नोटिस में उससे 26 सवाल पूछे गए हैं। इन सवालों में मरकज का पूरा पता, पंजीकरण का पूरा ब्योरा, पदाधिकारियों के नाम, पिता का नाम, मोबाइल नंबर, सदस्यों की भी पूरी जानकारी, सभी बैंक खाते, तीन साल में जमा कराए गए आयकर आदि की जानकारी मांगी गई है। यह भी कहा गया है कि किसी भी तरह के आयोजन के लिए पुलिस व अन्य विभाग से अनुमति मांगी गई हो तो उसकी जानकारी, आयोजन की ऑडियो या वीडियो रिकार्डिंग यदि है तो उसे भी मुहैया कराया जाए। फिलहाल कोरोना खतरे को देखते हुए साद ने खुद को क्वारंटाइन कर रखा है। पुलिस भी उसकी गिरफ्तारी को लेकर हाथ पैर नहीं मार रही है। मुहम्मद साद की गिरफ्तारी के साथ ही मरकज में होने वाली फंडिंग के स्रोत के अलावा अन्य तमाम जानकारियों से पर्दा उठ जाएगा।

मुहम्मद साद। (फाइल)

2000 में गद्दी को लेकर हुई थी जबरदस्त हिंसा, मरकज की गद्दी पर जबरन काबिज हुआ था मौलाना साद

साद के अधिवक्ता ने जवाब देने के लिए मांगा समय : क्राइम ब्रांच की नोटिस पर मौलाना मुहम्मद साद के अधिवक्ता शाहिद अली ने शनिवार को बताया कि लॉकडाउन के चलते अधिकांश कार्यालय और विभाग बंद हैं। इसलिए जवाब देने में समय लगेगा। शाहिद ने स्पष्ट किया कि मौलाना साद ने स्वयं को क्वारंटाइन कर रखा है। तब्लीगी मरकज और जमात से जुड़े लोगों के साथ मरकज के सभी कार्यकर्ता कानून का पालन करने वाले नागरिक हैं, जो पुलिस की मदद करने को तैयार हैं।

राजीव गांधी अस्पताल में तब्लीगियों ने की छेड़छाड़

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

▶ कोरोना वार्ड में तैनात दो नर्सों से जमातियों ने की गलत हरकत

▶ पुलिस ने कहा, अभी नहीं मिली लिखित शिकायत

निजामुद्दीन स्थित तब्लीगी मरकज से निकाले गए जमातियों की मनमानी और गलत हरकतें रुकने का नाम नहीं ले रहीं। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में स्थित गाजियाबाद के अस्पताल में उनके अश्लील हरकत और छेड़छाड़ करने का मामला शांत भी नहीं हुआ था कि ताहिरपुर स्थित राजीव गांधी सुपरस्पेशियलिटी अस्पताल में भी इसकी पुनरावृत्ति हो गई। यहां कार्यरत दो नर्सों ने आरोप लगाया है कि शुक्रवार रात उनके साथ कुछ जमातियों ने छेड़छाड़ की। उन्होंने इस संबंध में उप चिकित्सा अधीक्षक को शिकायत दी है। शनिवार को इसकी सूचना पुलिस को भी दे दी गई। हालांकि पुलिस उपायुक्त दिनेश कुमार गुप्ता ने कहा कि अभी कोई लिखित शिकायत नहीं मिली है।

अस्पताल सूत्रों ने बताया कि यहां भर्ती डेढ़ सौ कोरोना संदिग्ध या संक्रमित लोगों में से सवा सौ तब्लीगी जमात के सदस्य हैं। इनमें से कुछ पहले दिन से असहयोग कर रहे हैं। एक जमाती ने तो खुदकशी का ड्रामा भी किया था। वह छठी मंजिल से कूदने की धमकी दे रहा था। इस बीच शुक्रवार को छेड़छाड़ का यह मामला सामने आया है। दोनों नर्सें शुक्रवार को कोरोना वार्ड में ड्यूटी पर थीं। यहां देर रात जब वे वार्ड में पहुंचीं तो उनके साथ जमातियों ने गलत हरकत की। इसकी शिकायत शनिवार को उप चिकित्सा अधीक्षक से की गई। अस्पताल प्रशासन की सूचना पर जीटीबी एंक्लेव थाने के पुलिसकर्मी शनिवार को अस्पताल भी पहुंचे। लेकिन उन्हें लिखित शिकायत के लिए अभी इंतजार करने को कहा गया। दरअसल अस्पताल प्रशासन पहले आरोपों की पुष्टि कर लेना चाहता है। इसके बाद ही केस दर्ज करने के लिए पुलिस को लिखित शिकायत दिया जाएगा।

निजामुद्दीन से न लौट कर अफ्रीका गए आठ जमाती

प्रशांत कुमार, कन्नौज : दिल्ली के निजामुद्दीन मरकज में शामिल होकर उप्र के कन्नौज आए तब्लीगी जमात के 11 लोगों को खोज निकालने के बाद प्रशासन को अब आठ और का पता चला है। राहत की बात यह है कि ये जमाती निजामुद्दीन से कहीं और जाने की बजाए दिल्ली से ही अफ्रीका रवाना हो गए। प्रशासन ने इनके स्वजन से कहा है कि इनके लौटते ही जानकारी दें।

31 मार्च को कन्नौज प्रशासन ने मक्का मस्जिद से 11 तब्लीगी जमाती को खोज निकाला था, जो शामली जिले के रहने वाले थे। खोजबीन में जुटे खुफिया विभाग को आठ और जमातियों का पता चला, जो गायब चल रहे थे। ये सभी कन्नौज शहर और गुरसहायगंज के कस्बा समधन निवासी हैं। ये लोग 18 जनवरी को दिल्ली के निजामुद्दीन स्थित तब्लीगी जमात के मुख्यालय पहुंचे थे और वहां कुछ दिन रुके थे। इस जानकारी के बाद प्रशासन सतर्क हो गया। इनके छिपे होने की आशंका में खुफिया विभाग और प्रशासन जानकारी जुटाने में लग गया। स्वजन से संपर्क साधने पर पता चला कि ये लोग अफ्रीका में हैं। सभी दिल्ली से अफ्रीका पहुंचे थे।

चिंताजनक

राज्य सरकार ने लिया एक माह पहले पहुंचे सभी तब्लीगियों का कोरोना टेस्ट कराने का निर्णय

हरियाणा में अभी भी छिपे हुए तब्लीगी, नहीं निकल रहे बाहर

अनुराग अग्रवाल, चंडीगढ़

निजामुद्दीन मरकज से हरियाणा पहुंचने वाले तब्लीगी जमातियों की संख्या में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। यह जमाती पुलिस और स्वास्थ्य विभाग के डर से मस्जिदों से तो बाहर निकल गए, लेकिन अपनी जान पहचान के लोगों के घरों में छिपे हुए हैं। चार दिन पहले तक सिर्फ तीन दर्जन जमातियों के हरियाणा में आने की सूचना दी, लेकिन खुफिया एजेंसियां, पुलिस और स्वास्थ्य विभाग की टीमें पीछे पड़ीं तो यह संख्या बढ़कर अब 1377 हो गई है। इनमें 107 विदेशी जमाती हैं, जिनके कोरोना टेस्ट हो रहे हैं।

हरियाणा की तमाम मस्जिदों को पहले ही बंद कराया जा चुका है। राज्य सरकार ने सभी 1377 जमातियों को क्वारंटाइन पर रखा है। स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज की अध्यक्षता में हुई शहरी निकाय, स्वास्थ्य विभाग और चिकित्सा शिक्षा विभाग की एक बैठक में निर्णय लिया गया कि राज्य में एक माह की अवधि के दौरान जितने भी तब्लीगी जमाती हरियाणा में प्रवेश हुए हैं, उन सभी के कोरोना टेस्ट कराए जाएं। मोटे तौर पर इनकी संख्या करीब 500 बताई जा रही है, जो एक माह पहले राज्य में घुसे हैं।

▶ मौलाना साद का धर्म का प्रचार करने का संदेश लेकर पहुंचे थे हरियाणा, नूंह को बनाया केंद्र

नर्सों से छेड़छाड़ करने वाले जमातियों का होगा पक्का इलाज

हरियाणा में पलवल में उपचाराधीन तब्लीगी जमातियों को नल्हड के अस्पताल में शिफ्ट कर दिया गया है। यह तब्लीगी जमाती विभिन्न जिलों में नर्सों के साथ गलत आचरण कर रहे हैं। इसकी जानकारी राज्य के स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज के पास पहुंच चुकी है, जिस पर विज ने कहा कि यदि उन्होंने कोई गलत हरकत की अथवा किसी नर्स के साथ गलत आचरण की शिकायत आई तो ऐसे किसी भी जमाती को बख्शा नहीं जाएगा।

केवल हरियाणा नहीं था तब्लीगी जमातियों का साफ्ट टारगेट

निजामुद्दीन से तब्लीगी जमाती न केवल हरियाणा बल्कि बिहार, उत्तर प्रदेश, पंजाब और राजस्थान समेत अन्य राज्यों में भी गए हैं। एक सवाल के जवाब में अनिल विज ने कहा कि इनका टारगेट केवल हरियाणा ही नहीं था। यह सभी राज्यों में गए हैं। उत्तर प्रदेश सरकार की तरह पर राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत इन पर कार्रवाई किए जाने से जुड़े सवाल पर अनिल विज ने कहा कि फिलहाल इस बिंदु पर विचार नहीं किया है।

हरियाणा में करीब 900 तब्लीगी जमाती एक माह की अवधि से पहले ही आ चुके थे। जिन लोगों को यहां पहुंचे दो माह बीत गए, उन्हें क्वारंटाइन पर तो रखा गया है, लेकिन उनके टेस्ट अनिवार्य नहीं किए गए हैं। यदि इन लोगों में किसी तरह के कोरोना संबंधी लक्षण दिखते हैं तो उनके भी टेस्ट कराए जाएंगे। राज्य में इन जमातियों की वजह से कोरोना पॉजिटिव केसों की संख्या लगातार बढ़ रही है। पलवल, नूंह और फरीदाबाद में सबसे ज्यादा कोरोना पॉजिटिव 30 केस मिल चुके हैं, जो जमाती हैं।

हरियाणा के गृह और स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज को हालांकि शुरुआती दौर में लगता है कि इन जमातियों का राज्य में एंट्री करने का कोई गलत इरादा नहीं था और वह दीन धर्म की तालिम देने के लिए यहां आए थे, लेकिन खुफिया एजेंसियां अपने तरीके से जांच में जुटी हैं। इन तब्लीगियों के टारगेट की तह में जाने के लिए राज्य सरकार एसआइटी बनाने पर भी विचार कर रही है। हालांकि हाल फिलहाल गृह मंत्री विज ने इससे इन्कार किया है।

हरियाणा में यह तब्लीगी जमाती मौलाना साद का संदेश लेकर आए थे। यह संदेश क्या था? इसके जवाब में प्रदेश के गृह मंत्री अनिल विज ने बताया कि दीन धर्म का प्रचार प्रसार और तालिम की बात यह लोग करत हैं। किसी तरह की संदिग्ध गतिविधियों और मौलाना साद के विवादित संदेश से जुड़े सवाल पर अनिल विज ने कहा कि फिलहाल हमारा पूरा ध्यान कोरोना के विरुद्ध लड़ी जाने वाली लड़ाई पर है। इसलिए मैं कोई ऐसा विवादित बयान नहीं देना चाहता। मुझे ऐसा अभी लग भी नहीं रहा है, लेकिन केंद्रीय खुफिया एजेंसियां अपने अपने तरीके से जांच में जुटी हुई हैं। इन लोगों ने नूंह जिले को अपनी गतिविधियों का मुख्य केंद्र बनाया हुआ था।

डेढ़ माह पूर्व आया था सपरिवार

▶ प्रथम पृष्ठ का शेष

फार्म हाउस के आसपास रहने वाले व मौलाना साद के करीबियों ने बताया कि मौलाना डेढ़ माह पहले परिवार के साथ यहां आया था। उसके साथ बेटे व बहुएं भी थीं। एक दिन रुककर वह अगले दिन सहारनपुर चला गया था। इस दौरान उसने करीबियों व रिश्तेदारों से मुलाकात की थी। बड़ी संख्या में जमात से जुड़े व कांधला के लोग भी मौलाना साद से मिले थे।

ड्रोन से कराई गई वीडियोग्राफी : कांधला पुलिस ने कस्बे व आसपास के गांवों के साथ ही मौलाना साद के इस फार्म हाउस की भी ड्रोन से वीडियोग्राफी कराई है। इसमें फार्म हाउस के अंदर रहने वालों की जानकारी करने का प्रयास किया गया। फार्म हाउस में फिलहाल गाड़ियों व मौलाना के कारिंदों के अलावा कोई नहीं है। कांधला थाने के एसओ कर्मवीर सिंह ने बताया कि कोरोना वायरस के संक्रमण व लॉकडाउन को लेकर यह कार्य किया गया है।

एक दिन में 535 नए मामले, आंकड़ा साढ़े तीन हजार के पार

महामारी का प्रकोप ▶ नए पॉजिटिव केस में 208 मामले तब्लीगी जमात से जुड़े हुए

महाराष्ट्र में छह मौतों के साथ एक दिन में 11 की गई जान

नई दिल्ली, एजेंसियां : देश में कोरोना वायरस से संक्रमण के मामले बढ़ते जा रहे हैं और आंकड़ा साढ़े तीन हजार को पार कर गया है। शनिवार को पांच सौ से ज्यादा नए मामले मिले हैं, जिनमें से लगभग आधे तब्लीगी जमात से जुड़े हैं। अगर हम राज्यों की बात करें तो सबसे ज्यादा 145 नए मामले महाराष्ट्र में सामने आए। 11 लोगों की मौत भी हुई है और इनमें भी सबसे ज्यादा छह मौतें महाराष्ट्र में हुई हैं। मृतकों की संख्या सौ को पार कर गई है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय और राज्य सरकारों की तरफ से मिली जानकारियों के मुताबिक देश में कोरोना वायरस से संक्रमण के कुल 535 नए मामले सामने आए हैं। इनमें से अकेले 208 तब्लीगी हैं, यानी लगभग आधे। 10 राज्यों में तब्लीगियों से जुड़े नए मामले मिले हैं। देश में कुल संक्रमितों की संख्या 3645 हो गई है। इनमें वायरस से जान गंवाने वाले 101 लोग और पूरी तरह से स्वस्थ हो चुके 215 व्यक्ति भी शामिल हैं। देश में मरने वालों की संख्या 101 हो गई है। शनिवार को महाराष्ट्र में छह मौतें हुईं, जिनमें चार मौतें अकेले मुंबई में हुईं। जबकि, तमिलनाडु में दो और कर्नाटक, गुजरात व राजस्थान में एक-एक व्यक्ति ने दम तोड़ दिया।

महाराष्ट्र में 145 नए मामले सामने आए हैं। इनमें से अकेले 52 मामले मुंबई में हैं। राज्य में एक दिन में संक्रमितों की यह सबसे बड़ी संख्या है। राज्य में संक्रमितों की संख्या 635 हो गई है। वहीं, तमिलनाडु की स्वास्थ्य सचिव बीला राजेश ने बताया कि शनिवार को राज्य में कोरोना संक्रमण के 74 नए मामले सामने आए। इनमें से 73 वो लोग हैं जो दिल्ली में तब्लीगी जमात के कार्यक्रम में शामिल होकर लौटे थे। इनको मिलाकर राज्य में संक्रमितों की संख्या 485 हो गई है। केरल में 11 नए केस मिले हैं। इनमें से तीन तब्लीगी हैं। राज्य में कुल 306 हो गए हैं। इनमें से दो की मौत हो चुकी है और 50 लोग संक्रमण से मुक्त भी हो चुके हैं। कर्नाटक में भी 16 नए पॉजिटिव केस मिले हैं और इनकी संख्या 144 हो गई है।

आंध्र में तब्लीगियों में सात महिलाएं : आंध्र प्रदेश में 26 नए मामले सामने आए और सभी के सभी तब्लीगी हैं। तब्लीगी जमात से जुड़े मरीजों में सात महिलाएं भी शामिल हैं। राज्य में संक्रमितों की संख्या 190 हो गई है। गुजरात में 13 नए केस मिले और संक्रमितों की संख्या 108 हो गई है। जो नए मामले सामने आए हैं उनमें संक्रमितों की उम्र 10 से 69 वर्ष के बीच है।

उत्तर प्रदेश में 40 तब्लीगी संक्रमित : उत्तर प्रदेश में 52 नए मामले मिले हैं, जिनमें 40 जमाती हैं। कुल संक्रमित 234 हो गए हैं। बंगाल में 11 नए मामलों में एक जमाती है। कुल संख्या 49 हो गई है। जम्मू-कश्मीर में छह जमातियों के साथ 17 लोगों की रिपोर्ट पॉजिटिव आई है और संक्रमितों का आंकड़ा 92 पर पहुंच गया है। पंजाब में सात नए मामले मिले हैं और संख्या 65 हो गई है।

दिल्ली में 59 में 42 जमाती : दिल्ली में 59 नए मामले सामने आए हैं, इनमें से 42 जमाती हैं। कुल संक्रमित 445 हो गए हैं। राजस्थान में कुल 22 नए केस मिले हैं, जिनमें से 10 जमाती हैं और कुल संक्रमित 200 हो गए हैं। छह नए मामलों के साथ मध्य प्रदेश में संख्या 178 हो गई है। संक्रमितों में एक वरिष्ठ अधिकारी भी है। एक नए केस के साथ छत्तीसगढ़ में संख्या 10 हो गई है। छत्तीसगढ़ में जो नया मामला मिला है वो तब्लीगी है।

कोरोना महामारी से उपजे संकट के बीच शनिवार को नई दिल्ली में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन ने लोकनायक जयप्रकाश नारायण हॉस्पिटल का दौरा कर व्यवस्था का जायजा लिया। इस दौरान हर्षवर्धन और हॉस्पिटल स्टाफ ने शारीरिक दूरी के एहतियात का पूरा पालन किया। प्रेट्र

राज्य	नए मामले	तब्लीगी
तमिलनाडु	74	73
आंध्र प्रदेश	26	26
केरल	11	3
दिल्ली	59	42
राजस्थान	22	10
उत्तर प्रदेश	52	40
बंगाल	11	1
जम्मू-कश्मीर	17	6
उत्तराखंड	6	6
छत्तीसगढ़	1	1

उत्तराखंड में सभी नए केस तब्लीगियों से जुड़े

हरियाणा में 12 नए मामले के साथ संक्रमितों की संख्या 70 हो गई है। जबकि, उत्तराखंड में छह नए केस मिले हैं जो सभी तब्लीगी हैं और राज्य में कुल 22 संक्रमित हो गए हैं। असम समेत पूर्वोत्तर में पांच नए मामले मिले हैं और संक्रमितों की संख्या 29 हो गई है।

देश में कुल संक्रमित

राज्य	संक्रमित
महाराष्ट्र	635
तमिलनाडु	485
केरल	306
दिल्ली	445
आंध्र प्रदेश	190
राजस्थान	200
उत्तर प्रदेश	234
कर्नाटक	144
मध्य प्रदेश	178
तेलंगाना	229
गुजरात	108
जम्मू-कश्मीर	92
बंगाल	49
पंजाब	65
हरियाणा	70
बिहार	29
चंडीगढ़	18
असम	29
लद्दाख	14
अंडमान-निकोबार	10
उत्तराखंड	22
छत्तीसगढ़	10
हिमाचल प्रदेश	7
गोवा	6
ओडिशा	9
पुडुचेरी	4
मणिपुर	2
झारखंड	2
मिजोरम	1

उप्र में क्वारंटाइन से 12 लोग फरार, छह पुलिसकर्मी निलंबित

जासं, कुशीनगर : उप्र के कुशीनगर स्थित हाटा नगर के गांधी इंटर कालेज में बने क्वारंटाइन केंद्र से 12 लोगों के फरार होने के मामले में छह पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया गया है। पुलिस अधीक्षक विनोद कुमार मिश्र ने क्वारंटाइन केंद्र छोड़कर फरार होने के लिए इन पुलिसकर्मियों को लापरवाह माना है। लेखपाल की तहरीर पर इन सभी के खिलाफ शुक्रवार को हाटा कोतवाली में मुकदमा दर्ज किया गया था।

सभी यात्रियों की होगी थर्मल स्क्रीनिंग

▶ प्रथम पृष्ठ का शेष

इनमें सहरसा गरीब रथ एक्सप्रेस, नई दिल्ली एक्सप्रेस, बनमनखी जनसेवा एक्सप्रेस, हरिद्वार एक्सप्रेस, कटिहार एक्सप्रेस, जयनगर सरयू यमुना एक्सप्रेस, सहरसा साप्ताहिक जनसाधारण एक्सप्रेस, बिलासपुर छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस, दरभंगा जननायक एक्सप्रेस, देहरादून एक्सप्रेस और पठानकोट रावी एक्सप्रेस शामिल हैं। इसी तरह, दिल्ली डिवीजन ने 200 ट्रेनों को बहाल करने की योजना बनाई है। इनमें अमृतसर शताब्दी एक्सप्रेस, सरबत दा भाला एक्सप्रेस, नई दिल्ली-रांची राजधानी एक्सप्रेस, रीवा एक्सप्रेस और जम्मू राजधानी एक्सप्रेस शामिल हैं। सूत्रों ने बताया कि ट्रेन सेवा बहाल होने पर सभी यात्रियों की थर्मल स्क्रीनिंग की जाएगी और सरकार द्वारा सुझाए गए सभी प्रोटोकॉल पर अमल किया जाएगा। इस बीच, किफायती एयरलाइन एयर एशिया ने कहा है कि 15 अप्रैल से उसकी उड़ानों की बुकिंग खुली हुई है, लेकिन अगर विमानन नियामक डीजीसीए ने नए दिशानिर्देश जारी किए तो इसमें किसी भी तरह का बदलाव किया जा सकता है। कई अन्य एयरलाइनों ने भी 15 अप्रैल और उसके बाद की उड़ानों की बुकिंग करनी शुरू कर दी हैं। इंडिगो, स्पाइस जेट और गोएयर ने कहा है कि उन्होंने 15 अप्रैल और उसके बाद की अपनी घरेलू उड़ानों की बुकिंग प्रारंभ कर दी है। वहीं, स्पाइस जेट और गोएयर ने एक मई और उसके बाद की अपनी अंतरराष्ट्रीय उड़ानों की बुकिंग भी प्रारंभ कर दी है। मालूम हो कि नागरिक विमानन सचिव प्रदीप सिंह खरोला ने गुरुवार को कहा था कि एयरलाइनें 14 अप्रैल के बाद किसी भी तारीख के लिए टिकट बुकिंग करने के लिए स्वतंत्र हैं। विदेश के लिए 18 चार्टर्ड फ्लाइट **संचालित करेगा एयर इंडिया :** भारत में फंसे विदेशियों को उनके देशों तक पहुंचाने और चीन में शंघाई से महत्वपूर्ण मेडिकल कार्गो लाने के लिए संचालित अपनी चार्टर्ड फ्लाइटों के लिए एयर इंडिया ने अपने सभी उपलब्ध संसाधनों को सक्रिय कर दिया है। लॉकडाउन के दौरान भारत में फंस गए जर्मन, फ्रेंच, आयरिश और कनाडाई नागरिकों को उनके दूतावासों के अनुरोध पर स्वदेश पहुंचाने के लिए एयर इंडिया की योजना 18 चार्टर्ड फ्लाइटों के संचालन की है। एयर इंडिया की ओर से जारी बयान के मुताबिक, इस दौरान डीजीसीए की ओर से तय सभी सुरक्षा प्रोटोकॉल का अनुपालन किया जा रहा है।

संक्रमितों के घर में रुक रहे आतंकी

▶ प्रथम पृष्ठ का शेष

मेजर जनरल ए सेन गुप्ता के अनुसार कुछ दिनों से हमारे पास लगातार सूचनाएं आ रही हैं कि जो लोग पहले से संक्रमित हैं या संक्रमित हुए लोगों के संपर्क में हैं। आतंकी जबरन इनके घरों में जाकर रुक रहे हैं और इनके साथ खाना खा रहे हैं। ऐसे हालात में इन आतंकियों के जरिये घाटी में संक्रमण फैल सकता है। इससे निपटने के लिए सेना ने आतंकरोधी अभियान तेज करने के साथ ही पुलिस व अन्य सुरक्षा एजेंसियों के साथ मिलकर लॉकडाउन को सख्ती से लागू करने का फैसला किया है। आतंकियों को अपने ठिकानों से बाहर आने का मौका नहीं मिलेगा और अगर बाहर आएंगे तो मारे जाएंगे। साथ ही हम लोगों से लगातार अपील कर रहे हैं कि वह अपने घर के आसपास किसी भी आतंकी को देखते ही निकटवर्ती सुरक्षा चौकी को सूचित करें। अगर आतंकी उनके घर में दाखिल होकर पनाह मांगते हैं तो वह इन्कार करें और उसके साथ ही हमें सूचित कर दें।

स्वास्थ्यकर्मियों के लिए सुरक्षा कवच बनेगी हाइड्रोक्सी क्लोरोक्वीन

नीलू रंजन, नई दिल्ली

स्वास्थ्य मंत्रालय और भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) ने भले ही आम लोगों के लिए हाइड्रोक्सी क्लोरोक्वीन व क्लोरोक्वीन खाने पर पाबंदी लगा दी हो और इसकी खुली बिक्री प्रतिबंधित कर दी हो, लेकिन कोरोना के खिलाफ लड़ाई में इसका बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया जाना तय है। कोरोना मरीजों के इलाज और देखभाल में लगे स्वास्थ्यकर्मियों को हाइड्रोक्सी क्लोरोक्वीन की खुराक दी जाएगी। इसके लिए स्वास्थ्य मंत्रालय ने 10.70 करोड़ टैबलेट खरीदने का फैसला किया है और कंपनियों को इसका ऑर्डर दिया जा चुका है।

स्वास्थ्य मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने इस फैसले की जानकारी देते हुए कहा कि इसके पहले भी 75 लाख हाइड्रोक्सी क्लोरोक्वीन दवा की खरीद की गई थी। इस तरह से स्वास्थ्य मंत्रालय के पास लगभग 11.45 करोड़ टैबलेट हो जाएंगी जिसे जरूरत के मुताबिक राज्यों को आवंटित किया जाएगा। दरअसल, आइसीएमआर ने कोरोना मरीजों के इलाज और उनकी देखभाल में लगे स्वास्थ्य कर्मियों को हाइड्रोक्सी क्लोरोक्वीन दवा दिए जाने की सिफारिश की है। इसके लिए उसने एक विस्तृत गाइडलाइंस भी जारी की है। गाइडलाइंस के अनुसार, स्वास्थ्यकर्मियों को यह दवा पहले सप्ताह पहले दिन 400 मिलीग्राम दो बार; इसके बाद अगले सात हफ्ते तक हर हफ्ते में एक बार 400 मिलीग्राम लेनी है। जबकि घर पर मरीजों की सेवा में लगे परिजनों को पहले सप्ताह पहले दिन 400 मिलीग्राम दो बार; इसके बाद अगले तीन सप्ताह तक सप्ताह में सिर्फ एक दिन लेनी है। दरअसल, प्रयोगशालाओं में हुए अनुसंधान के आधार पर पूरी दुनिया में हाइड्रोक्सी क्लोरोक्वीन और क्लोरोक्वीन को कोरोना वायरस के शरीर के भीतर फैलने से रोकने में प्रभावकारी माना जा रहा है।

आइसीएमआर के डॉक्टर रमन गंगाखेड़कर के अनुसार, आम लोगों को खुद ही कोरोना से बचने के लिए इस दवा का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। उन्होंने कहा कि कोरोना के इलाज में लगे स्वास्थ्यकर्मियों के स्वास्थ्य पर पूरी निगरानी रखी जाती है इसलिए इस दवा के दुष्प्रभाव को आसानी से ठीक किया जा सकता है। कई मामलों में आम लोगों के लिए यह घातक साबित हो सकती है। आइसीएमआर के अनुसार 15 वर्ष से कम उम्र के लोगों को यह दवा नहीं दी जा सकती।

जिन जिलों से ज्यादा फोन आएंगे, उनके डीएम पर होगा फैसला : योगी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

कोरोना को लेकर भले ही आपाधापी मची हो लेकिन, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एक-एक जिले का हाल और वहां की व्यवस्थाओं पर नजर रखे हुए हैं। वरिष्ठ अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक में योगी ने स्पष्ट कहा कि सभी आश्रय स्थलों पर दोनों वक्त का भोजन समय से पहुंचाना जिलाधिकारियों की जिम्मेदारी है। जिन जिलों से सीएम हेल्पलाइन पर मदद के लिए ज्यादा फोन आएंगे, वहां के जिलाधिकारियों के बारे में लॉकडाउन के बाद फैसला किया जाएगा।

अधिकारियों के साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार सुबह अपने सरकारी आवास पर समीक्षा बैठक की। एक-एक व्यवस्था की जानकारी लेने के साथ ही योगी ने कहा कि सीएम हेल्पलाइन के फोन पर नहीं सुनना चाहता कि अभी भोजन नहीं पहुंचा है। भोजन पहुंचने में देर हुई तो सीधे जिलाधिकारियों की जवाबदेही तय की जाएगी।

उन्होंने कहा कि सुबह 10 से दोपहर दो बजे के बीच दोपहर का खाना और शाम को छह से आठ बजे तक रात का खाना आश्रय स्थलों तक पहुंच जाना चाहिए। डीएम की जिम्मेदारी है कि कोई भूखा न रहे। बिना भेदभाव के सभी तक भोजन और राशन पहुंचना चाहिए। रसोई गैस सिलेंडर की आपूर्ति भी बाधित न हो। योगी ने कहा कि हेल्पलाइन के नंबरों की वह खुद नियमित समीक्षा कर रहे हैं। जिस जिले से ज्यादा लोगों के फोन मदद के लिए आ रहे हैं, उन जिलाधिकारियों के बारे में लॉकडाउन के बाद फैसला लिया जाएगा, क्योंकि 23 करोड़ जनता का हित सरकार की प्राथमिकता है।

बोले मुख्यमंत्री, सीएम हेल्पलाइन पर नहीं सुनना चाहता कि अभी भोजन नहीं पहुंचा

योगी आदित्यनाथ फाइल

विधायक और एमएलसी से एक करोड़ रुपये दान की अपील

योगी ने सभी विधायकों और विधान परिषद सदस्यों से अपनी विधायक निधि से कोविड केयर फंड में एक करोड़ रुपये व अपना एक माह का वेतन दान करने की अपील की है। उन्होंने उद्योग जगत से सीएसआर के तहत सहयोग की अपील की है।

माइक्रोबायोलॉजिस्ट की मदद से बढ़ाएं टेस्टिंग क्षमता

मुख्यमंत्री ने प्रदेश के सभी मंडलों में एल-3 लेवल के अस्पताल स्थापित करने के निर्देश दिए हैं।। माइक्रोबायोलॉजिस्ट की सेवाएं लेकर टेस्टिंग क्षमता बढ़ाने, राज्य में वेंटिलेटर निर्माण प्रक्रिया को तेज करने और सभी जिलों में आइसोलेटेड वॉर्ड की संख्या बढ़ाने के भी निर्देश दिए। साथ ही कहा कि स्वास्थ्य विभाग की एडवाइजरी का पालन कराते हुए कृषि यंत्रों, उर्वरक आदि की दुकानें खोली जाएं।

उप्र में लॉकडाउन के बाद भी बिना मास्क बाहर नहीं निकल सकेंगे लोग

राज्य ब्यूरो, लखनऊ : 21 दिन पूरे होने के बाद 15 अप्रैल से लॉकडाउन खोलने की तैयारी चल रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कह चुके हैं कि लॉकडाउन हटेगा लेकिन, पाबंदियां नहीं। लिहाजा, उप्र की योगी सरकार ने भी इसके लिए कमर कस ली है। मुख्यमंत्री ने कहा है कि यदि लॉकडाउन समाप्त होता है तो एपेडमिक एक्ट के तहत सभी को मास्क पहनना अनिवार्य होगा। प्रदेश में किसी भी व्यक्ति को बिना मास्क घर से निकलने की अनुमति नहीं होगी।

इस व्यवस्था का सख्ती से पालन कराने के साथ ही सरकार 23 करोड़ जनता को दो-दो मास्क उपलब्ध कराने पर विचार कर रही है। बैठक में इस पर मंथन हुआ कि खादी के स्पेशल 66 करोड़ मास्क बनवा लिए जाएं। गरीबों को निःशुल्क व आमजन को सस्ती दरों पर दिए जा सकते हैं। हालांकि, मास्क बनवाने के संबंध में अभी कोई निर्णय नहीं लिया जा सका है।

कई राज्यों में मेडिकल सुविधाओं की कमी

नई दिल्ली, आइएएनएस : जम्मू-कश्मीर, बिहार, अरुणाचल प्रदेश, हरियाणा, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ समेत कई राज्यों में पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्विपमेंट (पीपीई) और मेडिकल सुविधाओं की कमी है। डिपार्टमेंट ऑफ एडमिनिस्ट्रेटिव रिफॉर्म्स एंड पब्लिक ग्रिवेंसेज की ओर से किए गए एक सर्वेक्षण में यह बात सामने आई है। हालांकि सर्वेक्षण में संतोषजनक बात यह सामने आई है कि कोरोना महामारी को लेकर लोगों में जागरूकता का स्तर बहुत ज्यादा है।

सर्वेक्षण के मुताबिक, 92 फीसद लोगों ने माना कि लोग इस खतरे को लेकर जागरूक हैं और 75 फीसद का कहना है कि लोग कोरोना के संक्रमण से बचने के लिए जरूरी सतर्कता बरत रहे हैं। 69 फीसद का मानना है कि लोग कोविड-19 से निपटने के लिए लॉकडाउन का शांतिपूर्वक पालन कर रहे हैं। 31 फीसद को लगता है कि लोग इससे ज्यादा परेशान हो रहे हैं। इस सर्वेक्षण में विभिन्न अस्पतालों में सुविधाओं की स्थिति पर भी राय सामने आई। 50 फीसद अधिकारियों का कहना है कि जिला और उप जिलास्तर पर आइसोलेशन बेड पर्याप्त हैं। 28 फीसद ने इनकी उपलब्धता पर चिंता जताई है। कोरोना महामारी के कारण पैदा हुई मौजूदा स्थिति में प्रशासन की चुनौतियों को समझने के लिए 25 से 30 मार्च के बीच यह सर्वेक्षण किया गया।

सर्वेक्षण में स्थानीय, जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर इस महामारी के खिलाफ लड़ाई में जुटे लोगों का योगदान भी सामने आया। लोग इस बात से सहमत दिखे कि सरकारी मशीनरी लोगों तक पहुंच रही है। 95 फीसद अधिकारियों ने कहा कि सरकारी मशीनरी ने लोगों को एक-दूसरे से उचित दूरी बनाकर रखने के प्रति सचेत किया है।

82 फीसद जिला कलेक्टरों और अधिकारियों ने माना कि भारत सरकार महामारी से लड़ने के लिए पर्याप्त कदम उठा रही है। 92 फीसद जिला कलेक्टरों व अधिकारियों ने माना कि देश में आवश्यक वस्तुओं एवं सेवाओं की आपूर्ति के लिए उचित कदम उठाए जा रहे हैं। ज्यादातर लोगों ने यह भी माना कि जनता कर्फ्यू की अपील अपने उद्देश्य में सफल रही थी। सर्वेक्षण में विभिन्न अस्पलाओं में तैयारियों की कमी भी सामने आई।

महामारी से डरें नहीं, डटे रहें

अपने माता-पिता के साथ मो. फैयाज ● जागरण

कोरोना के विजेता

किसी की हिम्मत उसे जिताती है तो किसी की जिम्मेदारी बीमारी को हराती है। हम बात कर रहे हैं बिहार के मो. फैयाज की, जो हाल ही में कोरोना को हराकर घर पहुंचे हैं। वो पटना सिटी स्थित बटावकुआं के मूल निवासी हैं। अब्बा मुश्ताक अहमद टेलर हैं और घर में अम्मी मुश्तरी खातून, चार भाई व चार बहनें हैं। कहते हैं कि जब बीमारी के बारे में पता चला तो पैरों तले जैसे जमीन ही खिसक गई, मेरे साथ परिजनों की भी हिम्मत जवाब दे गई। फिर साथियों और डॉक्टरों के बताए रास्ते पर चला और आखिरकार बीमारी को हराकर घर पहुंच गया। आइए पढ़ते हैं फैयाज के इस सफर की कहानी उन्हीं की जुबानी :

...तो होश उड़ गए

बीमारी के कुछ लक्षण दिखे तो 22 मार्च को आइडीएच में भर्ती हो गया। कोरोना की पहली जांच रिपोर्ट जब 24 मार्च को पॉजिटिव आई तो होश उड़ गए। फिर नालंदा मेडिकल कॉलेज अस्पताल (एनएमसीएच) के संक्रामक रोग अस्पताल (आइडीएच) में भर्ती हो गया और करीब बारह दिनों तक वहीं रहा।

...ऐसे बंधी रही हिम्मत

अस्पताल के डॉ और स्टॉफ जैसे मेरे लिए फरिश्ता बने। उन्होंने और साथ रह रहे राहुल ने मुझे हमेशा हिम्मत दिलाई। इन लोगों का साथ नहीं मिलता तो शायद आज मैं मानसिक तौर पर इतना स्वस्थ नहीं होता। कंप्यूटर साइंस के छात्र राहुल के अंदर गजब का आत्मविश्वास था। इसी के बूते उसने भी कोरोना को हराया और मुझे में हराने का हौसला दिया। बारहवें दिन जब मेरी कोरोना जांच रिपोर्ट निगेटिव आई तब खुद को रोक नहीं सका। देर रात परिवार के पास पहुंच गया। डॉक्टर द्वारा दिए गए दिशा-निर्देशों के अनुसार चौदह दिनों तक घर में क्वारंटाइन रहूंगा। अब सब कुछ ठीक हो जाने के बाद ही ड्यूटी ज्वाइन करूंगा।

प्लीज, स्टे एट होम

लोगों से हाथ जोड़ कर निवेदन करूंगा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देशभर में जो लॉकडाउन किया है वह हमारे और हमारे परिवार को जिंदा रखने के लिए बेहद आवश्यक है। इस दौरान कोई भी परेशानी हो या कई दिनों तक भूखे क्यों न रहना पड़े, रहें लेकिन लॉकडाउन के दौरान प्लीज....प्लीज....प्लीज....स्टे एट होम यानी घर में ही रहें।

● प्रस्तुति : पटना से **अहमद रजा हाशमी**

कोविड 19 से जंग में संघ परिवार ने संभाला मैदान

संजय कुमार, रांची

कोरोना वायरस (कोविड 19) से निपटने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने पूरी ताकत झोंक दी है। डेढ़ लाख से अधिक स्वयंसेवक देशभर में जुटे हुए हैं। संघ के विभिन्न अनुषांगिक संगठनों के हजारों सदस्य भी जरूरतमंदों की मदद कर रहे हैं। एकल अभियान ने प्रतिदिन 10 हजार मास्क एवं 100 बोतल सैनिटाइजर बनवाने तो विश्व हिंदू परिषद और सेवा भारती ने लाखों लोगों को खाना खिलाने की कमान संभाल रखी है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन पढ़ाई की व्यवस्था कर रही है तो विद्या भारती अपने हजारों स्कूलों को क्वारंटाइन सेंटर में तब्दील करने की तैयारी में है। भारतीय मजदूर संघ एवं वनवासी कल्याण केंद्र भी मजबूती से जुटे हुए हैं।

विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय महामंत्री मिलिंद परांडे ने दैनिक जागरण से बातचीत में कहा कि विहिप के 20000 से अधिक कार्यकर्ता 250 स्थानों पर जरूरतमंदों को भोजन उपलब्ध करा रहे हैं। तीन अप्रैल तक सात लाख लोगों को भोजन कराने के साथ ही एक लाख परिवारों को खाद्य सामग्री पहुंचा चुके हैं। रोजाना एक लाख से अधिक लोगों को भोजन कराने का लक्ष्य है। बताया कि कई मंदिर व सामाजिक संगठनों के लोग जुड़कर काम कर रहे हैं। विहिप ने देश में 50 ऐसे अस्पतालों को गोद लिया है जहां के मरीज को भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। सेवा भारती के अखिल भारतीय महामंत्री श्रवण कुमार ने बताया कि संस्था के लोग पूरे देश में एक लाख से अधिक स्थानों पर जरूरतमंदों को भोजन उपलब्ध कराने का काम कर रहे हैं। अब तक 26 लाख से अधिक लोगों तक भोजन पहुंचा चुके हैं। चार लाख मास्क का भी वितरण किया है।

विद्या भारती के 400 स्कूलों में बना आइसोलेशन वार्ड : विद्या भारती के केंद्रीय मंत्री शिव कुमार ने बताया कि देशभर में 400 विद्यालय प्रशासन को आइसोलेशन सेंटर बनाने के लिए उपलब्ध करा दिए हैं। पूरे देश में स्कूलों के आसपास रहने वाले गरीब वर्ग के लोगों को भोजन व राशन उपलब्ध कराया जा रहा है। वहीं, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की राष्ट्रीय महामंत्री निधि त्रिपाठी ने कहा कि हम लोग देश भर में गरीब छात्रों की मदद कर रहे हैं।

आरएसएस के संगठन एकल केंद्र की महिलाएं रांची में मास्क बनाती हुईं। जागरण

392 महिलाएं रात-दिन तैयार कर रही हैं मास्क

एकल ग्रामोत्थान फाउंडेशन के राष्ट्रीय संयोजक ललन शर्मा ने बताया कि एकल अभियान ने पूरे देश में दो लाख आठ हजार मास्क तैयार करवा कर निःशुल्क वितरित करने का लक्ष्य तय किया है। झारखंड, ओडिशा, उत्तर प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल, असम एवं मध्य प्रदेश में स्थित सिलाई केंद्रों पर इसे तैयार कराया जा रहा है। इस काम में 392 महिलाएं लगी हैं। साथ ही सैनिटाइज भी वितरित किया जा रहा है।

आध्यात्मिक दिनचर्या का पालन कर रहे स्वामी अवधेशानंद

ऐसे बिताया दिन

जागरण संवाददाता, हरिद्वार: लॉकडाउन की इस कालावधि में मेरी दिनचर्या और आहार-विहार पूरी तरह प्राकृतिक है। वैसे भी मैं हमेशा ही नियमित, संयमित और आध्यात्मिक दिनचर्या का ही पालन करता हूं। हमारे यहां दीर्घकाल से ही ऐसे आहार-विहार की परंपरा रही है, जो ऋतु के अनुकूल होने के साथ ही प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाला हो। अन्य साधकों की तरह मैं भी ध्यान और स्वध्याय साधना से अपनी संकल्प एवं आंतरिक शक्ति को जगाता हूं। यह ऐसी दिनचर्या है, जो तन एवं मन की दुर्बलता का निर्मूलन करती है।' यह कहना है श्रीपंचदशनाम जूना अखाड़ा के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि महाराज का।

प्रेरक

- श्रीपंचदशनाम जूना अखाड़ा के आचार्य महामंडलेश्वर इन दिनों ले रहे प्राकृतिक आहार
- अन्य साधकों की तरह ध्यान और स्वाध्याय साधना से जगा रहे आंतरिक शक्ति

तीनों वक्त लेते हैं फलाहार

स्वामी अवधेशानंद बताते हैं कि इन दिनों वह सिर्फ फलाहार ले रहे हैं। ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्नान-ध्यान, योग-प्राणायाम आदि क्रियाओं से निवृत्त होने के बाद वह अति सूक्ष्म फलाहार से दिन की शुरुआत करते हैं। दोपहर ढाई बजे तक साधना-पूजा इत्यादि के बाद मध्याह्न भोजन होता है। इसमें फलाहार, दही, मट्ठा आदि शामिल है। शाम को संध्या पूजन आदि से निवृत्त होने के बाद रात्रि शयन से तीन घंटे पूर्व वह भोजन कर लेते हैं। यह भी अति सूक्ष्म होता है। दिन का बाकी समय उनका आश्रम के स्वजनों सहित स्वाध्याय साधना में व्यतीत होता है।

संयम ही हमारा साथी

स्वामी अवधेशानंद कहते हैं कि कोरोना की चुनौतियों के बीच लॉकडाउन के चलते दिन बिताना और भी कठिन है। ऐसी विषम परिस्थिति में धैर्य एवं संयम ही हमारा सबसे बड़ा साथी है। मैं लगभग तीन सप्ताह की इस अवधि में जप-ध्यान और योग के द्वारा अपने एकांत को साध रहा हूं। आपको भी यह समझना होगा कि शांति, समाधान और स्थायी प्रसन्नता की खोज की सहज उपलब्धि एकांत से ही संभव है। यह अनुभवजन्य बात है कि स्वस्थ, सकारात्मक और पारमार्थिक चिंतन से परिपूर्ण एकांत समृद्ध सृजन का आधार बनता है। वे बताते हैं, मैंने हमेशा अनुशासन और तत्परता पूर्वक आत्मसुधार को तवज्जो दी है। यही मेरे जीवन की दिव्य औषधि है। ...और हां! आप अपने आत्मीयजनों, जिनके लिए आम दिनों में समय नहीं निकाल पाते, उनके साथ इस कालखंड में रिश्तों को जीकर देखिए। यकीनन, आपको घर तीर्थ लगने लगेगा।

कनिका की पांचवीं रिपोर्ट निगेटिव

जासं, लखनऊ : बॉलीवुड सिंगर कनिका कपूर की हालत में सुधार है। शनिवार को पांचवीं बार जांच की गई, जिसमें उनकी रिपोर्ट निगेटिव आई। अब एक बार और निगेटिव रिपोर्ट आने पर ही उन्हें संक्रमण मुक्त माना जा सकेगा। पहली बार रिपोर्ट निगेटिव आने पर कनिका और परिवारजन ने राहत की सांस ली। लंदन से लौटीं कनिका ने लखनऊ में कई पार्टियां कीं और क्वारंटाइन नियमों का उल्लंघन किया। ऐसे में कई मंत्री, तमाम हाई प्रोफाइल लोगों को होम क्वारंटाइन में जाना पड़ा। इस मामले में कनिका पर एफआइआर भी दर्ज कराई गई है। उनका 19 मार्च को शालीमार गैलंट आवास से सैंपल कलेक्शन किया गया था। केजीएमयू में 20 मार्च को जांच में कोरोना वायरस की पुष्टि हुई थी। इसके बाद उन्हें पीजीआइ में भर्ती कराया गया। केजीएमयू में पहली जांच के बाद पीजीआइ में चार जांचें की जा चुकी हैं। शनिवार को पहली बार जांच निगेटिव आई है, मगर डॉक्टरों ने उन्हें संक्रमण मुक्त घोषित नहीं किया है। इसके लिए एक और जांच की जाएगी। यह रिपोर्ट निगेटिव आने पर ही कनिका को डिस्चार्ज किया जाएगा।

सही जानकारी के लिए पढ़ें अखबार

अखबार सुरक्षित है

हिमांशु अस्थाना, वाराणसी

डॉ. दीपक गौतम। फाइल फोटो

अखबार से कोरोना वायरस फैलने का एक भी केस अभी तक सामने नहीं आया है। हां, यह जरूर पता चल रहा है कि जो लोग पहले अखबार पढ़ने के बाद अपने आपको पूरे दिन शांत रख पाते थे, वे अब सूचना के अन्य माध्यमों से जानकारी लेकर एंजायटी और घबराहट के शिकार हो रहे हैं। यह जानकारी आइएमएस, बीएचयू में जनरल मेडिसिन के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. दीपक गौतम ने दी। उन्होंने बताया कि कोरोना के कई पॉजिटिव केसों में मरीज हृदयघात व अन्य कारणों से भी अपनी जाने गवां रहा है, जो कि वायरस के मुकाबले ज्यादा खतरनाक है।

डॉ. दीपक गौतम ने बताया कि यूनाइटेड किंगडम के एक प्रख्यात वायरोलॉजिस्ट प्रो. जॉर्ज लोमोनो सॉफ ने भी एक अध्ययन कर बताया था कि प्रिंटिंग प्रेस में उपयोग में लाई जाने वाली इंक और प्रिंटिंग प्रक्रिया से अखबार विसंक्रमित हो जाता है। एक अन्य अध्ययन के मुताबिक, अखबार पढ़ने वालों में एंजायटी व हृदयाघात की संभावना कम होती है जबकि दूसरे माध्यमों से ज्यादा। कोरोना वायरस के भय और तंग जीवन शैली के कारण आज ज्यादातर लोग एंजायटी,तनाव और घबराहट के शिकार हो रहे हैं।

डॉ. गौतम ने कहा कि यह सराहनीय है कि अखबार रोजाना देश-विदेश से खोज-खोजकर कोरोना को शिकस्त देने वाली खबरें हम तक पहुंचा रहे हैं। दूसरा कोई ऐसा विश्वसनीय माध्यम नहीं है जो कोरोना वायरस से जुड़ी जानकारी तथ्यात्मक रूप से विस्तार से दे सके।

'पशुजन्य रोगों पर साझा अनुसंधान की जरूरत'

कवायद ▶ कोरोना की जांच के लिए आइसीएमआर को सौंपी प्रयोगशालाएं

आइसीएआर के महानिदेशक बोले, जलवायु परिवर्तन से पैदा होंगे नए वायरस

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना वायरस के बढ़ते प्रकोप से सामुदायिक विस्फोट की आशंका के मद्देनजर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आइसीएआर) ने कोविड-19 की जांच के लिए अपनी सभी हाईटेक प्रयोगशालाएं भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) को सौंप दी है। इन प्रयोगशालाओं में वायरस व बैक्टीरिया से संबंधित हर तरह की जांच की अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ ही अनुभवी वैज्ञानिक व पैरा स्टाफ भी हैं। आइसीएआर के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने पशुजन्य रोगों पर साझा अनुसंधान की जरूरत बताई है।

कोरोना वायरस की जांच के लिए आइसीएआर ने जिन चार प्रयोगशालाओं

प्रतीकात्मक

को नामित किया है उनमें इंडियन वेटरनरी रिसर्च इंस्टीट्यूट (आइवीआरआइ) बरेली, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वेटरनरी एपिडेमिलॉजी एंड डिजीज इन्फार्मेटिक्स, बेंगलुरु, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हाई सिक्योरिटी एनिमल डिजीज, भोपाल और राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केंद्र, हिसार शामिल हैं। पशुओं व पक्षियों में समय-समय पर फैलने वाले फ्लू के वायरस की जांच लगातार इन्हीं प्रयोगशालाओं में होती है। यहां के वैज्ञानिकों को इस दिशा में अच्छा अनुभव प्राप्त है। डॉ. महापात्र ने बताया कि कोरोना वायरस जीव जंतुओं से मानव के भीतर पहुंचा है। बर्ड फ्लू व स्वाइन फ्लू की जांच उनके यहां की प्रयोगशालाओं में सफलतापूर्वक होती रही है। लेकिन कोरोना अब महामारी के रूप में अत्यंत गंभीर हो गया है, जिसके लिए सभी तरह के वैज्ञानिकों को एकजुट होकर साझा परियोजनाओं पर काम करना होगा। इस दिशा में भी कार्य चालू हो गया है।

डॉ. महापात्र ने इस तरह की चुनौतियों से निपटने के लिए जूनोटिक (पशुजन्य रोग) क्षेत्र में विस्तृत अध्ययन की जरूरत बताई। उन्होंने कहा इस दिशा में काम तो हो रहा है, लेकिन इसे और विस्तार देकर गहन अनुसंधान की आवश्यकता है। कोरोना की इस महामारी से उबरने के बाद देश ही नहीं पूरी दुनिया में इस तरह के वायरस व बैक्टीरिया को लेकर शोध एक सतत प्रक्रिया होगी। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन के इस दौर में घातक रोगों के पनपने की रफ्तार और तेज हो सकती है, जो मानव जीवन के साथ जीव जंतुओं के लिए भी घातक हो सकती है। इसके लिए नए सिरे से सोचने और रणनीति बनाने की जरूरत होगी।

लोग नहीं माने तो महाराष्ट्र में लंबा खिंच सकता है लॉकडाउन

राज्य ब्यूरो, मुंबई : महाराष्ट्र के सीएम एवं स्वास्थ्य मंत्री ने साफ कर दिया है कि यदि लोगों ने लॉकडाउन का ठीक से पालन नहीं किया और कोविड-19 के मामले बढ़ते रहे, तो राज्य में लॉकडाउन लंबा खिंच सकता है। बता दें कि महाराष्ट्र में लॉकडाउन की शुरुआत भी देश के अन्य हिस्सों से पहले हुई थी।

केंद्र सरकार 14 अप्रैल से लॉकडाउन में ढील का संकेत दे चुकी है, लेकिन मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने शनिवार को फेसबुक के जरिये राज्य की जनता को संबोधित करते हुए साफ कहा कि फिलहाल 14 अप्रैल तक लागू लॉकडाउन का खत्म होना लोगों के व्यवहार पर ही निर्भर करेगा।

मुख्यमंत्री ने ऐसे किसी भी धार्मिक, राजनीतिक एवं खेल समारोहों के आयोजन पर भी प्रतिबंध जारी रखने की बात कही, जिसमें एक स्थान पर ज्यादा लोगों के जुटने की संभावना बनती हो। उद्धव ने साफ कहा कि राज्य में गुड़ी पड़वा एवं रामनवमी जैसे त्योहार लोगों ने घर में रहकर मनाए हैं। मुझे उम्मीद है कि दूसरे समुदायों के लोग भी ऐसा ही करेंगे। उद्धव ने बताया कि वह सभी धर्मों के लोगों के संपर्क में हैं। शरद पवार भी सभी से बात कर रहे हैं। यहां तक कि कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने भी शनिवार को मुझसे इस संदर्भ में बात की है।

कर्तव्यपरायणता की मिसाल बनीं आशा कार्यकर्ता राजदुलारी।

जिले से बाहर से आए नागरिकों को चिह्नित कर उनके घरों पर पीले पोस्टर चिपकती राजदुलारी● जागरण

पहले काम पूरा किया फिर मां का दाह संस्कार किया

कोरोना के योद्धा

कोरोना के संक्रमण काल में देशभर में हर कोई अपने-अपने तरीके से लोगों की मदद कर रहा है। कोई दिन-रात श्रमदान कर रहा है तो कोई जरूरतमंदों का सहयोग कर रहा है। ऐसा ही एक उदाहरण है बैतूल जिले के उप स्वास्थ्य केंद्र बादलपुर के ग्राम पहाड़पुर में कार्यरत आशा कार्यकर्ता राजदुलारी का। जिन्हें मां की मौत की सूचना मिली फिर भी उन्होंने पहले अपना गांव का काम खत्म किया, उसके बाद मां के अंतिम संस्कार के लिए गईं।

अगले ही दिन लौट आईं काम पर

काम के दौरान दो अप्रैल को राजदुलारी को मोबाइल पर मां की मृत्यु की सूचना प्राप्त हुई। इसके बाद दो घंटे में अपना काम खत्म करने के बाद राजदुलारी घर पहुंचीं एवं अपनी मां के अंतिम दर्शन किए। शुक्रवार को राजदुलारी फिर से काम पर पहुंच गईं।

बाहरी नागरिकों की पहचान के लिए चिपका रहीं पोस्टर

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.जीसी चौरसिया ने बताया कि विकासखंड घोड़ाडोंगरी में आशा कार्यकर्ता राजदुलारी मलिक को पोस्टर लगाने का काम दिया गया है। वे पहाड़पुर गांव में जिले से बाहर से आए नागरिकों को चिन्हित कर उनके घरों पर पीले पोस्टर चिपका रही हैं। इससे स्थानीय नागरिक, पड़ोसी सावधानी बरत सकते हैं।

प्रोत्साहन के लिए किया गया सम्मानित

विकासखंड घोड़ाडोंगरी के खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ. संजीव शर्मा एवं बीसीएम घोड़ाडोंगरी प्रकाश माकोड़े द्वारा राजदुलारी मलिक के काम की सराहना की गई और डॉ. संजीव शर्मा ने राजदुलारी को प्रोत्साहन स्वरूप व्यक्तिगत रूप से 1000 रुपये चेक दिया।

● प्रस्तुति : मध्य प्रदेश के बैतूल से **विनय वर्मा**

कोरोना योद्धाओं को गीता पढ़ाएंगे बाबा रामदेव

संतोष शुक्ल, मेरठ : मेडिकल कॉलेज के कोविड-19 वार्ड में ड्यूटी कर निकले डॉक्टरों एवं पैरामेडिकल स्टाफ के लिए नया होमवर्क बनाया गया है। क्वारंटाइन में रहते हुए वे श्रीमद्भागवत गीता पढ़ेंगे। योग गुरु बाबा रामदेव से वीडियो कांफ्रेंसिंग से जुड़कर स्वस्थ रहने की वैदिक पद्धतियों की पढ़ाई करेंगे। योग गुरु के प्रवक्ता एसके तिजारावाला ने भी इसकी पुष्टि की है।

कृष्ण-अर्जुन संवाद से लेंगे प्रेरणा : मेडिकल कॉलेज के प्रोफेसर एवं कोरोना वार्ड के नोडल अधिकारी डॉ. तुंगवीर सिंह आर्य ने क्वारंटाइन में जाने वाले सभी रेजीडेंट डॉक्टरों के लिए नया कोर्स बनाया है। यूं तो डॉ. आर्य डीएम गैस्ट्रोएंट्रोलॉजिस्ट हैं, किंतु वह गीता, वेद, योग और आयुर्वेद में गहरी रुचि रखते हैं। डॉ. आर्य बताते हैं कि कोविड-19 वार्ड में कठिन परिस्थितियों में ड्यूटी कर निकलने वाले डॉक्टरों को 14 दिन क्वारंटाइन में जाना होगा। इस दौरान उनकी मानसिक ताकत के लिए उन्हें प्राणायाम एवं योग में पारंगत बनाया जाएगा।

शाह रुख ने क्वारंटाइन के लिए अपना ऑफिस दिया

एंटरटेनमेंट ब्यूरो, मुंबई

बॉलीवुड सुपरस्टार शाह रुख खान ने अब अपना चार मंजिला कार्यालय कोविड-19 रोगियों के इलाज के लिए दिया है। इससे पहले अभिनेता और उनकी पत्नी गौरी खान कोरोना वायरस महामारी के खिलाफ संघर्ष में केंद्र और राज्य सरकार की पहलों को मदद देने की घोषणा कर चुकी हैं।

शाह रुख खान और उनकी पत्नी गौरी खान पीएम केयर्स फंड में दान करने के अलावा हेल्थ केयर वर्कर्स के सपोर्ट और सुरक्षा के लिए 50 हजार पीपीआइ (पर्सनल प्रोक्टेटिव इक्विपमेंट) किट, 5500 परिवारों के लिए एक महीने का भोजन, दिहाड़ी मजदूर और गरीबों के लिए एक महीने तक भोजन की व्यवस्था में मदद करने की घोषणा पहले ही कर चुकी हैं। अब शाह रुख ने क्वारंटाइन के लिए जगह की दिक्कतों को देखते हुए खार स्थित अपने चार मंजिला ऑफिस को बृहन मुंबई महानगर पालिका (बीएमसी) को देने की पेशकश की है। वहां क्वारंटाइन में रखे जाने वाले बच्चों, बुजुर्गों और

शाह रुख खान। फाइल

महिलाओं के लिए जरूरत की सभी चीजें भी उपलब्ध कराई हैं। बीएमसी ने सोशल मीडिया पर इसके लिए शाह रुख को धन्यवाद दिया है।

दीपिका-रणवीर ने भी पीएम केयर्स फंड में किया दान : शनिवार को भी सितारों की तरफ से मदद का सिलसिला जारी रहा। अभिनेत्री दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह ने आर्थिक योगदान दिया है। हालांकि उन्होंने धनराशि का खुलासा नहीं किया है। दीपिका ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट साझा करते हुए लिखा, 'मौजूदा परिस्थितियों में छोटे से छोटा प्रयास भी मायने रखता है। हम पूरी विनम्रता के साथ पीएम केयर्स फंड में योगदान देने का संकल्प लेते हैं। इस संकट की घड़ी में हम सब एक साथ हैं। जय हिंद!' वहीं एकता कपूर अपने एक साल का वेतन का इस्तेमाल अपनी प्रोडक्शन कंपनी बालाजी टेलीफिल्म्स के कर्मचारियों की मदद के लिए करेंगी।

एकता ने इसकी जानकारी सोशल मीडिया में देते हुए लिखा, 'हम सभी को ऐसी चीजें करने की जरूरत है, जो हमारे आसपास और हमारे देश के लोगों की परेशानियों को कम करने में मददगार हो। यह मेरी पहली और सबसे बड़ी जिम्मेदारी है कि हम विभिन्न फ्रीलांसर और दिहाड़ी कर्मचारियों की देखभाल करें, जो बालाजी में काम करते हैं। वर्तमान परिदृश्य में कोई शूटिंग न होने की वजह से उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। इसलिए अपनी एक साल की तनख्वाह यानी 2.5 करोड़ रुपये बालाजी टेलीफिल्म्स में देने का फैसला लिया है।' यशराज फिल्म्स ने भी मजदूरों की मदद के 1.5 करोड़ रुपये दान करने की घोषणा की है।

140 अमेरिकियों को भेजा जाएगा वापस

राज्य ब्यूरो, कोलकाता

कोलकाता तथा पूर्वी क्षेत्र में फंसे 140 अमेरिकियों को रविवार शाम को विशेष विमान से सैन फ्रांसिस्को भेजा जाएगा। एयर इंडिया के विमान से कोलकाता ये दिल्ली जाएंगे। इसके बाद वे लोग यूनाइटेड एयरलाइंस के विमान से सैन फ्रांसिस्को के लिए रवाना होंगे । अमेरिकी दूतावास की पहल पर इन्हें भेजा जाएगा।

बांग्लादेश विदेश मंत्रालय अपने नागरिकों को निकालने की कोशिश में : लॉकडाउन के कारण भारत-बांग्लादेश सीमा सील होने से देश में करीब ढाई हजार बांग्लादेशी नागरिक फंस गए हैं। यह लोग शिक्षा, चिकित्सा आदि के सिलसिले में भारत आए थे।

बांग्लादेश विदेश मंत्रालय इन्हें वापस लाने के लिए लगातार यहां अपने दूतावास के संपर्क में है। भारत में फंसे ज्यादातर बांग्लादेशी नागरिक कोलकाता सहित बंगाल में ही हैं। बांग्लादेश दूतावास सूत्रों ने बताया कि हमारी हालात पर नजर बनी हुई है। लॉकडाउन खत्म होते ही उन्हें बांग्लादेश भेजने की प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी।

हजूरी रागी ने कहा था, इलाज नहीं हो रहा, मैं मर जाऊंगा

जागरण संवाददाता, अमृतसर : श्री हरिमंदिर साहिब के पूर्व हजूरी रागी पद्मश्री निर्मल सिंह खालसा की कोरोना संक्रमण से मौत के बाद गुरु नानक देव अस्पताल (जीएनडीएच) की व्यवस्था पर सवाल उठने लगे हैं। 62 वर्षीय निर्मल ने आइसोलेशन वार्ड से अपने बेटे अमतेश्वर सिंह से फोन पर कहा था, 'पुत्तर यहां मेरा इलाज नहीं हो रहा, डॉक्टर ने दवाई भी नहीं दी, मैं मर जाऊंगा'। फोन पर परिवार के सदस्यों से हुई बातचीत का ऑडियो वायरल हो गया है। गौरतलब है कि कोरोना पॉजिटिव पाए गए निर्मल सिंह खालसा का दो अप्रैल को जीएनडीएच में निधन हो गया था। वायरल ऑडियो के मुताबिक निर्मल सिंह ने अपने बेटे से कहा था कि मैं अब कुछ मिनटों का मेहमान हूं। जिस वार्ड में मुझे रखा गया है, वहां बुरा हाल है। सफाई व्यवस्था तक ठीक नहीं। रोते हुए कहा था कि चार घंटे हो गए दाखिल हुए, पर डॉक्टर ने ट्रीटमेंट शुरू नहीं किया। दवाई भी नहीं दे रहे। निर्मल ने अपने पिता से भी बात की। वह डरे हुए थे। पिता ने उन्हें फोन पर ढांढस बंधाते हुए कहा कि तुम ठीक हो जाओगे। वाहेगुरु बोलो। निर्मल सिंह ने पूछा था कि परिवार के लोगों को मिलने क्यों नहीं देते? बेटे ने कहा था कि आप जल्दी ठीक हो जाएंगे, इसके बाद हम आपसे मिलेंगे। हम आपका इंतजार कर रहे हैं। इसके बाद अमतेश्वर ने आइसोलेशन वार्ड के जूनियर रेजिडेंट डॉक्टर से बात की। उन्होंने डॉक्टर से पूछा कि चार घंटे हो गए आप इनका ट्रीटमेंट क्यों नहीं कर रहे? जूनियर डॉक्टर ने कहा कि इनका ट्रीटमेंट जारी है। इस पर अमतेश्वर ने डॉक्टर से कहा था कि यह गलत बात है। आप इनका इलाज करो। अस्पताल प्रशासन इस बारे में कुछ भी बोलने को तैयार नहीं।

आयुष्मान योजना के लाभार्थियों को निजी लैब में मुफ्त जांच की सुविधा

नई दिल्ली, प्रेट्र: आयुष्मान भारत योजना के सभी लाभार्थियों को अब निजी क्षेत्र की लैब में जांच और योजना में शामिल अस्पतालों में कोरोना के इलाज की मुफ्त सुविधा मिलेगी। इस फैसले से कोरोना के खिलाफ मुहिम में निजी क्षेत्र भी सक्रियता से शामिल होगा। यह जानकारी आयुष्मान योजना लागू करने वाले राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (एनएचए) ने दी। प्राधिकरण के अनुसार इस फैसले से कोरोना के खिलाफ जंग में काफी सहूलियत होगी।

- योजना में शामिल अस्पतालों में मुफ्त इलाज की भी मिली सुविधा
- निजी क्षेत्र के साथ आने से आसान होगी कोरोना से जंग : हर्षवर्धन

एक बयान में एनएचए ने कहा कि अभी सरकारी अस्पतालों में कोविड-19 की मुफ्त जांच व इलाज की सुविधा मिली हुई है। लेकिन आयुष्मान योजना के दायरे में आने वाले 50 करोड़ लोगों को अब निजी क्षेत्र की लैब में जांच और योजना में शामिल अस्पतालों में मुफ्त इलाज कराने की सुविधा मिल गई है।

उन्होंने कहा कि आयुष्मान भारत योजना में शामिल अस्पताल कोरोना की जांच के लिए अधिकृत जांच केंद्र के साथ गठजोड़ कर सकते हैं। कोरोना की जांच के लिए भारतीय चिकित्सा परिषद (आइसीएमआर) के निर्देशों का कड़ाई से पालन करना जरूरी है। निजी अस्पतालों में कोरोना के इलाज को आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना में शामिल किया जायेगा।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन ने कहा कि अभूतपूर्व संकट की इस घड़ी में हम लोग कोरोना से निपटने के लिए निजी क्षेत्र की मदद लेंगे। उन्होंने कहा कि कोरोना की जांच व इलाज को आयुष्मान योजना के दायरे में लाने से गरीबों पर इसकी मार पड़ने से बचाया जा सकेगा। इस निर्णय का उद्देश्य जांच व इलाज की सुविधा का विस्तार करना है।

उल्लेखनीय है आइसीएमआर के दिशा निर्देशों को मुताबिक निजी क्षेत्र की वही लैब कोविड-19 की जांच कर सकती हैं जिन्हें एनएबीएल ने अधिकृत किया है। एनएबीएल (नेशनल एक्रेडिशन बोर्ड फार टेस्टिंग एंड कैलीब्रेशन लैबोरेट्रीज) देश की गुणवत्ता परिषद का घटक है।

कोरोना से कैसे लड़ें जीवन शैली

तेजस्विनी सिन्हा,
लाइफस्टाइल कोच,
न्यूरो साइकोलॉजिस्ट)

'मम्मी, कोई स्नैक्स बना दो..,यार एक कप कॉफी पिला दो..,बहू कुछ अच्छा बना दो..'। अब तो समझ आ गया होगा कि डिमांड कई हैं और पूरा करने वाली एक। नोएडा सेक्टर 23 निवासी रुचिका चावला के घर पर उनके सास-ससुर, बच्चे और पति हैं। लॉकडाउन से पहले तक रुचिका का शेड्यूल तय था, सबकी पसंद का ध्यान रखते हुए समय पर उनकी जरूरतें पूरी करती थीं। अब जबकि सब घर पर हैं, तब किसी भी समय कोई डिमांड आ जाती है। फरमाइशें पूरा करने में दिन निकल जाता है और खुद के मनोरंजन के लिए समय ही नहीं बचता है। न सुकून से बैठकर सहेलियों से फोन पर चार बातें कर पाती हैं और न ही कुछ देर बैठकर टीवी देख पाती हैं। रुचिका जैसी तमाम गृहिणियां इसी तरह से परिवार और जरूरतों के बीच दिन बिता रही हैं। बाकी लोगों के वर्क फॉम होम के चलते खुद का शेड्यूल नहीं बना पा रही हैं। ऐसे में 'हीलिंग कंवर्जेशंस' की न्यूरोसाइकोलॉजिस्ट व लाइफस्टाइल कोच तेजस्विनी सिन्हा बता रही हैं कि कैसे अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित करें, कुछ नियम बनाकर कैसे दिन व्यतीत करें।

अपने साथ सबका रूटीन बनाएं परिजनों के साथ समय बिताएं

परिवार के साथ बिताएं क्वालिटी टाइम

आप केवल कामकाजियों की देखभाल के लिए नहीं हैं। जब वे बीच-बीच में खेलते हैं तो बजाए उनके लिए तरह-तरह के स्नैक्स तैयार करने के, उनके साथ खेल में हिस्सा लें। हो सके तो घर के बुजुर्गों को भी शामिल करें। याद करें, इस क्वालिटी टाइम के लिए तो आप परेशान थीं।

रूटीन खुद डिजाइन करें

बच्चों की ऑनलाइन स्टडी हो या फिर पति का वर्क फ्रॉम होम। उनके लिए एक रूटीन बनाएं। उन्हें पहली की तरह ब्रेकफास्ट दें, लंच बनाकर रख दें। यह न सोचें कि किसी को ऑफिस नहीं जाना है तो भोजन देर से बनाएंगी।

सिखाएं घर के काम

अक्सर मां सोचती हैं कि उनके बच्चों के पास समय कहां है, उन्हें घर के काम सिखाए जाएं। आप बच्चों से लेकर बड़ों तक को न केवल काम सिखा सकती हैं बल्कि उनकी मदद से आप अपना काम भी समय पर पूरा कर सकती हैं। अब समय है, परिवार वालों को बताने का कि जितना काम वे कर रहे हैं, उतना ही आप भी करती हैं। ब्रेक में साथ में एंज्वाय करें।

● प्रस्तुति : गुरुग्राम से **प्रियंका दुबे मेहता**

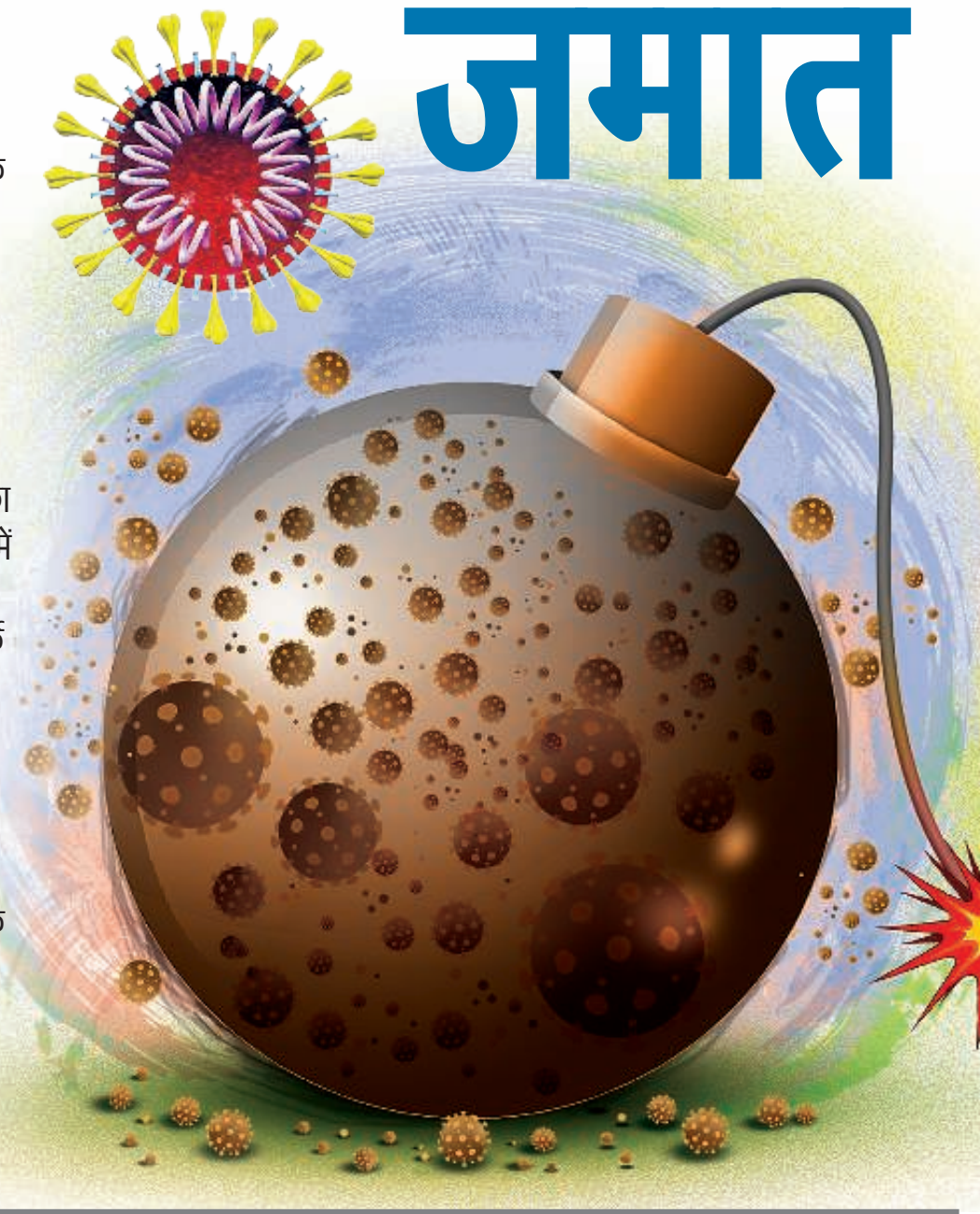

950 पिछले तीन दिन के दौरान कोरोना वायरस से संक्रमण के वे मामले जो तब्लीगी मरकज में शामिल हुए जमातियों के चलते फैला। कोरोना को मात देने की सरकार की तत्परता और लोगों के दृढ़संकल्प पर सुपर स्प्रेडर बनकर जमातियों ने पानी फेर दिया है।

मुद्दा से संबंधित अपनी राय, सुझाव और प्रतिक्रिया mudda@jagran.com पर भेज सकते हैं। | 7 दैनिक जागरण | रविवार 5 अप्रैल 2020

वायरस यानी जहर। लैटिन भाषा में इस शब्द का यही मायने है। ये सूक्ष्म विषाणु जीवित कोशिकाओं में पहुंचकर अपनी संख्या आश्चर्यजनक रूप से बढ़ाकर उसे संक्रमित कर देते हैं। 1892 में रूसी वनस्पति शास्त्री दमित्री इवनोवास्की द्वारा लेख में एक ऐसे गैर बैक्टीरिया पैथोजेन का जिक्र करने और 1898 में डच माइक्रोबायलोजिस्ट मार्टिनस बीजरनिक द्वारा टोबैको मोजैक वायरस का पता लगाने के बाद पर्यावरण में मौजूद लाखों वायरसों में से पांच हजार के बारे में व्यापक जानकारी पता की जा चुकी है। इन्हीं वायरसों में से एक कोरोना वायरस एकदम नया है। इसकी रोकथाम के लिए शारीरिक दूरी को एकमात्र रामबाण इलाज बताया जा रहा है। जो लोग इस नियम की अवहेलना कर रहे हैं वे इंसान की खाल में समाज के लिए किसी वायरस से भी ज्यादा खतरनाक हैं। कोरोना के बढ़ते प्रकोप के बीच भारत ने देशव्यापी लाकडाउन घोषित किया। विशेषज्ञों का अनुमान था कि 21 दिन के लॉकडाउन में संक्रमण काबू में आ जाएगा। इस दौरान आए अधिसंख्य मामलों में या तो ट्रेवल हिस्ट्री निकली या वे किसी संक्रमित के सीधे संपर्क में रहे। सामुदायिक संक्रमण की बात नहीं आई। लेकिन दिल्ली के तब्लीगी जमात प्रकरण के सामने आने के बाद संक्रमित मामलों की संख्या तेजी से बढ़ गई। धर्म और दीन भी सिखाता है कि आपदा के समय उचित कदमों या सरकार के दिशानिर्देशों के प्रति न सिर्फ लोगों को जागरूक किया जाए बल्कि खुद भी उसका पालन करके समाज के सामने एक नजीर पेश की जाए। अफसोस, तब्लीगी जमात से जुड़े लोगों ने इसका कतई पालन नहीं किया। ऐसे में तब्लीगी जमात की इस अन्यमनस्कता से देश के लोगों की जान के साथ हुए खिलवाड़ में दोषियों की पहचान आज हम सबके लिए बड़ा मुद्दा है।

वायरस की जमात

इंसान और इस्लाम के गुनहगार

रामिश सिद्दीकी
इस्लामिक विषयों के जानकार

हजरत मुहम्मद साहब ने एक बार अपने एक साथी से कहा था कि स्वस्थ के साथ बीमार को मत बैठाओ। कुष्ठ रोग से ऐसे दूर भागो जैसे शेर से दूर भागते हो। अफसोस, दुनिया में इस्लाम का झंडा बुलंद करने का दावा करने वाली तब्लीगी जमात इस्लाम के बुनियादी उसूल नहीं समझ सकी। इंसानियत और इस्लाम का इससे बड़ा दुश्मन भला कौन हो सकता है?

भारत में कोरोना महामारी से बचने के लिए सुरक्षात्मक उपाय पहली बार जनवरी में लागू किए गए थे जब सरकार ने चीन से आने वाले सभी यात्रियों की थर्मल स्क्रीनिंग करने के लिए अपने प्रमुख अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों को निर्देश जारी किया था। इसके बाद ही सरकार ने विदेश से आने वाले सभी यात्रियों को इसके दायरे में रखकर समझदारी भरा कदम उठाया। 19 मार्च को अपने संबोधन में प्रधानमंत्री मोदी ने 22 मार्च की सुबह 7 बजे से रात्रि 9 बजे तक सभी नागरिकों को 'जनता कर्फ्यू' (लोगों के कर्फ्यू) का पालन करने के लिए कहा। उसके बाद दिल्ली के मुख्यमंत्री द्वारा यह घोषणा हुई कि 23 मार्च, 2020 की सुबह 6 बजे से दिल्ली को 31 मार्च तक बंद रखा जाएगा। 24 मार्च को प्रधानमंत्री ने 21 दिनों के लिए देशव्यापी बंद का आदेश दिया। जब देश के नागरिक अपने घरों में रहकर ईश्वर से कोरोना वायरस से बचने के लिए प्रार्थना कर रहे थे, तभी देश की राजधानी नई दिल्ली से एक खबर सामने आई कि मार्च के शुरू में दिल्ली के निजामुद्दीन स्थित तब्लीगी जमात में 13 मार्च को इंडोनेशिया, मलेशिया और अन्य देशों के नागरिकों के साथ 3,000 से अधिक लोगों का एक कार्यक्रम हुआ। देश भर से इस कार्यक्रम में हिस्सा लेने वाले कई लोगों में कोविड-19 के लक्षण पाए जा रहे हैं चाहे वे तमिलनाडु से हों या कश्मीर से।

आज इस कार्यक्रम में शामिल हुए लोगों में से लगभग 10 लोग कोविड-19 के कारण मर भी चुके हैं, जिनमें जमात के कश्मीर प्रमुख भी शामिल हैं। आलम ये हो गया है कि देश के कुल कोरोना वायरस संक्रमितों में एक चौथाई संख्या उन लोगों की है जिनका दिल्ली के निजामुद्दीन स्थित तब्लीगी मरकज से प्रत्यक्ष या परोक्ष नाता रहा है।

हम पूछना चाहते हैं कि जमात ने इस महामारी के चलते अपने कार्यक्रम को रद्द करने के लिए दूरदर्शिता क्यों नहीं दिखाई? जमात एक विश्वव्यापी संगठन है और इसे दुनिया भर में मौजूद बड़े इस्लामी संगठनों में से एक गिना जाता है। अपने विशाल नेटवर्क के बावजूद वे ये मापने में विफल कैसे रहे कि विदेशी नागरिकों को ऐसे समय में इतनी बड़ी संख्या में लाकर देश में रह रहे अनेकों के लिए ख़तरा बन सकते हैं। उनका कार्यक्रम समाप्त होने के बाद भी उनके यहां एक बड़ी संख्या में लोग एक-साथ वहीं रुके रहे जिनमें से कुछ में कोविड-19 के लक्षण नज़र आने लगे थे।

जमात एक लंबे समय से मुसलमानों के भीतर इस्लाम का प्रचार करने और उन्हें धर्म के बुनियादी सिद्धांतों के बारे में बताने का काम करता आया है। लेकिन वे स्वयं हजरत मुहम्मद साहब का संदेश कैसे भूल गए जहां उन्होंने बताया था कि ऐसी महामारी के समय किन सिद्धांतों का पालन करना चाहिए? मैं यहां पैगंबर साहब के जीवन के दो उद्धरणों को पेश करना चाहता हूं। जब उन्होंने एक बार अपने एक साथी से कहा था कि स्वस्थ के साथ बीमार को मत बैठाओ। यह इस्लाम के पैगंबर का एक स्पष्ट संदेश था ऐसे समय के लिए जब आपके बीच कोई ऐसा बीमार व्यक्ति हो जिसे संक्रामक बीमारी हो।

पैगंबर साहब के समय कुष्ठ रोग एक संक्रामक बीमारी थी। स्वास्थ्य विज्ञान 1450 साल पहले तक इतना विकसित नहीं हुआ था कि वह उस रोग का इलाज कर सकता। ऐसी संक्रामक बीमारी पर पैगंबर साहब ने एक बार कहा था कि इससे ऐसे दूर भागो जैसे आप एक शेर से दूर भागते हैं। उपरोक्त दो बातों से यह स्पष्ट है कि किसी व्यक्ति या समाज का व्यवहार ऐसे संक्रामक रोगों के समय कैसा होना चाहिए। यही संदेश जो डब्ल्यूएचओ और भारत सरकार द्वारा भी इतने लंबे समय से प्रचारित किया जा रहा है जिसके चलते आज देशव्यापी बंद किया गया।

लेकिन इन सबके बावजूद भी कुछ दिनों पहले तक मरकज में 1000 से अधिक लोग एकत्रित रहे जिनमें से कुछ कोविड-19 से संक्रमित थे। मीडिया के माध्यम से यह भी सामने आया है के जमात के संक्रमित लोग जिन्हें क्वारंटाइन किया गया है, वे उन डॉक्टरों से इलाज कराने से इंकार कर रहे हैं जो मुस्लिम नहीं हैं। मैं ऐसे लोगों को याद दिलाना चाहता हूँ कि मदीना के लोगों को पढ़ाने वाले शिक्षकों का पहला जत्था गैर-मुस्लिम था। समाज और सरकार एक पहिए के दो दांते की तरह हैं और ये दोनों दांते मिलकर किसी राष्ट्र के पहिए को आगे बढ़ाते हैं।

आज जब सरकार अपने नागरिकों की सुरक्षा के लिए इतना बड़ा बलिदान कर रही है जहां उसने देश बंद करने का निर्णय लिया, जो आज अमेरिका जैसा देश भी नहीं ले पा रहा है तो देश के प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह सरकार के साथ सहयोग करे। वे सभी लोग जो जमात के कार्यक्रम में शामिल हुए थे और जिनके संक्रमित होने की आशंका है उन्हें अपने यहां के स्वास्थ्य अधिकारियों से संपर्क करना चाहिए और उनके दिशानिर्देश का पालन करना चाहिए, ताकि ये बीमारी दूसरों को फैलने से रोकी जा सके। इस तरह न केवल वे अपने परिवार और दोस्तों की रक्षा करेंगे बल्कि हदीस का पालन करते हुए एक जिम्मेदार मुस्लिम की भूमिका निभाएंगे और साथ राष्ट्र की सुरक्षा में भी योगदान देंगे।

विज्ञान की राह पर धर्म

कोरोना वायरस को लेकर बढ़ती चिंता के बीच दुनिया में कई बदलाव हुए हैं। भीड़ भरे स्थानों पर जाने से लोग बच रहे हैं। बहुत से लोगों ने अपनी यात्राओं को स्थगित कर दिया है और बड़े लॉकडाउन के दौरान घरों में कैद है। इन असामान्य परिस्थितियों में धार्मिक क्रियाकलाप भी प्रभावित हुए हैं। मंदिर हो, मस्जिद हो या फिर चर्च या अन्य धार्मिक स्थल सभी अपने स्तर पर विज्ञान के बताए रास्ते पर वायरस के प्रसार को रोकने के लिए जुटे हैं।

ईसाई धर्म

इटली में पोप फ्रांसिस ने पादरियों से घरों के बाहर आने और बीमार लोगों के पास जाने के लिए कहा है। साथ ही उन्होंने स्वास्थ्यकर्मियों और स्वयंसेवकों का साथ देने के लिए कहा है। हालांकि उन्हें अन्य लोगों से कम से कम एक मीटर की दूरी रखने और शारीरिक संपर्क से बचने जैसी सावधानियां रखने की सलाह दी है। इसके साथ ही पोप ने वेटिकन में भीड़ को कम करने के लिए अपने पारंपरिक रविवार के संदेश को लाइव -स्ट्रीम करना शुरू किया है। घाना से लेकर अमेरिका और यूरोप के कैथोलिक चर्चों ने संक्रमण को रोकने के प्रयास में भीड़ को एकत्रित होने से रोकने की कोशिश की है। संक्रमण बढ़ाने वाली कई परंपराओं को फिलहाल के लिए रोक दिया गया है। वहीं ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च ने अपनी परंपराओं को नहीं बदला है। उनका तर्क है कि चर्च के सदस्यों के लिए पवित्र यूचरिस्ट में भाग लेना बीमारी के संचरण का कारण नहीं हो सकता है।

इस्लाम

मक्का की पवित्र मस्जिद में आमतौर पर हजारों की संख्या में श्रद्धालु होते हैं। हालांकि महामारी के कारण इसे अब बंद कर दिया गया है। वहीं मस्जिद में नमाज पढ़ने पर रोक लगा दी गई है। मदीना में भी सऊदी सरकार ने ऐसे ही उपाय किए हैं। वहीं मोरक्को से इंडोनेशिया तक दुनिया के कई देशों ने भी लोगों को एकत्रित न होने देने के लिए मस्जिदों में नमाज पर रोक लगा दी है और लोगों को घरों में रहने के आदेश दिए गए हैं। हालांकि पाकिस्तान जैसे देशों में लगातार बढ़ते आंकड़ों के बावजूद भी ज्यादा सख्त कदम नहीं उठाए गए हैं।

हिंदू

भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 21 दिन के लॉकडाउन की घोषणा की है। इसके बाद भारत के लगभग सभी बड़े मंदिरों को बंद कर दिया गया है। वैष्णोदेवी, उज्जैन महाकाल मंदिर सहित सभी मंदिर श्रद्धालुओं के लिए बंद किए गए हैं। वहीं इस महामारी से लड़ने के लिए कई मंदिरों की ओर से पीएम केयर फंड में लाखों रुपये दिए गए हैं। साथ ही जरूरतमंदों की मदद के लिए भी कई हिंदू संगठन आगे आए हैं। हिंदू संस्कृति के नमस्कार को भी वैश्विक स्तर पर मान्यता मिली है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अभिवादन के परंपरागत ढंग के बजाय हिंदू संस्कृति से जुड़े नमस्कार करते देखे गए हैं। सनातन धर्म के इतिहास में जिन मंदिरों के कपाट बंद होने का कहीं उल्लेख नहीं मिलता है, उन्हें भी कोरोना वायरस से बचाव के चलते बंद कर दिया गया है।

यहूदी

इजरायल के मुख्य रब्बी डेविड लाउ ने लोगों को सलाह देते हुए एक बयान जारी किया है। जिसमें उन्होंने लोगों को छूने या फिर धार्मिक प्रतीक मेजुजा का चुंबन नहीं लेने की बात कही गई है। यूरोपियन रब्बियों के सम्मेलन में भी लोगों को ऐसी ही सलाह दी गई।

निद्रासन में पुलिस-प्रशासन

अशोक चांद
सेवानिवृत्त एडिशनल पुलिस कमिश्नर

तब्लीगी जमात मामला प्रशासन के साथ पुलिस की भी विफलता है। पुलिस और प्रशासन ने वहां का निरीक्षण किया , लोगों के साथ बैठक हुई, लेकिन उन्हें हटाने के मामले में कोई गंभीरता नहीं दिखी। धारा 144 लागू है और धारा 188 के तहत कार्रवाई की जा सकती थी तो पुलिस और प्रशासन को सख्ती दिखानी चाहिए थी।

किसी भी धार्मिक स्थल पर जुटे लोगों को वहां से हटाना बेहद संवेदनशील मामला है। दिल्ली के निजामुद्दीन स्थित तब्लीग मरकज पर जुटे बड़ी संख्या में जमातियों को हटाने के लिए जो कार्य अब किया गया, उसे काफी पहले किया जाना चाहिए था। इसके लिए भारी संख्या में पुलिस बल की जरूरत पड़ती, विवाद भी हो सकता था, लेकिन इन स्थितियों से निबटने के लिए ही पुलिस बल को तैयार किया जाता है। प्रशासनिक अधिकारियों को ऐसी ही स्थितियों से निपटने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। पूरे प्रकरण में अब तक एक बात तो सामने आ चुकी है कि जो अब किया गया, वह पहले भी किया जा सकता था। प्रशासन के साथ पुलिस अधिकारियों को चाहिए था कि लोग वहां एकत्र ही न हों। मामला धार्मिक व्यवस्था से जुड़े होने के कारण भले ही संवेदनशील था, लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि इस समय लोगों को कोरोना वायरस से बचाने के लिए तमाम व्यवस्थाएं की जा रही है। जो भी इन व्यवस्थाओं का उल्लंघन कर रहे हैं, उन सभी को कानून की जद में लाकर कार्रवाई करनी चाहिए। उल्लंघन एक जगह होता है, लेकिन इससे अव्यवस्था काफी दूर तक फैलती है। जब एक जगह सख्ती बरती जाती है, तो उसका संदेश भी दूर तक जाता है। ऐसा नहीं है कि प्रशासन कोई कार्रवाई करने में सक्षम नहीं है, या फिर पुलिस के पास बल की कमी है, कमी रह गई तो मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए त्वरित और प्रभावी कार्रवाई करने की। पुलिस उनके साथ बैठक करती है, लेकिन पुलिस की कार्रवाई सिर्फ बैठक तक ही सीमित रह जाती है। प्रशासन की कार्रवाई वहां का निरीक्षण करने तक सिमट जाती है। किसी भी स्तर पर ऐसा कोई प्रभावी कदम नहीं उठाया गया, जिससे वहां लोगों को एकत्र होने से रोका जा सके। जब मामला हाथ से निकलता नजर आया तो पुलिस और प्रशासन ने कार्रवाई की। अब पूरे देश में उन लोगों की तलाश की जा रही है, जो यहां एकत्र हुए थे, अगर लोगों को एकत्र होने से रोक दिया जाता, या समय रहते सभी लोगों को क्वारंटाइन कर दिया जाता, तो शायद स्थिति इतनी गंभीर नहीं होती।

पुलिस को वहां के प्रबंधन से बात करनी चाहिए थी। पहले यह सुनिश्चित करना चाहिए था कि लोग एकत्र ही न हो। धारा-188 और महामारी अधिनियम के तहत तत्काल कार्रवाई की जानी चाहिए थी। जब सड़क पर धारा-188 का उल्लंघन करने वालों पर कार्रवाई की जा रही है, तो फिर इस कानून को सभी के लिए समान रूप से लागू किया जाना चाहिए था। कानून तो सभी के लिए एक समान है। जब कानून एक समान है तो फिर कार्रवाई भी एक समान होनी चाहिए। पुलिस और प्रशासन ने जब कानून लागू किया है, तो उसके तहत कार्रवाई भी उन्हें ही करनी है।

जनमत

हां 99% | नहीं 01%

क्या लॉकडाउन के बाद भारत में संक्रमण पर काबू दिखने वाली प्रवृत्ति तब्लीगी जमात के नए मामलों के सामने आने के बाद बड़ी चुनौती बन गई है?

हां 95% | नहीं 05%

क्या जानबूझकर इंसानों की जान का खतरा बनने वाले तब्लीगी जमात के लोग कोरोना वायरस से ज्यादा खतरनाक साबित हो सकते हैं?

आपकी आवाज

यह गंभीर मुद्दा है। भारत सरकार अच्छा काम कर रही है, लेकिन इस मामले ने मुश्किल परिस्थितियां पैदा कर दी हैं। लोगों को सरकार का सहयोग और उनके निर्देशों का पालन करना चाहिए। **डॉ. कविता रानी**

जहां पुरा विश्व कोरोना को रोकने मे लगा हैं, वहीं ऐसे लोग भी हैं, जो भारत जैसे देश मे कोरोना को फैलाना चाहते हैं। जिससे वह वर्तमान सरकार की किरकिरी कर सकें। ऐसी जमात पर आजीवन प्रतिबंध लगना चाहिए। **डॉ. श्वेता पूठिया**

गलती जमात की सजा मिल रही समाज को

एनके शर्मा
अध्यक्ष, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन, नोएडा

तब्लीगी जमात के कार्यक्रम में शामिल हुए सैकड़ों लोगों की जानकारी वहां की पुलिस और शासन को देर से होना बड़ा सवाल खड़ा करता है। ये एक बड़ी चूक है, जिसका खामियाजा देश की उस जनता को उठाना पड़ेगा जो देश के हर नागरिक की सुरक्षा के लिए अपने घरों में सीमित हैं और तमाम मुश्किलें झेल रहे हैं।

कोविड-19 को फैलने से रोकने के लिए लॉकडाउन एक मजबूत कदम के रूप में सामने आया था। संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए सोशल डिस्टेंसिंग (शारीरिक दूरी) एकमात्र उपाय है। पिछले दिनों कुछ रिपोर्ट भी आईं थीं कि भारत जैसे देश में कोरोना के मरीजों की संख्या बढ़ने का औसत गंभीर रूप से प्रभावित और विकसित देशों से काफी कम है। ऐसे में ये 21 दिन का तप देश को सुरक्षित रास्ते पर ले जा रहा था। लेकिन कुछ दिन पहले दिल्ली से आई तब्लीगी जमात की खबर ने एक बड़ी समस्या को खड़ा कर दिया है। दिल्ली के निजामुद्दीन स्थित एक स्थान पर करीब दो हजार लोगों के इकट्ठा होने और उनमें से कुछ में कोरोना के पाजिटिव मरीज होने की खबर ने हड़कंप मचा दिया है। देश में एक तरफ शासन, प्रशासन व पुलिस हर तरह से लोगों को घरों में रहने के लिए अपील कर रही है। कई जगह सख्ती भी दिखाई गई। ये सभी काम कोरोना वायरस को फैलने से रोकने के लिए था। लेकिन देश की राजधानी दिल्ली में आयोजित तब्लीगी जमात के कार्यक्रम में शामिल हुए सैकड़ों लोगों की जानकारी वहां की पुलिस और शासन को देर से होना बड़ा सवाल खड़ा करता है। कार्यक्रम में लोग शामिल न हो सकें इसका पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए था। ये एक बड़ी चूक है, जिसका खामियाजा देश की उस जनता को उठाना पड़ेगा जो देश के हर नागरिक की सुरक्षा के लिए अपने घरों में सीमित हैं। उधर जमात में शामिल होने वाले लोगों ने भी समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी न दिखाते हुए 'समाजद्रोही' का कार्य किया है। उनकी इस गलती का ही नतीजा है कि पिछले दो दिनों में कोरोना के पाजिटिव मरीजों की संख्या में जबरदस्त उछाल आया है। शुरुआत का एक सप्ताह काफी ठीक रहा। अब बाकी दिनों में स्थिति को संभालने के लिए सरकार को खूफिया तंत्र के जरिए हर उस शख्स की पहचान करनी होगी जो वहां शामिल थे। कई अन्य देशों में बाहर निकलने वालों पर आर्थिक दंड व अन्य कार्रवाई होने लगी है। इसकी शुरुआत यहां भी होनी चाहिए। वहीं जो लोग जबरन बाहर निकल रहे हैं उन पर कानूनी कार्रवाई करनी चाहिए। लॉकडाउन का समय कम लग रहा है। इसे बढ़ाने की जरूरत पड़ सकती है। लॉकडाउन को पूरी तरह से सफल बनाएं। देश 135 करोड़ लोगों का है, यदि बीमारी इसी तरह अपने पैर पसारने लगी तो महामारी की चपेट से रोकना काफी मुश्किल हो जाएगा। ये समय खुद के साथ और की सुरक्षा करने का जिसे सिर्फ सोशल डिस्टेंसिंग से ही रोका जा सकता है।

(अर्पित त्रिपाठी से बातचीत पर आधारित)

धर्मः विपत्ति पर भारी आस्था

संकट के समय तिनके का सहारा भी मिल जाए तो बहुत है। बड़ी आबादी कोरोना संकट से बचाव में खुद को असहाय पा रही है। विपरीत परिस्थितियों में अरबों लोगों के लिए धर्म संबल का काम करता है। छोटे समय के लिए ही सही इस भय ने लोगों को वैश्विक स्तर पर धर्म और पारंपरिक रीति-रिवाजों की ओर खींचा है। हालांकि जो आत्मा के लिए अच्छा है वो हमेशा शरीर के लिए अच्छा नहीं हो सकता।

वास्तविकता को अपना रही आस्था

कई आस्थाएं नई वास्तविकता को अपना रही है। पूजा के घर बंद या खाली हैं। व्यक्तिगत बोतलों से पवित्र पानी का छिड़काव किया जा रहा है। मध्य पूर्व में शुक्रवार की प्रार्थना रद कर दी गई है। वेस्ट बैंक और कुवैत में मुअज्जिनों ने मस्जिदों में आस्था रखने वालों को अपने घरों में रहकर ही प्रार्थना करने के लिए कहा है। वहीं इटली में भीड़ रहित पांच-छह सप्ताह हो चुके हैं। लेकिन पलेर्मो की सेंट रोजालिया पहाड़ी अभयारण्य खुला रहता है। ऐसे में हम आस्था को लेकर के कई बार पूर्वाग्रहों से भी भरे नजर आते हैं।

कठिन घड़ी

धर्म में आस्था रखने वाले लोगों को एकत्रित होने को रोककर वायरस से मुकाबला करने की बात कही जा रही है। कई धर्मों में धार्मिक जनसमूह मुख्य सिद्धांत के रूप में शामिल है। कुछ मामलों में धार्मिक उत्साह लोगों को ऐसे इलाज की ओर ले गया, जिसका वैज्ञानिक आधार नहीं है।

धार्मिक गुरुओं की सलाह

धार्मिक गुरुओं की सलाह ने आस्तिकों की ऊर्जा को पुनर्निर्देशित किया है। इजरायल के प्रमुख एश्केनाजी रब्बी डेविड लाउ ने यहूदियों से रोजाना 100 आशीर्वाद कहने का आह्वान किया है। वहीं मिस्र के एक पोप टवाड्रस द्वितीय ने इसे पश्चाताप जगाने वाली घंटी बताया। एक धर्मोपदेश ने कहा कि यह सामंजस्य का समय है।

धर्म का यह पहलू भी

न्यूयॉर्क में प्रतिबंधों के बावजूद हैसिडिक यहूदी समुदायों में कई शादियां हुई हैं। जिसके बाद वायरस पुष्टि के मामलों में बढ़ोतरी की सूचना मिली है। वहीं ईरान में पवित्र स्थल कई सप्ताह तक भीड़ के लिए खुले रहे। यह मानते हुए कि कोरोना वायरस ने देश को छोड़ दिया है। स्थिति बिगड़ी तो सख्त कदम उठाए गए।

धर्म का आश्रय

धार्मिक गुरु जैसे-जैसे धार्मिक प्रथाओं को प्रतिबंधित करने के लिए बढ़े हैं, वैसे-वैसे इन प्रथाओं का आश्रय बहुत तेजी से बढ़ा है। 31 साल के मिस्र के फार्मासिस्ट अहमद शाबान ने पैगंबर मुहम्मद के जन्मस्थान और मकबरे की तीर्थयात्रा करने के लिए इसी महीने सऊदी अरब की यात्रा की। सऊदी सरकार ने मक्का और मदीना के सभी पवित्र स्थलों को श्रद्धालुओं के लिए बंद कर दिया है। इस कठिनाई, भय या संकट के समय में शाबान का कहना है कि या तो आप सोचते हैं कि ईश्वर हमारे लिए यह कैसे कर सकता है? या फिर आप उनसे सुरक्षा या मार्गदर्शन के लिए कहते हैं।

दैनिक जागरण

धैर्य किसी भी संकट से उबारने में सहायक होता है

अंध विरोध की हद

गहन संकट के समय भी किस तरह संकीर्णता का परिचय देने और नकारात्मकता का प्रदर्शन करने से बाज नहीं आया जाता, इसका ही उदाहरण पेश कर रहे हैं वे लोग जो इस या उस बहाने रविवार रात नौ बजे नौ मिनट तक दीया, मोमबत्ती या मोबाइल की फ्लैश लाइट जलाने की प्रधानमंत्री की अपील का विरोध करने के लिए आगे आ गए। छद्म लिबरल जमात के लोगों, विपक्षी दलों और खासकर कांग्रेस के नेताओं ने यह माहौल बनाने में तनिक भी देर नहीं की कि प्रधानमंत्री तो कोरोना वायरस के संक्रमण को थामने के बजाय लोगों का ध्यान बंटाने के लिए दीया-मोमबत्ती जलाने का आग्रह कर रहे हैं। ऐसा माहौल बनाने की कोशिश तब की गई जब प्रधानमंत्री ने साफ तौर पर यह रेखांकित किया था कि अंधेरे में उजाले के इस अनोखे आयोजन का एकमात्र उद्देश्य देश की सामूहिक संकल्प शक्ति का जागरण करना और हर भारतीय को यह अनुभूति कराना है कि इस कठिन समय वे अलग-थलग होते भी अकेले नहीं हैं। इसके अतिरिक्त देशवासियों में यह भाव भी भरना है कि कोरोना रूपी संकट के इस घने अंधेरे को परास्त किया जाएगा।

आखिर देश के लोगों का मनोबल बढ़ाने, उनमें आशा का संचार करने और एक-दूसरे का ख्याल रखने के साथ एकजुटता की भावना पैदा करने की पहल के विरोध का क्या औचित्य? यह नकारात्मकता की हद ही है कि इस आयोजन को लेकर यह शरारत भरा दुष्प्रचार करने में भी संकोच नहीं किया गया कि घरों की सारी लाइट बंद करने से तो ग्रिड फेल हो जाएगी। इसे मूर्खता के चरम प्रदर्शन के अलावा और कुछ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि घरों के फ्रिज, एसी और अन्य उपकरणों के साथ रोड लाइट बंद करने की तो कोई बात ही नहीं है। हैरानी इस पर है कि इस मूर्खता का परिचय यह जानते हुए भी दिया गया कि हर वर्ष अर्थ आवर के मौके पर देश- दुनिया में कुछ क्षणों के लिए बत्तियां बुझा दी जाती हैं और फिर भी कहीं ग्रिड फेल नहीं होती। इस तथ्य से भली तरह अवगत होने के बावजूद मूर्खतापूर्ण बातों का सिलसिला इतना तेज हुआ कि बिजली मंत्रालय को यह स्पष्ट करने के लिए आगे आना पड़ा कि ग्रिड फेल होने का अंदेशा आधारहीन है। जिन्हें यह लगता है कि अंधकार से प्रकाश की ओर जाने का संकल्प लेने वाली इस अनूठी पहल से कुछ नहीं होना वे इससे भी परिचित होंगे कि इसमें भाग लेना अनिवार्य नहीं किया गया है। इस सकारात्मक पहल से असहमत होने में कोई हर्ज नहीं, लेकिन ऐसे लोगों को कम से कम नकारात्मक माहौल बनाने से तो बाज आना ही चाहिए।

समाज की भागीदारी

उत्तराखंड में कोरोना महामारी के खतरे को थामने के लिए स्वैच्छिक संगठनों, सिविल सोसाइटी, एनसीसी कैडेट के साथ ही धार्मिक नेताओं की मदद लेने का फैसला सरकार ने लिया है। यह बिल्कुल सही कदम है। राष्ट्रीय आपदा कोरोना से निपटने का जिम्मा सिर्फ सरकार पर ही नहीं है। यह समूचे समाज की भी बड़ी और अहम जिम्मेदारी है कि कोरोना वायरस संक्रमण को फैलने से रोकने में पूरी ताकत से जुटे। इस मामले में सरकार प्रबंधन की व्यापक भूमिका निभा सकती है, लेकिन समाज की बहुस्तरीय भागीदारी के बगैर इस महामारी का मुकाबला नहीं किया जा सकता। ये अब तक मिले जनसमर्थन का ही नतीजा है कि सरकार कोरोना के खिलाफ छेड़ी गई लड़ाई में तेजी से काम कर पा रही है। हालांकि पिछले कुछ दिनों से कोरोना वायरस संक्रमण को नियंत्रित करने में परेशानी बढ़ी है। उत्तराखंड में भी तब्लीगी जमात से जुड़े लोगों में कोरोना संक्रमण के मामले तेजी से सामने आ रहे हैं। ऐसे संदिग्धों की पहचान और उन्हें क्वारंटाइन करने के लिए समझाने में अब धार्मिक नेताओं के साथ ग्राम प्रधानों और पार्षदों की मदद ली जाएगी। समुदाय के बीच से ही प्रभावशाली और जिम्मेदार लोगों की मदद लेने के निश्चित तौर पर अच्छे कदम सामने आ सकते हैं। वैसे भी सरकारी तंत्र खास कार्यप्रणाली के दायरे में ही काम करने का अभ्यस्त होता है। ऐसे नाजुक मौके पर सरकारी तंत्र को भी संवेदनशील होने की आवश्यकता है। ये नए योद्धा कोरोना से जंग में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं। वक्त की जरूरत भी यही है। लापरवाही और जानबूझकर महामारी को फैलाने में भागीदारी बनने वालों के खिलाफ सख्ती का निर्णय लिया जा चुका है। सरकार के रुख से यह साफ है कि ऐसे मामलों में अब शायद ही ढुलमुल रवैया अपनाया जाए। लिहाजा सिविल सोसाइटी और स्वयंसेवी संगठनों से मौजूदा परिस्थितियों से निपटने में ज्यादा सहयोग की अपेक्षा स्वाभाविक है। सभी तबकों की सक्रिय भागीदारी से ही अच्छे परिणाम मिलने की आशा की जा सकती है। सरकार और तमाम राजनीतिक दलों के नेतागण, जनप्रतिनिधि यही कह रहे हैं कि एकजुट होकर और मजबूत मनोबल के जरिये ही इस विपदा का सामना किया जा सकता है। उम्मीद की जानी चाहिए कि सरकार के नए निर्देशों के बाद जिलों में प्रशासनिक मशीनरी और अधिक भरोसे के साथ काम करेगी। यदि इन उपायों को अपेक्षित रूप से अमल में लाया जा सका तो काफी सफलता मिल सकती है।

कोरोना के खिलाफ कठिन लड़ाई

संजय गुप्त

यदि उन इलाकों में लॉकडाउन बढ़ाना पड़े जहां कोरोना के अधिक मरीज हैं तो सरकार को हिचकिचाना नहीं चाहिए

कोरोना वायरस से भारत की लड़ाई का मोर्चा तब कमजोर पड़ गया जब बीते दिनों दिल्ली के निजामुद्दीन इलाके में तब्लीगी जमात के एक आयोजन में करीब दो हजार लोग जमा मिले। इनमें देश के विभिन्न हिस्सों से आए लोग तो थे ही, विदेश से आए मजहबी प्रचारक भी थे। इनमें तमाम कोरोना वायरस से संक्रमित मिले। इस जमात ने अपने जमावड़े के दौरान जरूरी सावधानी बरतने से इन्कार करने के साथ दिल्ली सरकार, दिल्ली पुलिस और भारत सरकार के निर्देशों की अनदेखी भी की। इसकी पुष्टि इस मरकज के मौलाना साद के इस बयान से होती है कि मुसलमानों को कोरोना का कोई डर नहीं और फिर मरने के लिए मस्जिद से अच्छी जगह और क्या हो सकती है। ऐसे बयान देकर इस मौलाना ने एक तरह से जानबूझकर कोरोना वायरस का संक्रमण बढ़ाने का काम किया। तब्लीगी जमात की इस हरकत के भयानक नतीजे सामने आए। इस मरकज से निकाले गए लोगों में से अभी तक करीब एक हजार लोग कोरोना संक्रमित पाए गए हैं। साफ है कि जमातियों ने कोरोना संकट को गहरा दिया। तब्लीगी जमात मुस्लिम समुदाय का करीब सौ साल पुराना संगठन है। इसकी जड़ें दक्षिण एशिया के साथ दुनिया के अन्य तमाम देशों में है। यह दकियानूसी तौर-तरीके वाले मजहबी व्यवहार पर जोर देता और उसके प्रचार का काम करता है। उसके मौलाना, सदस्यों और समर्थकों की ओर से अभी भी यह कहा जा रहा है कि कोरोना उनके लिए कोई खतरा नहीं। ऐसे बयान कई जमातियों की संक्रमण से मौत के बावजूद दिए जा रहे हैं। यह जहालत के अलावा और कुछ नहीं।

चूंकि विदेश से आए कोरोना संक्रमित भारतीयों के साथ तब्लीगी जमात के सदस्यों ने कोरोना से उपजी महामारी कोविड-19 के खिलाफ भारत की लड़ाई को और कठिन बना दिया है इसलिए आने वाला सप्ताह मुश्किल भरा हो सकता है। इसका अंदेशा है कि जमातियों और दूसरे कोरोना संक्रमित व्यक्तियों के जरिये संक्रमण फैलने का सिलसिला तेज हो सकता है। अगर ऐसा हुआ तो संक्रमण का वह तीसरा दौर शुरू हो जाएगा जिसमें यह पता नहीं लगेगा कि कौन किससे संक्रमित हुआ? इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि वैज्ञानिक इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि कई बार बेहतर प्रतिरोधक क्षमता वाले व्यक्तियों में संक्रमण के लक्षण नहीं दिखते और इसके चलते वे दूसरे लोगों में आसानी से संक्रमण फैला देते हैं। यूरोप और अमेरिका में ऐसा ही हुआ। वहां लोगों ने कोरोना की चपेट में आने के बाद भी जरूरी सावधानी नहीं बरती और संक्रमण फैलाते रहे। इसी कारण देखते ही देखते दुनिया भर में संक्रमित लोगों की संख्या दस लाख पार कर गई। मरने वालों का आंकड़ा भी साठ हजार के करीब पहुंच गया है।

अवधेश राजपूत

यह दुखद और चिंताजनक है कि जब देश कोरोना संकट से निपटने के लिए हरसंभव कोशिश कर रहा है तब तब्लीगी जमात के कोरोना मरीज अथवा संदिग्ध डॉक्टरों, स्वास्थ्यकर्मियों और पुलिसकर्मियों से भी बदसलूकी में लगे हुए हैं। इंदौर में तो उन्होंने स्वास्थ्यकर्मियों के साथ महिला डॉक्टरों पर भी हमला किया। ऐसी ही घटनाएं हैदराबाद, बेंगलुरु समेत अन्य अनेक शहरों में हुईं। गाजियाबाद, कानपुर आदि में अस्पताल में भर्ती जमातियों ने उत्पात मचाया। इसके अलावा कई स्थानों पर सामूहिक नमाज पढ़ने से रोकने पर पुलिस पर हमले किए गए। ये सब दुष्कृत्य उस दुष्प्रचार का नतीजा हैं जिसके तहत सोशल मीडिया के जरिये यह झूठ फैलाया जा रहा कि कोरोना मुसलमानों के खिलाफ साजिश है।

यह जानना बेहद कष्टदायक है कि स्वास्थकर्मी जान हथेली पर रखकर जिनका उपचार कर रहे वही उनसे बदतमीजी कर रहे हैं। आखिर कोई इतना जाहिल कैसे हो सकता है कि अपनी जान बचाने वालों को ही अपना दुश्मन समझे? इन जाहिल तत्वों से सख्ती से निपटने के साथ यह आवश्यक है कि लॉकडाउन को कड़ाई से लागू किया जाए। यदि इसमें ढिलाई बरती गई तो लॉकडाउन बढ़ाने की नौबत आ सकती है। यदि उन इलाकों में लॉकडाउन की अवधि बढ़ानी पड़े जहां कोरोना के अधिक मरीज हैं तो सरकार को हिचकिचाना नहीं चाहिए।

यह सही है कि लॉकडाउन लोगों के मनोबल पर असर डाल रहा है और उससे अमीर-गरीब सब परेशान हैं। जहां अमीर अपने कारोबार को लेकर परेशान है वहीं गरीब रोजी-रोटी को लेकर, लेकिन इस समय कोई जोखिम नहीं लिया जा सकता। देशवासियों में कोरोना से लड़ने की क्षमता बनी रहे और वे इस संकट से बचने को लेकर आशावान रहें, इसके लिए प्रधानमंत्री ने लोगों से अपील की है कि वे आज रात नौ बजे, नौ मिनट के लिए अपने घर पर रहते हुए दीये, मोमबत्ती या मोबाइल की फ्लैश लाइट के जरिये रोशनी करें ताकि एक तो लोग अलग-थलग रहते हुए अकेलापन न महसूस करें और दूसरे, इस संकल्प से लैस हों कि सब मिलकर इस संकट को परास्त करेंगे। इस आयोजन का अपना महत्व है। इससे देशवासी कोरोना से लड़ाई को लेकर सचेत होंगे और साथ ही खुद को एकता के सूत्र में बंधा पाएंगे। अगर लोग सचेत रहेंगे तो वे सार्वजनिक मेल-मिलाप से बचने के लक्ष्य को पूरा करने में भी सहायक होंगे। यह बेहद जरूरी है, क्योंकि कोरोना का कोई इलाज नहीं और उसका टीका बनने एवं दुनिया भर में पहुंचने में एक साल से अधिक का समय लग सकता है।

चूंकि कोई भी देश लंबे समय तक लॉकडाउन में नहीं रहा और भारत सरीखा अधिक आबादी वाला देश तो और भी नहीं इसलिए यह स्वाभाविक है कि प्रधानमंत्री ने बीते दिनों मुख्यमंत्रियों के साथ बातचीत में इसे लेकर चर्चा की कि लॉकडाउन खत्म होने पर लोग संयम और अनुशासन का परिचय देना न छोड़ दें। शायद इसी कारण प्रधानमंत्री ने प्रकाश फैलाने का संदेश देते वक्त भी देशवासियों को अनुशासित रहने और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करने का अनुरोध किया। लोगों को इस अनुरोध के अनुरूप ही आचरण करते हुए सभी निर्देशों का पालन करना चाहिए। चूंकि आने वाला समय कठिनाई भरा रहने वाला है इसलिए केंद्र और राज्य सरकारों को न केवल इस पर ध्यान देना होगा कि जरूरी वस्तुओं की कहीं कोई कमी न होने पाए, बल्कि इस पर भी कि शहरों से लेकर गांवों तक में कोरोना के संदिग्ध मरीजों के परीक्षण का काम तेज हो। यह अच्छा है कि कोरोना के मरीजों की पहचान के काम में तेजी लाई जा रही है, लेकिन लोगों को यह तो ध्यान रखना ही होगा कि यह वह लड़ाई है जिसे उनके सहयोग के बिना जीतना नामुमकिन है।

response@jagran.com

जहालत की एक अलग दुनिया

हास्य-व्यंग्य

पिछले कई दिनों से घरबंदी में हूं। घर से बाहर निकलना तो दूर, बॉलकनी तक से झांकने में डर लगता है। कहीं मुआ कोरोना वायरस दबोच न ले! इस अदृश्य दुश्मन का खौफ है ही ऐसा कि फोन से भी बात करते समय तीन फीट की दूरी रखता हूं। यहां तक कि डर के मारे सोशल मीडिया में नहीं आ रहा हूं। वायरस के डर से अलग इन दिनों एक और डर जुड़ गया है-थूकने का। जहां-तहां लोग थूक रहे हैं। इसलिए लिखना तक बंद कर दिया है। कहीं किसी ने मेरे लेखन पर थूक दिया तो साहित्य को क्या मुंह दिखाऊंगा। लिखने से नहीं थू-थू होने से डर लगता है। किसी विशुद्ध बुद्धिजीवी की चपेट में आ गया तो थू-थू निश्चित है। अगर मजबूरी में किसी बुजुर्ग के लेखन को छूता भी हूं तो तुरंत सेक्युलर साबुन से सैनिटाइज कर लेता हूं। इससे साहित्यिक संक्रमण का खतरा नहीं रहता।

रही बात मेरी घरबंदी की तो उस पर मेरे मित्रों की राय अलग-अलग है। लोग अपने-अपने अंदाजे लगा रहे हैं। मुझे दूर से जानने वाले कह रहे हैं कि मैं घर में छिपा हुआ हूं। नजदीकी दोस्तों का आकलन है कि मैं फंसा हुआ हूं। कोरोना ने लोगों को मारा ही नहीं उनकी स्थापनाएं और निष्ठाएं भी बदल दी हैं। मैं न तो घर में छिपा हूं न फंसा। असलियत यह है कि क्वारंटाइन का स्थायी। स्टेटस डालकर मैं थूकने पर शोध करने में जुटा हूं। साहित्य में शोध करना लिखने से कम खतरनाक है। शोध के दौरान लगा कि इधर

संतोष त्रिवेदी

थूकने पर नए-नए प्रयोग हो रहे हैं। कुछ गलियों में थूक रहे हैं तो कुछ शायरी में। यह उनका वैचारिक थूक है

थूकना एक हथियार हो गया है। लोग जमकर थूक रहे हैं। थूकने पर नए-नए प्रयोग हो रहे हैं। कुछ गलियों में थूक रहे हैं तो कुछ शायरी में। यह उनका वैचारिक थूक है। वे कहते हैं थूकना उनके विरोध का तरीका है। वे जिसका विरोध करते हैं, उसी पर थूकते हैं। इस दौरान किसी और पर उस थूक के छींटे पड़ते हैं तो यह उनकी मंशा नहीं मात्र संयोग माना जाए। इस पर उनकी थू-थू होती है तो क्या, उन्हें संतोष है कि वे साहित्य की मुख्यधारा में तो बह रहे हैं!

थू-थू करने और करवाने का वे कोई मौका नहीं छोड़ते। पहले ताली-बजाने पर थू-थू कर रहे थे, अब दीया जलाने पर। जहालत पर कभी नहीं थूकते, क्योंकि इससे बुद्धिजीवी जमात में उनकी रेटिंग कम होने का अंदेशा है। जहालत वाले बेफिक्र हैं। उन्हें ऊपर वाले ने ऐसे हुनर से नवाजा है, जिसके होते कोई भी पढ़ाई फिजूल है। जहालत किसी तर्क या विज्ञान को नहीं मानती। उसकी अपनी मौलिकता है। सारी दुनिया भले ही एक वायरस के आगे घुटने टेक रही हो, जहालत की एक अलग ही दुनिया है। जब हर जगह आदमी-आदमी से दूर भाग रहा है,जहालत वाले जमात जोड़ रहे हैं। उनके लिए यह नेक काम है। वे वायरस को दुश्मनों की चाल बता रहे हैं। ऐसी जहालत के समर्थन में पढ़े-लिखे भी शामिल हैं। इससे जाहिर होता है कि जहालत का वायरस इस नामुराद कोरना वायरस के बाद भी जिंदा रहेगा।

जहां कुछ लोग बीमारी वाले वायरस को मारने में लगे हैं वहीं वायरस वाहक उन्हें ही दौड़ा रहे हैं। अव्वल तो पत्थर से मारते हैं। अगर दूर से निशाना चूकता है तो नजदीक से थूक देते हैं। इस महामारी में दुनिया भर में ऐसी रचनात्मक मिसाल ढूंढने से नहीं मिलती। जान बचाने वाले भले दुविधा में हों, पर थूकने वाले नहीं। जान बचाने वालों पर वे थूक छिड़क रहे हैं। थूकने वालों को लगता है कि उन्हें जन्नत जाने से रोकने की साजिश हो रही है। थूकना अब क्रिया नहीं कर्म बन गया है। इसलिए वे तो बस अपना काम कर रहे हैं।

शोध कार्य के बीच में वक्त निकालकर टीवी खोलता हूं तो वहां भी अलग-अलग शोध जारी हैं। रामायण और महाभारत की रेटिंग इन दिनों सबसे अधिक हो गई है। कुछ लोग इस पर भी थूक रहे हैं। वायरस की खबरों को दिखाने में चैनल वाले एक-दूसरे पर थूक रहे हैं। महाशक्ति अमेरिका चीन पर थूक रहा है। चीन पूरी दुनिया पर पहले ही थूक चुका है। सब जगह वायरस की थू-थू हो रही है। लगता है मेरा शोध कार्य बहुत लंबा चलने वाला है।

response@jagran.com

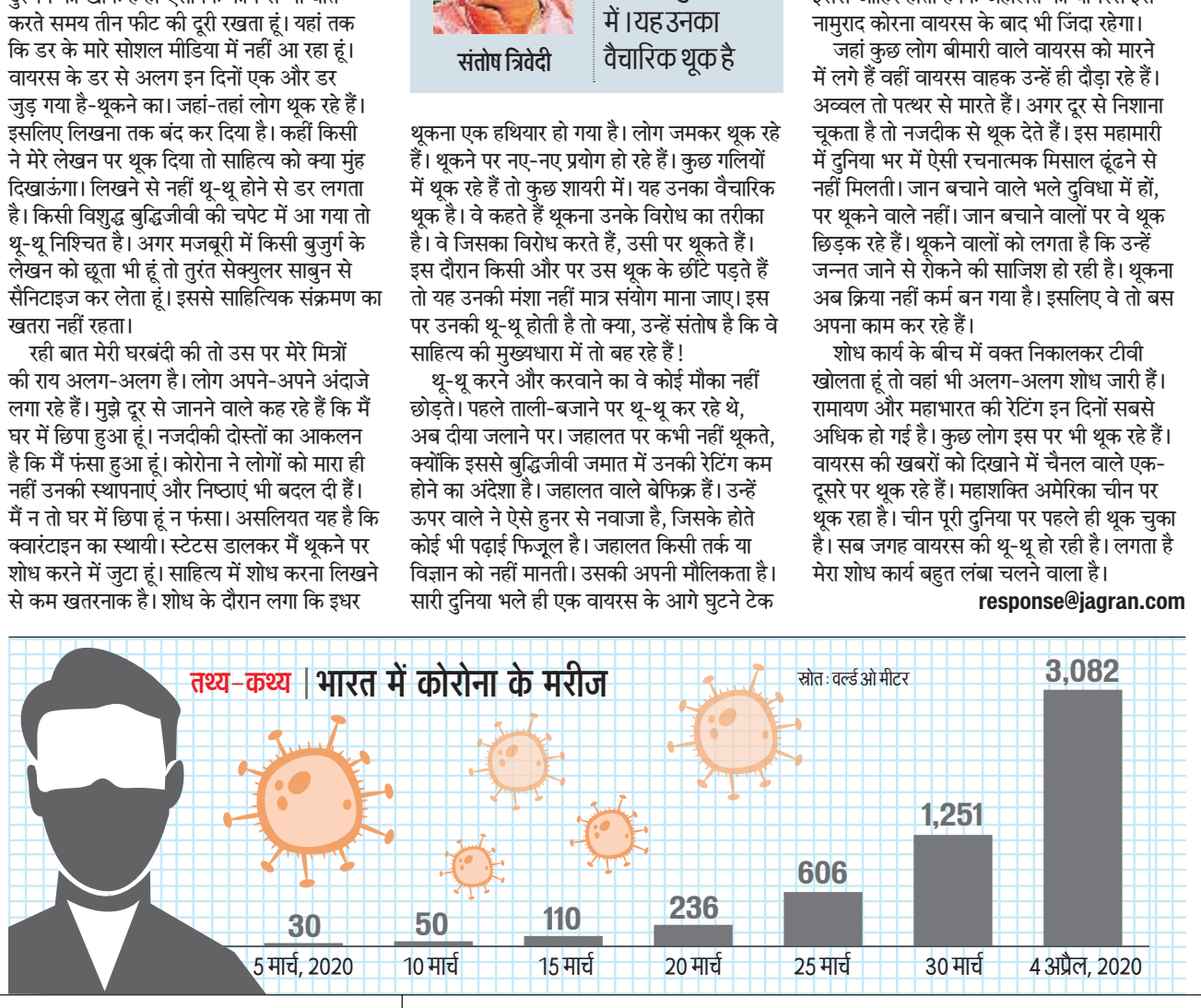

ऊर्जा

आत्म-अनुशासन

जिस समय पूरी दुनिया एक अदृश्य दुश्मन के खिलाफ संघर्षरत है उसमें अनुशासन की भूमिका और महत्वपूर्ण हो गई है। हमारे ऋषि-मुनियों ने आत्म-अनुशासन द्वारा ही आत्मबल जागृत किया था। व्यक्ति को कई बार मजबूरी में अनुशासित रहना पड़ता है। वह न चाहकर पर भी अनुशासन की डोर पकड़ता है। कभी-कभी भय भी उसे अनुशासित कर देता है। इसके उलट आत्म-अनुशासन की बात करें तो इसे व्यक्ति स्वयं स्वीकार करता है। आत्म अनुशासन व्यक्तित्व को विशेष बना देता है। कई बार विपरीत परिस्थितियों में व्यक्ति संयम, धैर्य के साथ-साथ आत्म-अनुशासन के जरिये सफलता अर्जित कर लेता है। विकट एवं असंभव लगने वाले कार्य भी आत्म-अनुशासन से सिद्ध हो जाते हैं।

आत्म-अनुशासन आत्मा को साधने का उपक्रम है। जब हम अपने मन को साध लेते हैं, उसे नियंत्रित कर लेते हैं तो विजयी होते हैं। आत्म-अनुशासित व्यक्ति हर विकट परिस्थिति में स्वयं को ढाल लेता है। संकटों से जूझने की उसकी शक्ति में वृद्धि हो जाती है। आज पूरा विश्व महामारी की चपेट में है। लोगों से सोशल डिस्टेंसिंग के लिए कहा जा रहा है। विश्व की बड़ी आबादी घरों में कैद है, लेकिन इसके बावजूद तमाम लोगों में आत्म-अनुशासन की कमी दिखाई दे रही है। हम स्वयं में नियंत्रण नहीं कर पा रहे हैं। इस दौर में जो स्वयं पर नियंत्रण रख पाएगा वही जीवन और मृत्यु के युद्ध को जीत पाएगा। समाज से दूर रहना बड़ा कठिन है। अपने मित्रों और रिश्तेदारों से दूर रहना बड़ा कठिन है, लेकिन जब यही समय की मांग हो, देश की पुकार हो तो यह जरूरी हो जाता है। ऐसे समय में हमारा आत्म-अनुशासन ही काम आता है। बड़े संकट को टालने के लिए आत्म-अनुशासन का पाठ पढ़ना ही बुद्धिमत्ता है। हम सभी देशवासी इन विकट परिस्थितियों में आत्म-अनुशासन का परिचय देकर कोरोना वायरस के प्रभाव को खत्म कर सकते हैं।

ललित शौर्य

जोखिम का सबब बनती भीड़

मुकुल व्यास

कई अध्ययनों में सामने आया है कि भीड़भाड़ भरे आयोजन से लोगों को सांस संबंधी संक्रमण बहुत जल्द चपेट में ले सकता है

भीड़भाड़ वाले आयोजन भी रोगों के प्रसार का एक बड़ा हो सकते हैं। एक हालिया अध्ययन में यह बात सामने आई है कि विदेशों में 25,000 से अधिक लोगों की उपस्थिति वाले समारोहों से सांस की बीमारी का जोखिम बहुत बढ़ जाता है। दुनिया भर में फैली कोरोना वायरस की महामारी के संदर्भ में यह अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है। शोधकर्ताओं ने 28 देशों के 68 अस्पतालों में अगस्त 2015 से लेकर अप्रैल 2019 तक दाखिल हुए मरीजों का अध्ययन किया।

उनका मकसद यह जानना था कि विदेशों में होने वाले आयोजनों में भाग लेने से मानव स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है। उन्होंने पता लगाया कि किसी अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम में शामिल होकर स्वदेश लौटने वाले जिन लोगों ने चिकित्सीय सहायता ली, उनमें से 80 प्रतिशत को सांस संबंधी तकलीफ हो गई। शोधकर्ताओं ने देखा है कि इनमें 26 प्रतिशत मरीज एन्फ्लूएंजा से पीड़ित थे, जबकि 20 प्रतिशत लोगों को निमोनिया हुआ। कुल 260 मरीज ऐसी बीमारी से पीड़ित हुए जो उन्हें विदेशी आयोजनों के कारण हुई थी। इनमें से 78 प्रतिशत बीमारियां सांस से संबंधित थीं, जबकि पांच प्रतिशत को आंत संबंधित रोग हुए। यह अध्ययन ट्रैवल मेडिसिन एंड इन्फेक्शियस डिजीज पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। इस अध्ययन में आंकड़े कोविड-19 के फैलने से पहले एकत्र किए गए थे। इन बीमारियों में सबसे बड़ा योगदान हजयात्रा का था। हज या उमरा के दौरान किसी रोगाणु की चपेट में आने वाले व्यक्ति की औसत उम्र 57 साल थी। नौ मामले ओलंपिक खेलों से जुड़े पाए गए, लेकिन माना गया कि ये मामले खेलों में भाग लेने से नहीं हुए। इनका संबंध यात्रा से है।

अमेरिका के सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन ने 15 मार्च को जारी अपनी गाइड-लाइन में कहा था कि बड़े स्तर पर होने वाले आयोजनों से कोरोना वायरस को फैलने में मदद मिल सकती है। यह वायरस उन लोगों द्वारा फैलाया जा सकता है जो इन आयोजनो में भाग लेने के लिए विदेशों से आते हैं। ऐसे लोग स्थानीय लोगों को संक्रमित कर सकते हैं। भारत में कोरोना के मामलों में जो वृद्धि हो रही है वह दिल्ली के निजामुद्दीन स्थित मरकज में तब्लीगी जमात की वजह से है। इसी तरह दक्षिण कोरिया में वायरस शिनचियोंजी चर्च की वजह से फैला। फ्रांस में अकेले एक चर्च से 2,000 लोग संक्रमित हो गए।

वर्ष 2016 में रियो ओलंपिक के समय जीका वायरस सुर्खियों में आया था। उस समय यह वायरस न सिर्फ ब्राजील में फैला हुआ था, बल्कि उत्तर और दक्षिण अमेरिका के कई देशों में इसके मामले पहुंच गए थे। सबसे पहले यह वायरस प्रशांत महासागर के कुछ द्वीपों तक ही सीमित था। समझा जाता है कि 2014 में ब्राजील में फीफा विश्व कप में भाग लेने आए किसी संक्रमित व्यक्ति ने यह वायरस फैलाया था।

(लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

साहब की चुप्पी

अपने तीखे व तल्ख भाषणों के लिए मशहूर केंद्र की सरकार में साहब बड़का मंत्री हैं, जो इन दिनों चुप्पी साधे घर में बैठे हैं। उनके नजदीकी लोगों का कहना है कि साहब को कोरोना वायरस का भय सताए जा रहा है। जबकि उनके राजनीतिक साथियों की मानें तो बिहार चुनाव के पास आने के साथ ही उन्हें मौन धारण करने की हिदायत दी गई है। उनकी बोली कभी-कभी राजनीति के सिर चढ़कर बोलने लगती है, जिससे फायदा होने की जगह नुकसान होने की आशंका से साहब को चुप करा दिया गया है। जमात और तब्लीगी बनाम कोरोना जैसे विषय पर उनकी चुप्पी किसी की भी समझ से परे है। तभी तो कुछ बोलने के आग्रह पर मास्क लगाए साहब अंगुली दिखाकर चुप रहने को कहते हैं। बहुत आग्रह करने पर अपने मंत्रालय पशुधन, डेयरी और पॉल्ट्री को हो रहे नुकसान के बारे में जरूर लंबी हांक लगाते हैं, लेकिन बिहार की राजनीतिक धमाचौकड़ी से लगता है कि उन्हें दूर ही रहने को कहा गया है।

बड़ी समस्या

राजनीति में ऐसे नेताओं की बड़ी तादाद रही है जिनका यह मानना था कि नेतागीरी और सोशल मीडिया का कोई संबंध नहीं है। खुद भाजपा के अंदर बड़ी संख्या में ऐसे सांसद और विधायक हैं जिन्होंने दबाव में आकर सोशल मीडिया के जरिये लोगों से जुड़ने की कवायद की, लेकिन कोरोना ने उन्हें झकझोर दिया है। शिथिल रहे ये नेता अब जब घर मे बंद हैं तो यह चिंता सता रही है कि लोगों से जुड़ें तो कैसे। खासकर बिहार जैसे राज्य में जहां अगले पांच-छह महीने में चुनाव होने हैं। अपने सहयोगियों के जरिये उन्होंने किसी तरह अपने क्षेत्रों के लोगों को संदेश तो भेजना शुरू किया है, लेकिन परेशानी यह है कि प्रतिक्रिया में जो जवाब आते हैं वह व्यंग्य सरीखे होते हैं। मसलन नेता जी कहते हैं-इस कठिन घड़ी में मैं हमेशा आपके साथ हूं तो जवाब आता है- आप तो केवल चुनाव के वक्त साथ होते हैं।

राजरंग

काम का तजुर्बा

जब से कोरोना वायरस को लेकर राष्ट्रीय स्तर पर लॉकडाउन किया गया है तब से आरबीआइ गवर्नर डॉ. शक्तिकांत दास शायद देश के सबसे सक्रिय और व्यस्त शख्स बन गए हैं। कभी बैंकिंग संचालन को सुचारू करने के लिए बैठकों का दौर तो कभी वित्त मंत्रालय के साथ विमर्श तो कभी दूसरे वित्तीय नियामकों के साथ बैठक। इस सबके बीच मीडिया से भी बातचीत, लेकिन डॉ. दास के लिए ऐसे आपात हालात कोई नई बात नहीं है। तीन-सवा तीन साल पहले नोटबंदी के समय भी वह ऐसी स्थिति से दो-चार हो चुके हैं। तब वह वित्त मंत्रालय में तैनात थे और नोटबंदी के दौरान सभी गतिविधियों को संभाले हुए थे। एक तरह से वह मीडिया के सामने सरकार का चेहरा थे। इस बार भी वह इसी तरह की भूमिका में हैं जिसे वह बखूबी निभा रहे हैं। इसमें शायद पुराना अनुभव काम आ रहा हो।

अरमानों पर कोरोना का कहर

कांग्रेस का वर्षों पुराना साथ छोड़कर महाराज अपने समर्थकों संग बड़े अरमानों के साथ भाजपा में आए थे। थोड़े ही समय में महाराज और समर्थकों को बहुत कुछ मिलने की उम्मीद थी, लेकिन इस बीच कोरोना ने उन सभी के अरमानों पर ऐसा पानी फेरा कि जहां खुद महाराज का राज्यसभा में आगमन अधर में फंस गया, वहीं समर्थकों की ताजपोशी भी नहीं हो पा रही है। ऐसे में सभी के चेहरे लटके हुए हैं। हालांकि इस सबके बीच भाजपाई खेमे के भीतर काफी सुकून है, क्योंकि महाराज के खेल के सहारे वह प्रदेश की सत्ता में काबिज हो चुके हैं। ऐसे में उन्हें कोरोना को लेकर कोई छटपटाहट नहीं है। वैसे भी उनका काम हो चुका है। रही बात महाराज और समर्थकों की तो उन्हें देखना होगा कि कोरोना आखिर कब तक उनकी राहें रोके रखता है। बताते हैं कि भाजपा से जुड़ने के बाद वह ग्वालियर तक नहीं जा पाए है। ऐसे में उनके समर्थकों का मायूस होना स्वाभाविक है।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन.संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

अनंत विजय

anant@nda.jagran.com

जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोरोना संकट से निपटने के लिए देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा की तो उसके दो दिन बाद ही तमाम लोग अपने-अपने घर या यों कहें कि अपने-अपने गांव के लिए निकल पड़े। हर कोई संकट के इस समय अपने-अपने स्थान पर लौट जाना चाहता था। इसे विद्वान पत्रकार साथियों ने पलायन तक कह दिया, लेकिन समाजशास्त्रियों के मुताबिक उसे पूरी तरह से पलायन कहना उचित नहीं था। यह पलायन नहीं था, ये सुरक्षा के लिए, अपने काम के लिए, सरकारी मदद पाने की आस में, संकट के वक्त अपनों या अपने परिवार के साथ रहने की इच्छापूर्ति के लिए अस्थायी तौर पर अपने गांव या घर लौट जाने की चाहत थी। इनमें मुख्यतः गांवों में रहने वाले वे लोग थे जो रोजगार, बेहतर शिक्षा और बेहतर आय के लिए शहरों में आकर रहते हैं। उस घटना के दौरान जब गांव लौटने की खूब चर्चा हुई तो, जेहन में एक विचार कौंधा था कि क्या हिंदी फिल्में भी गांव की ओर लौटेंगी?

आजकल

हिंदी फिल्मों से गायब होते गांव

भारत गांवों का देश है और सिनेमा समाज का दर्पण होता है। यह केवल दो कहावतों को जोड़ देना भर नहीं, बल्कि वास्तविकता है जो समय, देशकाल और परिस्थितियों के साथ बदलती गई। देश में गांवों की सूरत और सीरत बदल गई तो सिनेमा ने भी उसी हिसाब से अपनी दिशा बदल ली। लॉकडाउन के इस दौर में जब कई मामलों में हमारा अतीत पलटकर दस्तक दे रहा है तब क्या हम उम्मीद कर सकते हैं कि सिनेमा के रुपहले पर्दे पर भी गांवों का आख्यान फिर से दिखाई-सुनाई पड़ेगा।

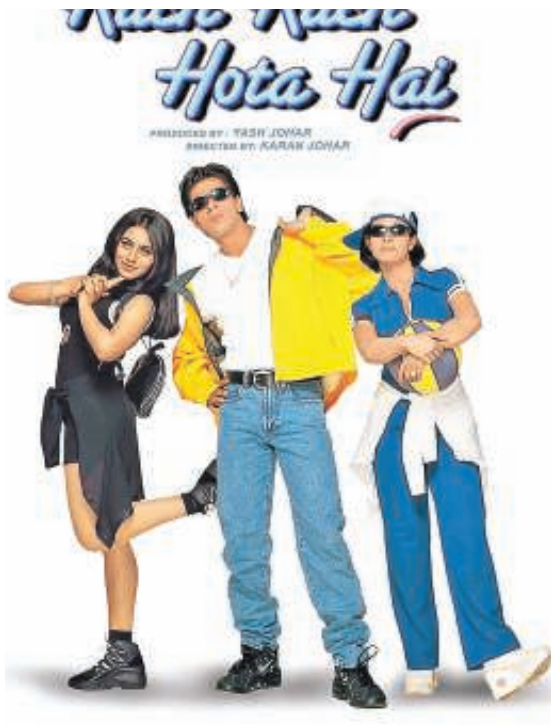

हिंदी फिल्मों के इतिहास पर विचार करें तो पाते हैं कि एक लंबे कालखंड में गांव और उसकी कहानी हिंदी फिल्मों का विषय हुआ करती थी। आजादी के पहले भी और आजादी के बाद भी हिंदी फिल्मों में गांवों की कहानियों प्रमुखता से चित्रित होती थीं। अगर हम राजकपूर की फिल्म 'बरसात' को याद करें तो इसकी कहानी भी गांव की पृष्ठभूमि पर है जिसमें फिल्म का नायक शहर से गांव जाता है जहां उसे एक लड़की से प्यार हो जाता है। इसमें उस दौर के गांव और वहां के लोगों की मानसिकता का बेहतर चित्रण किया है। हालांकि यह फिल्म एक लव स्टोरी तो है, लेकिन इसमें गांव के परिवेश को भी उकेरा गया है। इसके बाद भी कई फिल्में बनीं। वर्ष 1957 में नरगिस की फिल्म 'मदर इंडिया' आई जिसकी बहुत तारीफ हुई। यह फिल्म तो भारत के गांवों की प्रतिनिधि तस्वीर के तौर पर स्थापित हुई। इसमें गांव, किसान, फसल, गरीबी, महाजनी व्यवस्था के बीच गांव के युवाओं में आदर्श की राह पर चलनेवाली बाधाओं को भी चित्रित किया गया है। इस फिल्म में नरगिस के अभिनय ने उनको एक ऐसी ऊंचाई प्रदान की जिसको छूने की हसरत हर अभिनेत्री की अब भी होती है। इसके बाद भी कई फिल्में आईं जिनके केंद्र में गांव रहा है। रोमांटिक फिल्मों से लेकर एंग्री यंग मैन के दौर में भी फिल्मों में गांव और उसकी पृष्ठभूमि बनी रही और दर्शकों ने इसको पसंद भी किया।

इसके बाद आता है वर्ष 1998 जब फिल्मी दुनिया में एक नए निर्देशक का आगमन होता है जिसका नाम है करण जौहर। 1998 के अक्टूबर में इस निर्देशक की एक फिल्म रिलीज होती है जिसका नाम है- कुछ कुछ होता है। करण जौहर की इस फिल्म में काजोल और शाहरुख खान की जोड़ी को दर्शकों ने खूब पसंद किया। फिल्म जबरदस्त हिट रही। इस फिल्म की सफलता के साथ हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में ऐसी फिल्में बनने लगीं जिसमें गांव की गोरी की जगह शहर की स्कर्ट वाली लड़की ने ले ली। दुष्ट जमींदार और उससे चुहल करने वाली महिला की जगह शहरी डॉन टाइप गुंडे और उसकी वैंप टाइप महिला मित्र ने ले ली। गांव के भोले-भाले नायक की जगह शहरी जींस-टीशर्ट वाले लड़के ने ले ली। नायिका भी वेशभूषा में मॉडर्न हो गईं। कुछ कुछ होता है से कुछ पहले ही अनिल कपूर और पूजा बत्रा की फिल्म 'विरासत' और प्रकाश झा निर्देशित फिल्म 'मृत्युदंड' आई थी। इनमें गांव को प्रमुखता से दिखाया गया था, लेकिन विरासत में नायक शहर से आता है और उसकी गर्लफ्रेंड भी शहरी होती है। यानी इस फिल्म में गांव तो है, लेकिन शहर की मौजूदगी के साथ। यह ठीक वैसे ही है जैसे फिल्म बरसात में भी नायिका गांव की होती है और नायक शहर से आता है, वो वायलिन बजाता है, क्लब में जाता है, डांस करता है, लेकिन नायिका गांव की लड़कियों की तरह इन सबसे दूर रहती है।

जौहर की फिल्म 'कुछ कुछ होता है' के बाद हिंदी फिल्मों का पात्र और परिवेश पूरी तरह से शहरी होने लगे। फिल्म की लोकेशन को लेकर निर्देशकों ने विदेशों की ओर रुख करना शुरू किया। लोकेशन की चमक दमक, बेहतरीन तकनीक, नायक नायिका के चमकते हुए आधुनिक परिधान ने हिंदी फिल्मों के चरित्र में बुनियादी परिवर्तन कर दिया। करण जौहर की फिल्म के ठीक पहले एक और फिल्म आई थी जिसे यश चोपड़ा ने निर्देशित किया था जिसका नाम था- दिल तो पागल है। यह फिल्म भी जबरदस्त हिट रही थी। इसमें शाहरुख खान, माधुरी दीक्षित और करिश्मा कपूर के बीच के प्रेम त्रिकोण को यश चोपड़ा ने बहुत शानदार तरीके से पेश किया है। इस फिल्म ने हिंदी फिल्मों के शहरीकरण की बुनियाद रखी जिस पर कुछ कुछ होता है की सफलता ने एक मजबूत इमारत खड़ी कर दी। लगभग इसी कालखंड में कई फिल्में आईं जो दर्शकों को काफी पसंद आईं और वो अपने मिजाज में बिल्कुल शहरी थीं। फिल्मों में शहरी चमक-दमक को देखकर और गांवों के नेपथ्य में जाने पर मशहूर फिल्म निर्देशक गोविंद निहलानी ने कहा था कि गांव को हमारी कल्पना के आखिरी छोर पर धकेल दिया गया, ग्रामीण परिवेश का चित्रण अपनी जड़ों की स्वीकारोक्ति भर है, सारा जोर चमक-दमक पर है।

अगर हम देखें तो 1997-98 के बाद जिस तरह से दर्शकों ने शहरी पृष्ठभूमि की फिल्मों को पसंद करना शुरू कर दिया है वो दर्शकों की रुचि में एक बुनियादी बदलाव की ओर संकेत कर रहा था। एक के बाद एक धड़ाधड़ शहरी परिवेश पर बननेवाली फिल्मों की सफलता में सिंगल थिएटर का बंद होते जाना और शहरों में मल्टीप्लेक्स संस्कृति का विकास होना भी महत्वपूर्ण कारक रहा। हमारे देश के छोटे शहरों से, कस्बों से सिंगल थिएटर क्यों बंद होते चले गए ये गहन शोध का विषय है। एक जमाना था जब फिल्मों का अर्थशास्त्र बहुत हद तक इन एकल थिएटर पर निर्भर करता था। उस वक्त की पत्रिकाओं को देखने पर ये पता चलता है कि किसी भी सफल फिल्मों में मुनाफा का चालीस से लेकर पैंतालीस प्रतिशत तक इन एकल सिनेमा हॉल से आता था। तब कहा भी जाता था कि हिंदी फिल्मों की सफलता ड्रेस सर्किल और बालकनी के दर्शकों की पसंद पर निर्भर करती है। ड्रेस सर्किल और बालकनी एकल थिएटर में उच्च टिकट दर वाली जगह होती थी जहां कस्बों और छोटे शहरों के उच्च आयवर्ग के लोग फिल्में देखते थे। जैसे-जैसे फिल्म प्रस्तुतिकरण का अंदाज शहरी होता गया तो ये शब्दावली भी बदलती चली गई। अब इस पर बात होने लगी कि अमुक फिल्म को मल्टीप्लेक्स के दर्शक पसंद करेंगे या नहीं। किसी फिल्म को कितनी स्क्रीन मिले। मल्टीप्लेक्स के टिकटों की बिक्री ही सफलता का पैमाना बन गई। फिल्मों के इस शहरी दौर में भी ग्रामीण पृष्ठभूमि पर कुछ फिल्में बनीं, जैसे 2001 में आमिर खान अभिनीत फिल्म 'लगान' बनी और वह जबरदस्त हिट रही, लेकिन आमिर अभिनीत फिल्म 'मेला' को उस तरह की सफलता नहीं मिली।

आज जब पूरी दुनिया में अपनी परंपराओं और अपनी जड़ों की ओर जाने की बात होती है, विमर्श के केंद्र में परंपरा और पूर्व की स्थापनाएं होती हैं। ऐसे समय में हिंदी फिल्मों का शहरी होते चले जाना एक समाजशास्त्रीय अध्ययन की मांग भी करता है। अर्थशास्त्र तो साफ है कि वो अपने लक्षित दर्शक वर्ग को लेकर फिल्में बना रहा है। लेकिन यह जानना भी दिलचस्प होगा कि जब शहरों में रहने वाले अधिकतर लोग गांवों से आ रहे हैं और वो फिल्में भी देख रहे हैं तो ऐसे में गांव की कहानियां उनको अधिक नॉस्टेल्जिक नहीं लगेंगी?

कोरोना से बचाव

मददगार बन रही मशीन बुद्धि

शंभु सुमन

कोरोना वायरस के खिलाफ चौतरफा जंग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस भी मददगार बन गया। कल तक कृत्रिम बौद्धिकता को इंसानी कामकाज पर डाका डालने और रोजगार छीनने वाला कहा जा रहा था। अब वही हमारे काम आ रहा है। मुंबई में एक स्टार्टअप ने कोरोना वायरस संक्रमण का पता लगाने के लिए एआइ आधारित एक्स-रे तकनीक का इस्तेमाल शुरू किया है। कंपनी ने यह तरीका छाती के एक्स-रे से टीबी जांचने के लिए बनाया था जो कोविड-19 जांच के लिए उपयुक्त बन गया है। यह न केवल फेफड़ों में कोरोना वायरस के फैलाव को ट्रैक कर प्रभावित हिस्से के अनुपात का निर्धारण कर लेता है, बल्कि तपेदिक व फेफड़े की खराबी और उसके क्षरण एवं हृदय संबंधी विकारों का स्वचालित रूप से विश्लेषण भी कर लेता है।

एआइ आधारित कनाडा की एक कंपनी ब्लूडार्ट ने कोरोना वायरस के फैलाव और लोगों को तेजी से संक्रमित करने की आशंका से दिसंबर 2019 के अंतिम सप्ताह में ही सचेत कर दिया था। बाद में चीन में एआइ आधारित लाखों कैमरे से कोरोना संक्रमितों को पहचानने का काम लिया। अब यही कोरोना वायरस को खत्म करने के लिए दवाई और वैक्सीन विकास में अहम भूमिका निभा रहा है। गूगल डीपमाइंड द्वारा शुरू की गई अत्याधुनिक प्रणाली अल्फाफोल्ड ने भी एआइ की मदद से जनवरी में ही कोरोना वायरस के बनने के कारण को मालूम कर लिया था। उसके अनुसार यह वायरस अनुवांशिक अनुक्रम आधारित एक प्रोटीन की श्रीडी संरचना से पनपता है। इसकी बदौलत शोधकर्ताओं को वायरस की सक्रियता और उसे नष्ट करने के बारे में बेहतर ढंग से समझने में मदद मिली। उम्मीद बनी कि तैयार किए गए इस एआइ डाटा पैटर्न से उसके असर का पता लग सकता है, तो मनुष्य पर परीक्षण करने के लिए दवा की संभावनाओं को पहचानने में भी मदद मिल सकती है।

कोविड-19 के म्यूटेट होने की स्थिति में इसके व्यापक स्पेक्ट्रम के विरुद्ध दवा का किस हद तक प्रभावी होना चाहिए? इस आधार पर पूरी दुनिया के चिकित्सा विज्ञानी टीके की खोज कर रहे हैं। वे शोधकर्ता हांगकांग से लेकर भारत, इजराइल, जर्मनी, ब्रिटेन और अमेरिका तक के हैं। आज दुनिया भर में अनेक कंपनियां एआइ की मदद से कोरोना वायरस की दवा को खोजने में जुटी हैं। कैलिफोर्निया में मेनलो पार्क मुख्यालय स्थित अनुसंधान केंद्र नार्थ ड्रग डिजाइन और एसआरआइ इंटरनेशनल ने एआइ में विशेषज्ञता हासिल करने वाली कंपनी इक्तोस के साथ समझौता किया है ताकि इस वायरस टीके के विकास और नोवल एंटीवायरल थेरेपी में तेजी लाई जा सके। इस सहयोग के तहत इक्तोस की जेनेरिक माडलिंग तकनीक को एआइ के पूरी तरह से स्वचालित एंड-टू-एंड सिंथेटिक रसायन विज्ञान की प्रणाली से जोड़ दिया जाएगा। इनसे रासायनिक यौगिकों को सुधारने, नोवल डिजाइन करने और एन्फ्लूएंजा और कोरोना वायरस सहित दूसरे वायरसों के इलाज के लिए दवाओं को मरीजों के अनुरूप बनाने में मदद मिलेगी।

हांगकांग स्थिति बायोटेक कंपनी इंसिलिको मेडिसिन के सह संस्थापक और सीईओ एलेक्स झावरोन्कोव ने भी कोविड-19 के खिलाफ काम शुरू किया है। उन्होंने दवा की खोज करने लिए मशीन लर्निंग तकनीकों से एक विशाल लेगो सिस्टम तैयार किया है। इस मामले में इंसिलिको के एल्गोरिदम के जरिये दसियों हजार वैसे अणुओं की कल्पना की गई है जो वायरस के प्रसार के लिए जिम्मेदार प्रोटीन को संभावित रूप से नष्ट कर सकते हैं। इस आधार पर कुछ महीनों के भीतर मनुष्यों पर परीक्षण की उम्मीद की जा सकती है। यह टीम पूर्व में भी सार्स सहित कई बीमारियों के मामले में कामयाबी हासिल कर चुकी है।

ट्वीट-ट्वीट

अगर दीया जलाना मूर्खतापूर्ण है तब फिर कुछ लोगों के कैंडल लाइट मार्च और प्राइड परेड को क्या कहा जाए?

भावना अरोड़ा@BhaavnaArora

मैं किसी और के बारे में कुछ नहीं कहता, लेकिन मैं आज रात नौ बजे नौ मिनट तक दीया जलाने जा रहा हूं। मैं प्रधानमंत्री के आह्वान का सम्मान और देश के लोगों के साथ एकजुटता दिखाने और उनका हौसला बढ़ाने के लिए ऐसा करूंगा। बिल्कुल वैसे जैसे हम दीवाली के समय प्रार्थना करते हैं।

शेखर कपूर@shekharkapur

सरकार के कामकाज में खामियां निकालना और उसकी आलोचना करना बहुत सरल है। इस सबसे ऊपर उठकर कुछ करिए। इस समय देश को तथाकथित सेक्युलर जमात सहित हर किसी की जरूरत है। इस समय आलोचना से बढ़कर कुछ ठोस करना होगा। यह अपना योगदान देने का समय है।

मनीष मूंदड़ा@ManMundra

चीन की करतूतों के चलते महज दो हफ्तों में तकरीबन एक करोड़ अमेरिकियों को अपनी नौकरी गंवानी पड़ी। आगे हालात और खराब हो सकते हैं।

माइकल नॉवेल्स@michaeljknowles

पूरे मुस्लिम समुदाय को कोरोना वायरस फैलाने का दोषी करार देना सही नहीं होगा, लेकिन दिल्ली के निजामुद्दीन में तब्लीगी जमात की करतूतों का बचाव भी गलत है। उन्होंने मरकज में जो किया वह अपराध था। और उनमें से कुछ ने गाजियाबाद के अस्पताल में इलाज के दौरान जो घिनौनी हरकत की वह भी अपराध है। वास्तव में वे अपराधी ही हैं।

संकेत@sanket

रचनाकर्म

अर्थशास्त्र-समाजशास्त्र की जुगलबंदी

कन्हैया झा

भारत के सामाजिक विकास के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करने वाली यह पुस्तक तकनीकी विकास के साथ नैतिक बोध की आवश्यकता पर बल देती है...

पुस्तक : झोलावाला अर्थशास्त्र
लेखक : ज्यां द्रेज
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन
मूल्य : 375 रुपये

पिछले दो दशकों में भारत में सामाजिक नीति को लेकर व्यापक बहस हुई है। अनेक अर्थशास्त्रियों ने इसे विभिन्न संदर्भों में समझने-समझाने का प्रयास किया है। ज्यां द्रेज भी उनमें से एक हैं। उनका भारत में सामाजिक नीति आधारित विकासपरक अर्थशास्त्र में योगदान रहा है। पूर्व में वह इस संबंध में कई लेख भी लिख चुके हैं और यह किताब उनके ऐसे ही कुछ लेखों का संकलन है। इसमें भारत के सामाजिक विकास के विविध पहलुओं पर चर्चा की गई है। लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स और दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में अध्यापन कर चुके लेखक का मानना है कि सामाजिक विकास को अक्सर कुछ खास मसलों तक ही सीमित कर दिया जाता है, लेकिन इसमें बहुत कुछ शामिल है।

पुस्तक में भुखमरी और सूखा, गरीबी, स्कूल में भोजन, स्वास्थ्य सेवा, बाल विकास और प्राथमिक शिक्षा, रोजगार गारंटी, खाद्य सुरक्षा और सार्वजनिक वितरण प्रणाली, कॉरपोरेट जगत की ताकत और तकनीकशाही, युद्ध और शांति के अलावा टॉप-अप नाम से दस शीर्षकों के तहत उन विषयों से संबंधित लेखों को शामिल किया गया है।

हालांकि बीते दो दशकों में देश में सामाजिक विकास की प्रवृत्ति में जिस तरह से बदलाव आया है, उसे देखते हुए आपको यह विरोधाभास महसूस हो सकता है कि वैश्वीकरण और व्यावसायिकता के दौर में समाज को आगे ले जाने के लिए आर्थिक प्रवृत्ति में भी नए तरीके से बदलाव करना होगा, लेकिन इस किताब में लेखक ने जिन मसलों को रेखांकित किया है, वर्तमान वैश्विक परिवेश में इस बारे में शायद फिर से लोगों को सोचना होगा। दरअसल च्यां द्रेज लिखते हैं कि आधुनिक तकनीक की विध्वंसकारी ताकत जैसे एटमी जंग या जलवायु परिवर्तन का भी सवाल है, जिसमें भयावह इजाफा हुआ है और यह निरंतर बढ़ता जा रहा है। लेखक का यह कहना शायद दुनिया भर में आज एक बीमारी के खौफ के हालिया माहौल के पैदा होने की तस्दीक करता है कि तकनीक की प्रगति के साथ-साथ नैतिक-बोध का भी विकास नहीं हो तो धरती पर मानव जीवन का अस्तित्व ज्यादा दिनों तक कायम नहीं रहने वाला।

सामाजिक व्यवस्था में बदलाव के बारे में च्यां द्रेज लिखते हैं कि जब गांव के सभी बच्चे साथ-साथ किसी अच्छे स्कूल में पढ़ने के लिए जाते हैं तो जाति-व्यवस्था पर चोट होती है। जब महिलाएं घर से बाहर निकलकर मनरेगा जैसे काम के जरिये अपनी कमाई करती हैं तो इसके साथ-साथ पुरुष सत्ता भी कमजोर होती है। किसी भ्रष्ट डीलर की मेहरबानी पर निर्भर रहने की जगह जो समुदाय अपनी खुद की राशन-दुकान चलाते हैं, वे दरअसल स्व-प्रबंधन और स्व-शासन के सिद्धांतों पर चल रहे होते हैं। सूचना के अधिकार ने धीरे-धीरे कुछ ताकत राजसत्ता से छीन ली है और उसे जनता के हाथों में दे दिया है।

जहां तक इस पुस्तक का नाम 'झोलावाला अर्थशास्त्र' रखने की बात है तो इस बारे में लेखक का कहना है कि यह एक जुमला भर है, जिसे उन्होंने पुस्तक के नाम के रूप में चुना है। इसका नाम चुनने की प्रेरणा उन्हें कहां से मिली, इस बारे में वे बताते हैं कि भारत में बहुत से कार्यकर्ता यानी एक्टिविस्ट झोले का इस्तेमाल करते हैं और उनके उपहास के अर्थ में बहुधा 'झोलावाला' शब्द का व्यवहार होता है। उनका कहना है कि व्यावसायिक हितों के अनुकूल चलने वाली सार्वजनिक नीति के आलोचकों को हाशिये पर रखने के लिए इस शब्द का इस्तेमाल किया जाता है।

चंदन श्रीवास्तव ने बहुत सरल भाषा में इसका अनुवाद किया है। देश-समाज से संबंधित आर्थिक विषयों के बारे में सामान्य समझ रखने वाला व्यक्ति भी इसे आसानी से समझ सकता है। यह पुस्तक अर्थशास्त्र के एक नए आयाम से परिचय कराती है।

नदी के सौंदर्य से साक्षात्कार

प्रणव सिरोही

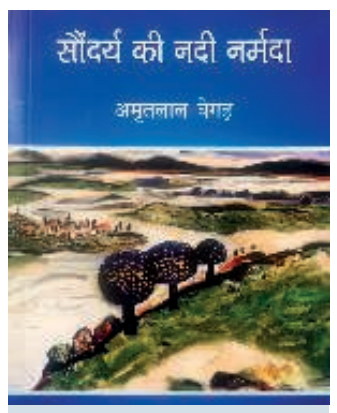

पुस्तक : सौंदर्य की नदी नर्मदा
लेखक : अमृतलाल वेगड़
प्रकाशक : पेंगुइन
मूल्य : 199 रुपये

नदियां मानव सभ्यता का अभिन्न अंग रही हैं, लेकिन भारतीय समाज और संस्कृति में उन्हें केवल जलराशि समाहित करने वाली भौगोलिक इकाइयां नहीं, बल्कि जीवनदायिनी माना जाता है। उनका यही रूप-स्वरूप समय-समय पर अन्वेषकों को आकर्षित करता रहा है। अमृतलाल वेगड़ भी ऐसे ही अन्वेषक रहे हैं जिन्होंने नर्मदा परिक्रमा कर विभिन्न पहलुओं पर उसकी पड़ताल का प्रयास किया। इसका शब्दांकन उन्होंने अपनी किताब 'सौंदर्य की नदी नर्मदा' में बखूबी किया है।

लेखक ने 1977 से 1987 के बीच की गई दस नर्मदा पदयात्राओं का अनुभव साझा किया है। यह वह दौर था जब नदी के इर्दगिर्द आधुनिक विकास से जुड़ी गतिविधियां नहीं थीं। इसे वह स्वीकार भी करते हैं कि मुझे इस बात का संतोष रहेगा कि नर्मदा के उस विलुप्त होते सौंदर्य को मैंने सदा के लिए इन पृष्ठों पर संजोकर रख दिया है। हालांकि वह नदी के भविष्य को लेकर भी उतने ही आशावान हैं जिन्हें वह इन शब्दों में व्यक्त करते हैं-'नर्मदा तो बस नर्मदा ही है। जैसा भव्य उसका अतीत है, वैसा ही उज्ज्वल उसका भविष्य भी।'

नर्मदा के प्रति लेखक का लगाव प्रत्यक्ष दिखता है। यह 2,600 किलोमीटर पदयात्रा के दौरान नदी के कण-कण को समझने, सहेजने और संवारने की उनकी उत्कंठा में स्पष्ट रूप से मुखरित भी होता है। यह यात्रा वृत्तांत महज जलधारा की ही बात नहीं करता, बल्कि उसके समांतर पूरे पारितंत्र पर प्रकाश डालता है जिसमें जीव-जंतु, वनस्पति और मानवीय गतिविधियां शामिल हैं। जबलपुर से मांडला के साथ शुरू हुई उनकी पदयात्रा कोलीयाद से भरूच के पड़ाव पर जाकर पूर्ण होती है जिसमें पाठक को भी सहयात्री बनकर नदी के साथ एकाकार होने की अनुभूति होती है।

चूंकि लेखक मूल रूप से चित्रकार हैं तो इस कृति में साहित्य और चित्र दोनों का सुंदर संगम देखने को मिलता है। उनकी लेखनी में नदी का संपूर्ण स्वरूप निखरकर सामने आया है। यह पुस्तक नर्मदा को समझने की एक नई दृष्टि देती है।

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या सोनिया गांधी का यह कहना सही है कि 21 दिनों का देशव्यापी लॉकडाउन बिना तैयारी के लागू किया गया?

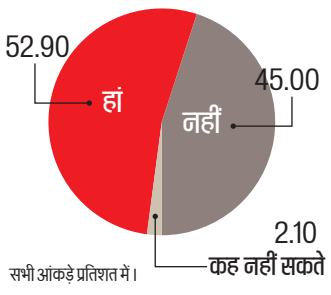

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या प्रधानमंत्री मोदी का उजाले को लेकर किया गया आह्वान कोरोना के खिलाफ लोगों का मनोबल बढ़ाएगा?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

हजरत घर में लॉक हो बैठे-बैठे खायं,
बीबी गर कुछ बोल दे तो उसपे गुर्रायं।
तो उसपे गुर्रायं क्रिया जब दिखलाएंगे,
पक्का मानो आप प्रतिक्रिया भी पाएंगे।
करके दो-दो हाथ न घर में करिए हुज्जत,
बेहतर होगा हाथ बटाओ घर में हजरत!

- ओमप्रकाश तिवारी

संजय मिश्र
स्थानीय संपादक,
नवदुनिया, भोपाल

मध्य प्रदेश डायरी

संकट से निपट रही अधूरी सरकार

लंबे सियासी संग्राम के बाद शिवराज सिंह चौहान मुख्यमंत्री तो बन गए, लेकिन अब तक उनकी सरकार अधूरी है। ज्योतिरादित्य सिंधिया के योगदान से बनी भाजपा की सरकार के वे एकमात्र चेहरे हैं। शपथ लेने के लगभग आधा महीना बीतने बाद भी उनकी कैबिनेट का गठन न हो पाना अपने आप में कई सवाल खड़े कर रहा है। कोरोना संकट से जूझती राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था को सुचारू बनाए रखने के लिए कैबिनेट का होना बहुत ही जरूरी है। राज्य के हित में लिए जाने वाले फैसलों पर कैबिनेट की मुहर संवैधानिक अनिवार्यता भी है। ऐसे में काम चलाने के लिए सरकार को कार्योत्तर अनुमोदन की प्रक्रिया का सहारा लेना पड़ रहा है। यद्यपि मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि लॉकडाउन खत्म होने के बाद वह कैबिनेट का गठन कर लेंगे, पर जो मौजूदा हालात दिख रहे हैं उसमें यह कहना मुश्किल है कि 14 अप्रैल को लॉकडाउन की अवधि बीतते ही परिस्थितियां सामान्य हो जाएंगी। फिलहाल तो मध्य प्रदेश दूसरे राज्यों की तरह ही कोरोना संकट से जूझ रहा है। ऐसे में पूर्ण सरकार का होना बहुत ही आवश्यक है। शिवराज सरकार बन तो गई, लेकिन पूरी व्यवस्था अफसरों के भरोसे ही चल रही है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की सक्रियता, उनके अनुभव और पारदर्शितापूर्ण कार्यशैली भले ही संकट से निपटने में अफसरशाही को दिशा दे रही हो, लेकिन यह भी सच है कि कोई एक व्यक्ति पूरी व्यवस्था पर हमेशा बारीक नजर नहीं रख सकता। प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाएं सुचारू रूप से चलें, कानून व्यवस्था का संकट खड़ा न हो, लॉकडाउन में घरों में रह रहे लोगों को कोई दिक्कत न हो, खाद्य आपूर्ति की व्यवस्था बनी रहे, इसके लिए सघन निगरानी की आवश्यकता है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को योग्य व अनुभवी मंत्रियों की टीम चाहिए, जो कोरोना संकट से निपटने के लिए योजना बनाएं और उसका क्रियान्वयन भी कराएं। निश्चित रूप से शिवराज एक अनुभवी मुख्यमंत्री हैं। वह सभी मोर्चों पर अकेले डटे हुए भी हैं। पुलिस, स्वास्थ्य और सफाई कर्मचारियों का उत्साह बढ़ाने के लिए कोरोना के संक्रमण के खतरे की परवाह किए बगैर उनके बीच पहुंच जाते हैं। उनका हौसला बढ़ाते हैं। छात्र-छात्राओं का हाल जानने के लिए छात्रावासों में पहुंच जाते हैं। प्रतिदिन सारे अफसरों के साथ कोरोना नियंत्रण की समीक्षा करते हैं। जहां अफसर लापरवाही करते हैं, वहां फटकार लगाते हैं और आवश्यकता पड़ी तो उन्हें हटाते भी हैं। उनकी पूरी कोशिश यही है कि कोरोना पर जीत हासिल की जाए। सभी जिलों के कलेक्टरों से बातचीत कर प्रतिदिन का अपडेट लेते हैं, पर यदि कैबिनेट होती तो सरकार की यही कार्यक्षमता कई गुना बढ़ जाती।

कोरोना से निपटने में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का प्रशासनिक अनुभव बहुत काम आएगा। फाइल

कांग्रेस अनायास ही इस बात की खिल्ली नहीं उड़ा रही कि संकट के दौर में भी शिवराज अपनी कैबिनेट का गठन नहीं कर पा रहे हैं। निश्चित रूप से इस मुद्दे पर भाजपा और शिवराज दोनों ही गंभीरता से विचार भी कर रहे होंगे, लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं कि कैबिनेट के गठन में विलंब के पीछे भाजपा क्षत्रपों के बीच की रस्साकसी भी एक कारण हो सकती है। कैबिनेट का गठन न हो पाने का एक बड़ा कारण सिंधिया समर्थकों का समायोजन का पेच भी हो सकता है। उनके साथ भाजपा किस तरह संतुलन बनाती है, यह देखने वाली बात होगी। माना जा रहा है कि शिवराज की कैबिनेट में एक तिहाई से ज्यादा चेहरे सिंधिया समर्थकों के होंगे। उनके 22 समर्थक विधायकों ने कमल नाथ सरकार के खिलाफ हल्ला बोलकर इस्तीफा दिया था। इसके कारण ही कांग्रेस की 15 महीने पुरानी सरकार गिर सकी। यह भी विचारणीय है कि भाजपा जैसे-तैसे सिंधिया के साथ संतुलन बनाकर कैबिनेट का गठन कर लेती है तो भी उसकी दुश्वारियां कम होने वाली नहीं हैं। शिवराज व भाजपा के ऊपर सिंधिया समर्थक पूर्व विधायकों को विधानसभा उपचुनाव में जिताने की जिम्मेदारी भी आने वाली है। 230 सदस्यों वाली मध्य प्रदेश विधानसभा में पहले से ही दो सीटें खाली हैं। इस तरह 24 विधानसभा क्षेत्रों में उपचुनाव होना है। उपचुनाव में जीत का गणित शिवराज और सिंधिया की जोड़ी को ही निकालना है। ज्यादातर 16 सीटें सिंधिया के गढ़ ग्वालियर और चंबल से ही हैं। उपचुनाव में जनता का फैसला सरकार के भविष्य पर मुहर लगाएगा। कांग्रेस को इन सीटों पर कमतर आंकना भाजपा की बड़ी भूल हो सकती है। कांग्रेस इस कोशिश में है कि वह जनता के सामने सिंधिया समर्थकों को सत्ता की खातिर सरकार गिराने और उनके मताधिकार का दुरुपयोग करने का आरोप मढ़े। उपचुनाव में अपने कार्यकर्ताओं, नेताओं को संभालकर रखना भी भाजपा के लिए कम चुनौतीपूर्ण नहीं होगा।

राष्ट्रीय संस्करण
रविवार 5 अप्रैल 2020
दैनिक जागरण
बिजनेस
www.jagran.com

टीडीएस छूट फॉर्म अब 30 जून तक मान्य

नई दिल्ली, प्रेट्र : आयकर विभाग ने करदाताओं को राहत देते हुए चालू वित्त वर्ष के लिए टीडीएस छूट फॉर्म दाखिल करने की समय-सीमा 30 जून तक बढ़ा दी है। कोरोना संकट और लॉकडाउन को देखते हुए विभाग ने कहा है कि व्यक्तिगत करदाता अब वित्त वर्ष की पहली तिमाही के आखिर 30 जून, 2020 तक फॉर्म 15-जी और 15-एच दाखिल कर सकेंगे। ये फॉर्म उन करदाताओं द्वारा दाखिल किए जाते हैं, जिनकी कर-योग्य आय नहीं होती।

आने वाली पीढ़ियां जब मुड़कर देखेंगी, तो दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में हमारी प्रतिबद्धता पर उन्हें गर्व होगा कि हमने हार नहीं मानी। उन्हें पता होना चाहिए हर भारतीय लड़ा और इस लड़ाई में सरकार के साथ कदम मिलाकर खड़ा रहा।

— गौतम अडानी, चेयरमैन अडानी ग्रुप

'कोविड बांड' लाने पर विचार कर रहा केंद्र

योजना ▶ पूंजी जुटाने के लिए एफआरबीएम एक्ट के विशेष प्रावधान का हो सकता है इस्तेमाल

कोरोना वायरस के चलते चौपट हो गया है केंद्र सरकार का राजस्व तंत्र

राजीव कुमार, नई दिल्ली

कोविड-19 ने जिस तरह से केंद्र के राजस्व तंत्र को चौपट किया है उससे सरकार का लगने लगा है कि बगैर भारी-भरकम उधारी के काम नहीं चलेगा। हालात से निपटने के लिए सरकार कोविड बांड का सहारा ले सकती है। इसके लिए फाइनेंशियल रिस्पांसब्लिटी एंड बजट मैनेजमेंट (एफआरबीएम) कानून में संशोधन कर विशेष प्रावधान करने के विकल्प को खंगाला जा रहा है।

वित्त मंत्रालय के अनुमान के मुताबिक चालू वित्त वर्ष (2020-21) में कोविड-19 की वजह से केंद्र और राज्य सरकार को 20 लाख करोड़ का कर्ज लेना पड़ सकता है जबकि वित्त वर्ष 2019-20 में यह रकम 13.5 लाख करोड़ रही थी। इसमें केंद्र की हिस्सेदारी 7.1 लाख करोड़ रही तो सभी राज्यों ने मिलकर 6.4 लाख करोड़ रुपये उधार लिए। चालू वित्त वर्ष में केंद्र ने 7.8 लाख करोड़ रुपये उधार लेने का लक्ष्य रखा है। यानी कि 12.2 लाख करोड़ रुपये सभी राज्य मिलकर उधार लेंगे। जबकि तीन दिन पहले ही केंद्र सरकार ने घोषणा की है कि चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही में सरकार 4.88 लाख करोड़ रुपये का उधार लेगी और इसके लिए सरकार प्रतिभूति जारी करेगी।

विशेषज्ञों का मानना है कि फिलहाल जो बाजार के हालात हैं उनमें सरकारी सिक्युरिटीज या प्रतिभूति खरीदार कम मिलेंगे। ऐसे में, सरकार के सामने उधार लेने का संकट खड़ा हो जाएगा। मंत्रालय सूत्रों के मुताबिक इससे निपटने के लिए सरकार एफआरबीएम एक्ट के विशेष प्रावधान का इस्तेमाल कर सकती है जो आरबीआइ को सरकार की प्रतिभूति खरीदने की इजाजत देता है। प्राकृतिक विपदा या फिलहाल की आपात स्थिति में एफआरबीएम एक्ट सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 2.5-3 फीसद तक के सरकारी घाटे को इस प्रकार की खरीदारी से कवर करने की इजाजत देता है। सरकार इस अतिरिक्त राशि को बजट के बैलेंस-शीट में कोविड बांड के नाम से दिखा सकती है।

विशेषज्ञों के मुताबिक एफआरबीएम एक्ट में रिजर्व बैंक से उधार के नाम पर एक अलग सेक्शन है जिसमें कहा गया है कि सरकार प्राकृतिक आपदा, राष्ट्रीय सुरक्षा, युद्ध, खेती के बर्बाद होने जैसी स्थिति में अगर राजकोषीय घाटे का लक्ष्य हासिल नहीं कर पाती है तो आरबीआइ सरकार की तरफ से जारी प्रतिभूतियों को खरीद सकता है।

सूत्रों के मुताबिक आरबीआइ की तरफ से इस प्रकार की खरीदारी से महंगाई बढ़ने की आशंका रहती है। लेकिन कोविड-19 से उपजी हालत को देखते हुए निकट भविष्य में भी मांग में कमी की समस्या गहराने की आशंका है। ऐसे में महंगाई बढ़ने की संभावना नहीं है। सूत्रों के मुताबिक कोविड19 की अनिश्चितता भरी अवधि में लोगों ने अपनी वित्तीय सुरक्षा के लिए भारी मात्रा में नकदी निकालकर रख ली है। ये लोग भविष्य की चिंता में फिलहाल कम से कम खर्च में अपना काम चलाना चाहते है। इससे भी मांग में बढ़ोतरी नहीं होगी। ऐसे में सरकार के पास ज्यादा उधारी लेने की गुंजाइश रहेगी।

आइएमएफ ने जताई सबसे बड़ी मंदी की आशंका

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

आइएमएफ प्रमुख बोले, जिस तरह से आर्थिक गतिविधियां ठप हुई हैं, वैसा पहले कभी नहीं हुआ

तकरीबन हर देश में महामारी के तौर पर दस्तक दे चुके कोरोना वायरस की वजह से दुनिया अपने इतिहास की सबसे बड़ी मंदी की तरफ बढ़ चुकी नजर आ रही है। विश्व की आधी आबादी घरों में बंद है और अधिकांश बड़ी आर्थिक शक्तियों में औद्योगिक गतिविधियां एक के बाद एक ठप होती जा रही हैं। इस हालात के बीच अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आइएमएफ) का मानना है कि सबसे बड़ी मंदी की शुरुआत हो चुकी है।

आइएमएफ की एमडी क्रिस्टीना जॉर्जिवा के मुताबिक ऐसे हालात पहले कभी नहीं देखे गए जब इतने बड़े पैमाने पर औद्योगिक कल-कारखाने बंद हुए हों। यह वर्ष 2008 की वैश्विक मंदी से भी ज्यादा खतरनाक हालात है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के साथ मिलकर कोरोना वायरस के वैश्विक हालात पर अंतरराष्ट्रीय मीडिया को संबोधित करते हुए जिस तरह की आशंका आइएमएफ एमडी ने जताई है, वह बेहद गंभीर है। हालात को देखते हुए अब विश्व बैंक, आइएमएफ व एशियाई विकास बैंक (एडीबी) जैसे संस्थानों पर सभी देशों की नजर है।

आइएमएफ ने कहा है कि उसने विभिन्न देशों की मदद के लिए एक लाख करोड़ डॉलर यानी करीब 75 लाख करोड़ रुपये का फंड बनाया है। इसका इस्तेमाल विभिन्न देशों को आपातकालीन हालात में वित्तीय मदद के लिए जाएगा। अभी तक 90 देशों ने आर्थिक मदद की गुहार भी लगा दी है जो बताता है कि इन देशों को समझ आ गया है कि वे बगैर बाहरी मदद के हालात नहीं संभाल पाएंगे। लेकिन आइएमएफ ने सभी देशों को आग्रह किया है कि वे अपने लिए प्राथमिकता तय करें। खासतौर पर विकासशील देशों के लिए सबसे जरूरी यह है कि वे अपने हेल्थ इन्फ्रास्ट्रक्चर को सुरक्षित रखें ताकि इस महामारी से लड़ने में उन्हें मदद मिल सके। आइएमएफ ने आपातकालीन हालात को देखते हुए ज्यादा प्रभावित देशों के आवेदन पर तत्काल फैसला करने की नीति भी अपनाई है ताकि हालात संभाला जा सके।

भारत भी अंतरराष्ट्रीय वित्त एजेंसियों से अतिरिक्त मदद लेने की कतार में है। भारत पिछले कुछ वर्षों से हर तरह के विदेशी कर्ज को कम करने में लगा हुआ था, लेकिन अब जरूरत बड़ी है। दो दिन पहले ही विश्व बैंक ने भारत को एकअरब डॉलर यानी करीब 7,500 करोड़ रुपये की अतिरिक्त मदद देने का एलान किया है। अब भारत आइएमएफ समेत कुछ दूसरी वित्तीय एजेंसियों से 600 करोड़ डॉलर यानी करीब 45,000 करोड़ रुपये की और मदद लेने पर विचार कर रहा है। इस समूची राशि का इस्तेमाल कोविड-19 महामारी से लड़ने में ही किया जाएगा। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मिलने वाली बड़ी रकम का इस्तेमाल भारत अगले दो महीनों के भीतर कोरोना वायरस की टेस्टिंग सुविधा पर खर्च करना चाहता है। विदेशों से टेस्टिंग किट मंगवाने के साथ ही भारत को वेंटिलेटर्स आयात करने में बड़ी राशि खर्च करनी होगी।

कृषि क्षेत्र के लिए केंद्र ने की कुछ और राहत की घोषणा

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कृषि मशीनरी, कल-पुर्जों की दुकानें व हाईवे के गैराज भी मुक्त

खेती-किसानी को लॉकडाउन की मुश्किलों से बचाने के लिए सरकार ने कुछ और राहत देने की घोषणा की है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने कृषि मशीनरी की अंतरराज्यीय आवाजाही की छूट तो पहले ही दे दी थी, लेकिन उससे जुड़े उद्यम के चालू न होने से इसका कोई फायदा नहीं मिल पा रहा था। इसी के चलते अब कृषि मशीनरी और उनके कल-पुर्जों की दुकानें भी लॉकडाउन से मुक्त रहेंगी।

रबी फसलें पककर तैयार हैं, जिनकी कटाई बहुत जरूरी हो गई है। इसमें किसी भी तरह की देरी किसानों के जीवनयापन के लिए मुश्किलें खड़ी कर सकती है। सरकार ने इसी के मद्देनजर हाईवे पर स्थित पेट्रोल पंपों के साथ वर्क-स्टेशन को भी खोलने की अनुमति दे दी है। चाय बागानों में भी 50 फीसद तक कर्मियों को काम पर बुलाया जा सकता है। इस दौरान सामाजिक दूरी और स्वच्छता का पूरा ध्यान रखने की हिदायत भी दी गई है।

पोल्ट्री फार्म मालिकों और मछली पालकों की सुविधा के लिए उन्हें फीड अथवा कच्चा माल की ढुलाई की छूट दी गई है। पशु चारा, मुर्गी चारा और मछलियों का चारा उत्पादन करने वाली इकाइयों को पहले से ही छूट है। लेकिन इसमें कई तरह की कठिनाइयां पेश आ रही हैं। अनमोल फीड के चेयरमैन अमित सरावगी ने लॉकडाउन से पैदा हुए हालात के बारे में बताया कि केंद्र व राज्य प्रशासन के आदेश के बावजूद स्थानीय स्तर पर कई तरह की मुश्किलें पेश आ रही हैं। सामान की ढुलाई करने वाले ट्रकों का अभाव है। इसकी मूल वजह हाईवे पर पेट्रोल पंप, गैराज और लाइन वाले ढाबों पर पाबंदी है। पंप और गैराज तो खोल दिए गए, लेकिन ट्रक ड्राइवरों के लिए राह में भोजन की गंभीर किल्लत होगी।

आपदा की घड़ी में 'घड़ी' भी साथ

नई दिल्ली, (वि.) : आरएसपीएल समूह (घड़ी डिटर्जेंट ग्रुप) ने कोविड-19 से उपजी विषम परिस्थिति मे अपने कॉरपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी कार्यक्रम के तहत पीएम केयर्स फंड में 25 लाख रुपये की धनराशि का योगदान किया है। इसके साथ ही समूह ने मुख्यमंत्री पीड़ित सहायता कोष में भी 25 लाख रुपये की राशि दी है। उपरोक्त धनरशि के अतिरिक्त घड़ी समूह ने कानपुर कलेक्ट्रेट द्वारा स्थापित सद्भावना समिति को भी पांच लाख रुपये की धनराशि दी है। आरएसपीएल समूह ने कोरोना से मुकाबले तथा रोकथाम के लिए विभिन्न अधिकरणों और अन्य संगठनों के माध्यम से समय-समय पर मास्क, दूध, लंच पैकेट, खाद्यान्न, डिटर्जेंट केक, डिटर्जेंट पाउडर व स्नान साबुन भी देश में विभिन्न स्थानों पर वितरित किए हैं।

तीन महीने छूट की कीमत 11 महीने तक अधिक ईएमआइ

बृजेश दुबे, कानपुर

ईएमआइ बाउंस हो तो पेनाल्टी के साथ चुकाने के लिए 90 दिन का समय देते हैं बैंक

तब मूलधन नहीं, ईएमआइ राशि पर देना होता है ब्याज, इस पर दो फीसद लगती है पेनाल्टी

कोरोना के कहर के बीच लॉकडाउन के दौरान ईएमआइ जमा करने से दी गई तीन महीने की छूट यानी मोरेटोरियम के एवज में बैंक अपने खुदरा ऋण खाताधारकों से डेढ़ से 11 महीने तक की अतिरिक्त ईएमआइ वसूल करेंगे। दूसरी तरफ कहें, ऋण देने वाले खाताधारक अगर किस्तें नहीं चुका पा रहे हैं तो उन्हें अपनी साख बचाने के लिए ईएमआइ की कई गुना रकम चुकानी होगी। ऐसा मोरेटोरियम में किए गए प्रावधान और पुराने नियम को दरकिनार करने के कारण होगा।

लॉकडाउन को देखते हुए भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) ने ईएमआइ स्थगन (मोरेटोरियम) का मौका दिया यानी पहली मार्च से 31 मई, 2020 के बीच किस्तें नहीं देने पर खाता एनपीए नहीं होगा। लेकिन, इस अवधि के दौरान ब्याज देना होगा। यह ब्याज ईएमआइ पर न लगकर मूलधन पर लगेगा। ब्याज की दर वही होगी, जो ऋण लेने के समय तय हुई थी। इसकी एकमुश्त अदायगी भी कर सकते हैं और मूलधन में जुड़वाकर ईएमआइ के रूप में भी दे सकते हैं। यानी मोरेटोरियम अवधि में लगे ब्याज पर भी ब्याज देना होगा, जिसकी लोन जितनी लंबी अवधि का बाकी होगा, उसे उतनी अधिक रकम चुकानी होगी।

ऐसे समझें मोरेटोरियम : 20 लाख रुपये का ऋण 20 साल यानी 240 महीने के लिए 8.4 फीसद वार्षिक ब्याज की दर पर लिया गया। ईएमआइ करीब 17,230 रुपये हुई। 12 किस्तें दी जा चुकी हैं। अभी 19 साल की किस्तें बाकी हैं। मूलधन में करीब 46 हजार रुपये घटे हैं यानी 19.54 लाख रुपये का मूल कर्ज बाकी है। मोरेटोरियम का लाभ लेने पर मार्च से मई 2020 तक की किस्तें 241वें, 242वें और 243वें महीने जमा करनी होंगी लेकिन, मूलधन 19.54 लाख रुपये पर 8.40 फीसद की दर से तीन महीने का 41,034 रुपये ब्याज देना होगा। एकमुश्त ब्याज देते हैं तो जून 2020 में जमा करना होगा और यह ईएमआइ का करीब ढाई गुना हुआ।

अगर इस मूलधन में जुड़वाते हैं इस ब्याज पर भी 8.40 फीसद की दर से 19 साल का ब्याज लगेगा, जो 82,308 रुपये होगा। यानी करीब पांच ईएमआइ अधिक है। समान ब्याज दर पर 30 साल के लिए 20 लाख रुपये के ऋण पर ईएमआइ 15,237 रुपये होगी।

एक साल की किस्त दी है तो करीब 29.65 लाख रुपये मूलधन बाकी होगा। इस पर तीन माह का ब्याज 62,265 रुपये होगा। इसे किस्तों में देने पर करीब 1,64,952 रुपये देने होंगे। यानी करीब 11 ईएमआइ अधिक देनी होगी।

> ब्याज पर ब्याज ग्राहकों के लिए बोझ बन रहा है। इससे किस्तों की संख्या काफी बढ़ रही है। अगर किसी का नया ऋण है तो उसके लिए मोरेटोरियम का लाभ लेना काफी महंगा पड़ेगा। सरकार ब्याज पर ब्याज न लेकर केवल ब्याज को किस्त बनाकर लोन अवधि में जोड़ सकती है। इससे भी ग्राहकों को काफी राहत मिलेगी। उन्हें लोन चुकाने का पूरा समय मिलेगा।
>
> **-राजेंद्र अवस्थी, सचिव नेशनल कन्फेडरेशन ऑफ बैंक यूनियन**

...ऐसे लेते ब्याज तो मिलती बहुत राहत

पंजाब नेशनल बैंक के एक वरिष्ठ अधिकारी मानते हैं कि मोरेटोरियम पीरियड खाताधारकों को महंगी पड़ेगी। पुरानी व्यवस्था का ध्यान रखते तो खाताधारकों को बहुत सहूलियत मिल जाती है। सामान्य व्यवस्था में अगर किसी खाताधारक की ईएमआइ बाउंस हो जाती है तो वह पेनाल्टी इंटरेस्ट देकर खाता चालू कर सकता है। ऐसा करने के लिए उसके पास 89 दिन का समय होता है। इस अवधि में किस्तें चुकाने पर उस पर केवल ईएमआइ पर पेनाल्टी इंटरेस्ट देना होता है। अभी एकमुश्त लिया जा रहा ब्याज ढाई से चार किस्त के बराबर पड़ रहा है। अगर पेनाल्टी इंटरेस्ट लेते तो इतनी चोट नहीं पड़ती है।

डिजिटल तरीके नहीं अपनाने वालों के लिए यह सच में बुरा वक्त है

पिछले दिनों मैं ट्विटर पर एक पोल देख रहा था। इसमें पूछा गया था कि आपकी कंपनी के काम करने के तौर-तरीकों को डिजिटल की ओर कौन ले जा रहा है? उसके तीन विकल्प थे - पहला सीईओ यानी मुख्य कार्यकारी अधिकारी, दूसरा सीटीओ यानी मुख्य तकनीक अधिकारी और तीसरा कोरोना। सही जवाब के लिए कोई प्रोत्साहन या अंक नहीं रखा गया था। हालांकि पिछले कुछ दिनों के दौरान लोगों की यह सहज और पारंपरिक सोच बन गई है कि यह कोरोना महामारी लोगों और कंपनियों को कामकाज और मेलजोल के लिए स्थायी रूप से डिजिटल तौर-तरीके अपनाने को मजबूर कर देगी।

बहरहाल, यह भविष्य की बात है और आजकल के दौर में भविष्य के बारे में ज्यादा देर तक सोचना संभव नहीं है। फिलहाल तो एक विशेष मामला यह है कि बचतकर्ताओं और निवेशकों का एक वर्ग ऐसा भी है जो अब तक वित्तीय सेवाओं का भौतिक तरीकों और माध्यमों से ही लाभ उठा रहा था। लेकिन इन बचतकर्ताओं और निवेशकों को पिछले कुछ दिनों के दौरान वित्तीय सेवाओं का लाभ लेने के लिए रातोंरात डिजिटल मोड पर आना पड़ा है। पिछले हफ्ते मुझे कुछ ई-मेल मिले। ये सभी वरिष्ठ नागरिकों के मेल थे। वे सब के सब इस बात को लेकर चिंतित थे कि म्यूचुअल फंड निवेश भुनाने की उनकी क्षमता पर तीन हफ्तों के इस लॉकडाउन का क्या और कितना असर होगा। ये सभी बुजुर्ग अपना म्यूचुअल फंड निवेश भुनाने के लिए भुगतान फॉर्म भरने के आदी हैं। फॉर्म भरने के बाद वे उस फॉर्म को अपने वितरक के कर्मचारी को दे देते थे या फिर म्यूचुअल फंड कंपनी के स्थानीय दफ्तर या सीएएमएस जैसे किसी रजिस्ट्रार को सुपुर्द कर देते थे।

वर्तमान हालात में इस तरह के सभी विकल्प बंद हैं। या अगर खुले भी हैं तो सिर्फ और सिर्फ उनके लिए जो अपने बैंक के माध्यम से इस तरह का निवेश करते रहे हैं। इससे भी आगे की बात यह है कि वरिष्ठ नागरिकों के कोरोना के संक्रमण में आ जाने का खतरा ज्यादा है। ऐसे में उनका बाहर जाना और निवेश का भौतिक रूप से लेखाजोखा रखने का कोई मतलब नहीं बनता है। इसे देखते हुए म्यूचुअल फंड उद्योग और रजिस्ट्रार समुदाय ने मिलकर एक सिस्टम तैयार किया है। इस सिस्टम के माध्यम से ऐसे बुजुर्ग भौतिक मेलजोल के बिना अपने म्यूचुअल फंड को भुना सकते हैं। इसके लिए उनका मोबाइल नंबर म्यूचुअल फंड कंपनी में पंजीकृत होना जरूरी है। अब क्योंकि म्यूचुअल फंड के तहत निकासी की रकम सिर्फ उसी बैंक खाते में जाती है जिसके माध्यम से निवेश किया गया था, तो ऐसे में इस तरह के हस्तांतरण में कोई जोखिम नहीं होना चाहिए।

धीरेंद्र कुमार, सीईओ
वैल्यू रिसर्च

बोनस

लॉकडाउन की इस अवधि में जब हर कोई घर बैठकर काम कर रहा है और बाहर निकलना खतरे से खाली नहीं, तब बहुत लोगों को यह लगने लगा है कि यह कोरोना महामारी कामकाज और मेलजोल के तौर-तरीकों को स्थायी रूप से डिजिटल में बदल देगी। जिन निवेशकों ने निकासी और भुगतान के लिए डिजिटल तरीके पहले से अपनाए हैं, उन्हें मौजूदा माहौल में कोई दिक्कत नहीं हो रही है। लेकिन एक बड़ा वर्ग आज भी निवेश और भुगतान के लिए कागज-कलम पर पूरी तरह निर्भर है। सच यह है कि जब महामारी का यह दौर गुजर जाएगा, तब एक बड़ा वर्ग ऐसा उभरकर सामने आएगा, जो निकासी फॉर्म भरकर रकम निकालने या चेकबुक के दौर में वापस नहीं जाना चाहेगा। यही समय की मांग भी है।

मैं नहीं जानता कि महीनेभर के भुगतान का आंकड़ा क्या कहने वाला है। लेकिन यह बेहद उत्साहजनक बात है कि बहुत बड़े वैश्विक संकट और बेहद अस्थिर शेयर बाजारों के बीच भी सारा सिस्टम अच्छा चल रहा है और बचतकर्ताओं को जब जैसी जरूरत हो, वे अपने निवेश की निकासी कर पा रहे हैं। जब शेयर बाजारों के भरभराने की शुरुआत हुई थी, तो कई लोगों से ऑनलाइन कहते सुना है कि बाजारों को कुछ समय के लिए बंद कर देना चाहिए क्योंकि निवेशकों को बहुत नुकसान हो रहा है। हालांकि 'कुछ ही मिनटों में या घंटों में निवेशकों के इतने पैसे डूब गए' जैसी सुर्खियों से मीडिया भी इस तरह के डर को लगातार हवा देता था।

इस तरह के सलाह की एक प्रतिक्रिया यह हो सकती थी कि बाजार थोड़े वक्त के लिए बंद कर दिए जाते। लेकिन अगर ऐसा होता तो कोई भी म्यूचुअल फंड्स से या शेयरों से अपनी रकम की निकासी नहीं कर पाता। उस स्थिति में बाजार में सही मायनों में हाहाकार मच जाता। उस स्थिति में आपको पता भी नहीं चलता कि आप अपने निवेश का 10 प्रतिशत गंवा बैठे हैं या 99 प्रतिशत। सच कहें तो बाजारों का बंद किया जाना इस मायने में सबसे बड़ी संभावित गलती होता और शुक्र है कि बाजार बंद कर देने की सलाह को किसी ने गंभीरता से नहीं लिया। मैं समझता हूं कि बाजार बंद करने की सलाह केवल वैसे लोग दे रहे थे जिनका शेयर बाजारों से कोई लेनादेना नहीं था या जो सिर्फ एक दिन में चांदी काटकर रातोंरात बाजार से गायब हो जाने वाले वर्ग में से थे। वित्तीय बाजारों का काम निवेश का मूल्य और तरलता बढ़ाना है, भले ही परिस्थितियां कैसी भी क्यों न हो।

ऐसा कहने का मेरा मकसद यह है कि ज्यादा बड़ा निवेश भुनाने के बारे में बचतकर्ताओं को सतर्क रहना चाहिए। जैसा कि मैंने पहले भी लिखा है, बाजार के उतार-चढ़ाव से इसका सही-सही अंदाजा कतई नहीं लगाया जा सकता है कि मध्यम या लंबी अवधि में इस महामारी का क्या-क्या असर होने वाला है। शेयर बाजारों के लंबे उतार-चढ़ाव असल में यही दिखाते हैं कि उस असर की भविष्यवाणी संभव नहीं। इसमें कोई शक नहीं कि निकट भविष्य में बहुत बड़ी मंदी आने वाली है। लेकिन जब चीजें थोड़ी साफ और स्पष्ट होंगी तब हम एक बार फिर शेयर बाजारों में जबर्दस्त खरीदारी की स्थिति देखेंगे क्योंकि उस वक्त तक हम शायद गिरावट की सीमा पर होंगे। हालांकि इतिहास खुद को संपूर्ण रूप से नहीं दोहराता, लेकिन अतीत की कुछ पद्धतियां जरूर थोड़े-बहुत अंतर के साथ दोहराती दिखाई देती हैं।

बहरहाल, वापस वहीं चलते हैं जहां से हमने बात शुरू की थी। सच यह है कि जिन निवेशकों ने खरीद-फरोख्त और भुगतान-निकासी का डिजिटल तरीका अपना लिया है, वे औरों के मुकाबले वर्तमान परिस्थिति में खुद को ज्यादा अनुकूल स्थितियों में हैं। यकीन मानिए, जब यह दौर गुजर जाएगा, उसके बाद हममें से कोई भी कागज के फॉर्म और चेकबुक के पुराने तरीकों की ओर लौटना नहीं चाहेगा।

कश्मीर में भीषण मुठभेड़ में चार आतंकी ढेर

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

हिजबुल मुजाहिदीन से जुड़े थे चारों, सेना के दो जवान जख्मी हुए

पिछले एक पखवाड़े में चार लोगों की हत्या कर चुके थे ये आतंकी

दक्षिण कश्मीर के कुलगाम में मुठभेड़ में हिजबुल मुजाहिदीन के चार आतंकी मारे गए। इसमें दो सैन्यकर्मी जख्मी हुए हैं। मारे गए चारों आतंकी कुलगाम में आतंक का पर्याय बनते जा रहे थे। इन्होंने ही बीते पखवाड़े में कुलगाम में चार नागरिकों को मौत के घाट उतारा था। मारे गए आतंकियों में 17 दिन पहले ही आतंकी बनने वाला वकार फारुक भी शामिल है।

पुलिस महानिदेशक दिलबाग सिंह ने बताया कि मारे गए सभी स्थानीय थे। हमारे अधिकारियों ने इन आतंकियों को कई बार सरेंडर करने का मौका दिया, लेकिन इन्हें फायरिंग जारी रखी। दरअसल, शुक्रवार की रात को पुलिस को अपने तंत्र से पता चला कि बीते एक पखवाड़े में चार नागरिकों की हत्या में लिप्त आतंकियों का एक दल खर-बटपोरा इलाके में अपने किसी संपर्क सूत्र के पास आया है। पुलिस के विशेष अभियान दल ने उसी समय सेना की 34 आरआर और सीआरपीएफ के जवानों के साथ गांव की घेराबंदी आधी रात के बाद ही शुरू कर दी। सुबह साढ़े पांच बजे जवानों ने जैसे ही गांव में घर-घर तलाशी शुरू की तो एक मकान मे छिपे आतंकियों ने फायरिंग करते हुए भागने का प्रयास किया। इस पर जवानों ने जवाबी कार्रवाई की। इसके साथ ही आतंकी ठिकाना बने मकान को चारों तरफ से घेरते हुए आतंकियों को सरेंडर करने के लिए कहा। इसमें स्थानीय लोगों का भी सहयोग लिया। इसके बाद भी वह फायरिंग करते रहे। तब जवानों ने आतंकी ठिकाना बने मकान के साथ सटे अन्य मकानों में रहने वालों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया। इसके बाद आतंकियों से भीषण मुठभेड़ शुरू हो गई।

ये हैं मारे गए आतंकी

मारे गए आतंकियों में एजाज अहमद उर्फ मूसा निवासी चिम्मर डीएचपोरा कुलगाम, शाहिद अहमद मलिक निवासी खुल-डीएचपोरा कुलगाम, वकार फारुक निवासी एचसी कुलगाम और स्थानीय निवासी मोहम्मद अशरफ मलिक उर्फ सद्दाम शामिल हैं। मुठभेड़ स्थल से एक असॉल्ट राइफल, दो एके मैगजीन, एक एसएलआर राइफल, एक इंसास राइफल, एक पिस्तौल व अन्य सामान भी बरामद किया है। चारों के शवों को उनके परिजनों के हवाले कर शुक्रवार की देर शाम को दफना दिया गया।

चौथे आतंकी को मारने के दौरान दो जवान जख्मी

तीन आतंकियों के मारे जाने के बाद करीब 20 मिनट तक जब कोई दूसरी गोली नहीं चली तो जवानों ने मकान में दाखिल होकर उनके शव उठाने का प्रयास किया। इसी दौरान वहां छिपे चौथे आतंकी ने ग्रेनेड फेंका और असॉल्ट राइफल से फायरिंग कर दी। इससे दो सैन्यकर्मी घायल हो गए। उन्हें उसी समय अस्पताल पहुंचाया गया। साथ ही चौथे आतंकी को मार गिराने का अभियान शुरू कर दिया गया। सुबह 11 बजे चौथा आतंकी भी मारा गया। मुठभेड़ के दौरान लगी आग में आतंकी ठिकाना बना मकान पूरी तरह तबाह हो गया। उसके साथ सटे दो अन्य मकानों को भी क्षति पहुंची है।

साप्ताहिक राशिफल

रविवार 5 अप्रैल, 2020 से शनिवार 11 अप्रैल, 2020 तक

पं. बी. बी. शास्त्री 'देवेश'

मेष (चू,चे,चो,ला,ली,लू,ले,लो,आ)
व्यापार, नौकरी, उद्योग कार्य में प्रगति, अर्थ साधन में प्रयास, कार्य क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा, धन निवेश में सावधानी, विदेश से कार्य, पारिवारिक सुख साधन, संतान से अनबन, चयन में सफलता, वाद-विवाद से बचें, धर्म में रुचि, वाहन में सावधानी, राज्य पक्ष से लाभ, शुभ अंक 5

वृष (इ,ऊ,ए,ओ,पा,वी,वू,वे,वो)
धनागम में प्रयास, पूंजी निवेश में सावधानी, विदेश कार्य में देरी, कार्य शैली में परिवर्तन करें, साधनों की वृद्धि, निर्माण एवं वाहन योग, अध्ययन में अवरोध, शत्रु पक्ष से सावधान, जीवन साथी का मिलन, धर्म में रुचि, यंत्र स्थापन, व्यय पर नियंत्रण, शुभ अंक 6

मिथुन (का,की,कू,घ,ड,छ,के,को,हा)
व्यापार, नौकरी, उद्योग कार्य में सहयोग से सफलता, धनागम में प्रयास, धन निवेश में सावधानी, वाहन का योग, संतान से सहयोग, मित्रों से सावधान, दांपत्य में सुख, धर्म में रुचि, राजनीतिक अपयश, राज्य पक्ष से सहयोग, व्यय अधिक, शुभ अंक 7

कर्क (ही,हू,हे,हो,डा,डी,डू,डे,डो)
धनागम अच्छा, दिनचर्या व्यस्ततम, सदस्य के प्रति चिंता, भौतिक साधनों की पूर्ति, चयन में सफलता, मित्रों से सहयोग, कुसंग से बचें, त्वचा विकार योग, संबंधों से संतुष्टि, जीवन साथी का मिलन, अनुबंध की प्राप्ति, राज्य पक्ष से सावधान, व्यय अधिक, शुभ अंक 1

सिंह (मा,मी,मू,मे,मो,टा,टी,टू,टे)
अर्थ साधन ठीक, साहस की वृद्धि, वाणी पर संयम रखें, विशेष व्यक्ति के सहयोग, वाहन योग, संतान की सफलता, अध्ययन में एकाग्रता, खानपान पर ध्यान रखें, जीवन साथी का मिलन, वाहन में सावधानी, कार्य से सावधानी, अधिकारी से अनबन, व्यय अधिक, शुभ अंक 2

कन्या (टो,पा,पी,पू,ष,ण,ठ,पे,पो)
धनागम अच्छा, आत्मविश्वास की वृद्धि, धन निवेश में सावधानी, कार्य क्षेत्र में विस्तार योजना, शिक्षा में रुचि, चयन में सफलता, जीवन साथी का चयन, प्रणय में मधुरता, संपूर्ति का अनुबंध, राज्य पक्ष में सावधान, राजनीतिक प्रयास में सफलता, शुभ अंक 2

तुला (रा,री,रू,रे,रो,ता,ती,तू,ते)
व्यापार, नौकरी, उद्योग कार्य में प्रगति, अर्थ साधन में सुधार, विदेश कार्य में देरी, भावुकता पर नियंत्रण रखें, सजावट एवं वाहन योग, शिक्षा में रुचि, व्यर्थ के कार्य से बचें, ससुराल से लाभ, प्रणय में मधुरता, रक्षा साधन कार्य में प्रगति, राज्य पक्ष से सावधान, शुभ अंक 4

वृश्चिक (तो,ना,नी,नू,ने,नो,या,यी,यू)
अर्थ साधन अच्छा, कार्य शैली में सुधार करें, विशेष व्यक्ति से लाभ, विदेश कार्य में देरी, चिंता का समाधान, भवन निर्माण-सजावट योग, शिक्षा में रुचि, चयन में सफलता, शत्रु पक्ष प्रभावी, व्यर्थ के कार्यों सें बचें, जीवन साथी का मिलन, धर्म में रुचि, राज्य पक्ष से सावधान, शुभ अंक 4

धनु (ये,यो,भा,भी,भू,धा,फा,ढा,भे)
धनागम अच्छा, नए कार्य की योजना, विदेश समाचार, मानसिक असंतोष, भूमि-भवन कार्य में विलंब, अध्ययन में एकाग्रता, शत्रु पक्ष प्रभावी, कुसंग से बचें, दांपत्य में सुख, वाहन में सावधानी, महत्वकांक्षी की पूर्ति, राजनीति में प्रयास सार्थक, व्यय अधिक, शुभ अंक 5

मकर (भो,जा,ज,खी,खू,खे,खो,गा,गी)
व्यापार, नौकरी, उद्योग कार्य में सफलता, धनागम में प्रयास, विदेश कार्य में प्रयास, साझेदारी में सावधानी, धन के आवागमन में सावधानी, चिंता चयन में सफलता, सिरदर्द-बुखार का योग, प्रणय में सुख, धर्म में रुचि, शुभ अंक 5

कुम्भ (गू,गे,गो,सा,सी,सू,से,सा,दा)
व्यापार, नौकरी, उद्योग कार्य में सहयोग से सफलता, अर्थ साधन में प्रयास, निर्णय सलाह से करें, साझेदारी में सावधानी, संतान से सहयोग, अध्ययन में रुचि, चयन में सफलता, मित्रों से सहयोग दांपत्य में सुख, धर्म में रुचि, व्यय अधिक, शुभ अंक 6

मीन (दी,दू,थ,झ,ञ,दे,दो,चा,ची)
अर्थ साधन में सुधार, धन के आवागमन में सावधानी, व्यापारिक क्षेत्र में संपर्क, प्रतिस्पर्धा का योग, मानसिक चिंता, संतान से सहयोग, चयन में प्रयास, अध्ययन में रुचि, खान-पान पर ध्यान दें, दांपत्य में सुख, अनुबंध की प्राप्ति, व्यय अधिक, शुभ अंक 7

63,913 लोगों की दुनिया में कोरोना के संक्रमण से मौत हो चुकी है। अकेले यूरोप में 44,132 लोगों की जान गई है। यूरोप महाद्वीप में दो देश इटली और स्पेन सर्वाधिक प्रभावित हैं। अकेले 25 हजार से ज्यादा मौतें इन्हीं देशों में हुई हैं।

अमेरिका में डेढ़ हजार की मौत, ट्रंप बोले–युद्ध जैसे हालात

कोरोना का कहर ▸ अमेरिकियों को मास्क पहनने की दी सलाह, पर राष्ट्रपति ने खुद किया परहेज

वैश्विक महामारी से मुकाबले के लिए अमेरिकी सेना की बढ़ाई गई भूमिका

▸ बीते 24 घंटे में 33 हजार नए मामले आने से आंकड़ा पौने तीन लाख के पार

वाशिंगटन स्थित व्हाइट हाउस में कोरोना वायरस टास्क फोर्स की दैनिक ब्रीफिंग के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप। रायटर

वाशिंगटन, एजेंसियां : कोरोना महामारी की चपेट में आए अमेरिका में हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने माना कि उनके देश में युद्ध जैसे हालात हो गए हैं। इस स्थिति से मुकाबले के लिए अमेरिकी सेना की भूमिका बढ़ाई जा रही है। उन्होंने अमेरिकियों को मास्क पहनने की सलाह दी, लेकिन खुद इसे पहनने से परहेज किया। अमेरिका में कोरोना वायरस से संक्रमित होने वाले लोगों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हो रही है। बीते 24 घंटे में ही 33 हजार से ज्यादा नए मामले सामने आने से पीड़ितों का आंकड़ा पौने तीन लाख के पार पहुंच गया है। जबकि एक दिन में रिकॉर्ड 1,500 से अधिक पीड़ितों के दम तोड़ने से मरने वालों की संख्या करीब साढ़े सात हजार हो गई है।

ट्रंप ने शुक्रवार को व्हाइट हाउस में पत्रकारों से बातचीत में कहा, 'हम अपने जवाबी प्रयास में सशस्त्र बलों की भूमिका का विस्तार कर रहे हैं, क्योंकि एक जंग जीतने के लिए अमेरिकी सेना से ज्यादा किसी की बेहतर तैयारी नहीं है। हम एक युद्ध में हैं। अदृश्य दुश्मन।' उन्होंने इस जंग में न्यूयॉर्क को हॉटस्पाट करार देते हुए कहा, 'हमारा दिल न्यूयॉर्क के लोगों के लिए सहानुभूति से भरा हुआ है, क्योंकि वे महामारी के सबसे बुरे परिणाम का सामना कर रहे हैं। लुसियाना, मिशिगन और न्यूजर्सी भी ज्यादा प्रभावित हैं।' राष्ट्रपति ने अमेरिकी हेल्थ एजेंसी सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन (सीडीसी) का हवाला देते हुए लोगों से घर पर बने कपड़े का मास्क पहनने और चिकित्साकर्मियों के लिए मेडिकल मास्क की उपलब्धता बनाए रखने का आग्रह किया। हालांकि खुद मास्क पहनने के सवाल पर ट्रंप ने कहा, 'मैं खुद पहनना नहीं चाहता। यह एक सलाह है।' कोरोना महामारी से मुकाबले के लिए गठित व्हाइट हाउस के टास्क फोर्स के कई सदस्यों ने यह संभावना जताई है कि अमेरिका में यह खतरनाक बीमारी अगले दस दिनों में अपने चरम पर होगी।

अस्थायी अस्पतालों का निर्माण कर रही सेना : ट्रंप ने बताया कि आर्मी कोर ऑफ इंजीनियर्स ने अमेरिका के सभी 50 राज्यों में 100 ज्यादा सुविधा केंद्रों को अस्पताल के लिए निर्धारित किया है। वे न्यूयॉर्क, न्यूजर्सी, मिशिगन, पेंसिल्वेनिया, एरिजोना, कैलिफोर्निया, कोलोराडो, फ्लोरिडा, इलिनोइस, न्यू मैक्सिको, वाशिंगटन और ओहियो में तेज गति से अस्थायी अस्पतालों का निर्माण कर रहे हैं।

मलेरिया रोधी दवा के आ रहे अच्छे नतीजे : ट्रंप ने कहा कि मलेरिया के इलाज में दशकों से इस्तेमाल की जा रही हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन दवा के कोरोना रोगियों के इलाज में अच्छे नतीजे आ रहे हैं। उन्होंने कहा, 'हम वायरस के इलाज और रोकथाम में हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन और दूसरे उपचारों के प्रभाव का निरंतर अध्ययन कर रहे हैं और अपने नतीजों के बारे में पूरी जानकारी देंगे।' हालांकि व्हाइट हाउस टास्क फोर्स के एक वरिष्ठ सदस्य ने अभी किसी नतीजे पर पहुंचने को लेकर आगाह किया है, क्योंकि इस संबंध में अभी परीक्षण चल रहे हैं।

न्यूयॉर्क में एक लाख से ज्यादा लोग हुए संक्रमित

अमेरिका में महामारी का केंद्र बने न्यूयॉर्क राज्य में सबसे ज्यादा संक्रमित हैं। इस राज्य में कोरोना मामलों का आंकड़ा एक लाख के पार पहुंच गया है। इस राज्य में तीन हजार से ज्यादा पीड़ितों की मौत भी हो चुकी है। जबकि पड़ोसी न्यूजर्सी में 30 हजार से ज्यादा लोग संक्रमित हैं। राज्य के गवर्नर एंड्रयू कुओमो ने स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़े पेशेवरों के लिए आवश्यक चिकित्सा उपकरणों की कम आपर्ति पर गुस्सा जाहिर किया। उन्होंने कहा कि राज्य में मास्क और ग्लव्स जैसे अहम चिकित्सा सामग्री की कम आपूर्ति हो रही है।

मरने के लिए अकेले छोड़े गए गंभीर मरीज

न्यूयॉर्क में कई अस्पतालों के बाहर टेंटों में रखे गए मरीजों में से कईयों की हालात बेहद गंभीर है। इन्हें अपने करीबी लोगों से मिलने तक नहीं दिया जा रहा है। क्योंकि यह आशंका है कि इनसे मिलने वालों में संक्रमण फैल सकता है। ऐसे लोगों को मरने के लिए अकेले छोड़ दिया गया है। न्यूयॉर्क की कोलंबिया यूनिवर्सिटी मेडिकल सेंटर में वैश्विक स्वास्थ्य के निदेशक डॉ. क्रेग स्पेंसर ने अस्पतालों के बाहर बनाए गए टेंटों का हाल बयां किया है। उन्होंने ट्वीट के जरिये कहा, 'कुछ टेंटों में मैंने बहुत दर्द, अकेलापन और मौत को देखा। लोग अकेले में मर रहे हैं।'

कोविड–19 की आड़ में कमाई करने में जुटा चीन

विडंबना

▸ छोटे देशों को मदद देने के नाम पर दबाव में लेने की जुगत

▸ वैश्विक महाशक्ति बनने के लिए अपना रहा हर हथकंडा

न्यूयार्क, एजेंसियां : दुनिया भर में कहर बरपा करने वाले कोरोना के लिए जिम्मेदार चीन अब इसकी आड़ में कमाई करने में जुट गया है। मदद के नाम दूसरे देशों को चिकित्सा सामग्री और उपकरण बेचकर वह भारी मुनाफा कमा रहा है। विडंबना की बात है कि अमेरिका जैसी महाशक्ति भी इस समय उसकी आपूर्ति की मोहताज है। भारत की भी यही स्थिति है। दुनिया के कई कमजोर देश तो पूरी तरह उसके रहमोकरम पर हैं। चीन की इस कुटिल चाल को विशेषज्ञों ने भांप लिया है। इन लोगों ने दुनिया को आगाह किया है कि अपनी धमक बनाने के लिए चीन कमजोर देशों को मीडिया के तेवर कुंद करने का विचार भी दे रहा है।

मुनाफा कमा रहा चीन : मनीला स्थित अकादमिक रिचर्ड जवाद हेडेरिन ने एशिया टाइम्स में प्रकाशित अपने लेख में लिखा कि दुनिया जहां कोरोना संकट पर काबू पाने के लिए जी जान से जूझ रही है वहीं चीन इसकी आड़ में मुनाफा कमाने में जुट गया है। पिछले कुछ दिनों में चीन ने अपनी सैन्य गतिविधियां भी बढ़ा दी हैं।उन्होंने लिखा है कि चीन कोरोना के कहर अपने ढंग से बयां करने के लिए कई स्तर से काम कर रहा है। उनके अनुसार चीन के कई शीर्ष अधिकारी मानते हैं कि कोरोना वायरस चीन की सेना ने फैलाया। कोरोना संकट के समय भी चीन दक्षिण चीन सागर में अपनी सामरिक और आर्थिक धमक कायम रखने में जुटा रहा। चीन ने उत्तरी क्षेत्र के समुद्र में हाल ही में प्राकृतिक गैस का बड़ा भंडार खोज निकालने की घोषणा की है। चीन ने यह कामयाबी ऐसे समय पाई है जब बाकी देश अपने सभी संशाधनों का इस्तेमाल बीमारी से निपटने में कर रहे हैं।

जिम्मेदार वैश्विक नेता नेता बनने की चाह : कोरोना वायरस संकट के समय चीन खुद को जिम्मेदार वैश्विक नेता साबित करने की आड़ में दुनिया का चौधरी बनने की कोशिश में जुटा है। इंटरनेशनल रिपब्लिकन इंस्टीट्यूट के वरिष्ठ सलाहकार डेविड शुलमैन ने वार आन द राक्स में लिखा है कि कोरोना से बुरी तरह प्रभावित देशों को मेडिकल सप्लाई की मदद करके चीन के नेता ठोस फायदा लेना चाहते हैं। वे वैश्विक परिदृश्य को अपनी सुविधा और लाभ के हिसाब से बदलना चाहते हैं। इन देशों को मास्क, दवा, वेंटीलेटर, जिसमें कुछ ठीक से काम भी नहीं करते, की आपूर्ति यों ही नहीं हो रही है। सप्लाई के साथ इन देशों पर चीन की शर्तें मानने का दबाव भी शामिल है। अपने आलोचकों का मुंह बंद करने के लिए कुख्यात चीन मदद की आड़ में कमजोर लोकतंत्र वाले देशों में सूचना पर नियंत्रण रखने वाला मॉडल भी थोपना चाह रहा है।

अमेरिका ने भी माना, कोरोना के नाम पर कर रहा कमाई : अमेरिका के न्यूयार्क प्रांत के गवर्नर एंड्रयू कुओमो का भी मानना है कि दुनिया भर में कोरोना के प्रकोप के लिए जिम्मेदार चीन अब इसकी आड़ में कमाई कर रहा है। मास्क, दवा और वेंटीलेटर महंगे दाम पर बेचकर वह मनमाना मुनाफा ले रहा है। अफसोस तो इस बात का है कि अमेरिका जैसी महाशक्ति उस पर निर्भर है। अमेरिका में कोरोना संकट के दौरान चिकित्सा सामग्री और उपकरण का टोटा पड़ने से हालात भयावह है। भारत द्वारा कुछ दवाओं के निर्यात पर पाबंदी लगाने से भी अमेरिका को दिक्कत हुई है। लुइसियाना के गवर्नर जॉन बेल एडवर्ड ने बताया कि इस कोरोना के संकट काल में अमेरिका में वेंटीलेटर के दाम दोगुने तक हो गए हैं। उन्होंने कहा कि देश में बीते 35 में साल उद्योगों को दूसरे देश में ले जाने की नीति कारण आज अमेरिका को चीन के सामने लाचार होना पड़ रहा है।

वायरस के चलते अमेरिका में बढ़ी बेरोजगारी

वाशिंगटन, एएफपी : कोरोना के चलते अमेरिकी अर्थव्यस्था जहां बदहाल हुई है, वहीं इसका असर रोजगार पर भी पड़ा है। कंपनियों द्वारा छंटनी किए जाने से बेरोजगारी में काफी इजाफा हुआ है। सरकारी आंकड़ों मुताबिक, आने वाले दिनों में स्थिति नाटकीय रूप से खराब हो सकती है। श्रम विभाग ने बताया कि अमेरिकी रोजगार में मार्च में 7,01,000 तक की गिरावट आई और बेरोजगारी दर 4.4 फीसद तक बढ़ गई। फिर भी विभाग ने स्वीकार किया कि वे अभी तक नुकसान की पूरी सीमा को पकड़ नहीं सके हैं।

ग्रांट थॉर्नटन की डायन स्वांक ने कहा कि मार्च में रोजगार में गिरावट मंदी की शुरुआत के लिहाज से अभूतपूर्व थी और अप्रैल में स्थिति 20 गुना से भी ज्यादा खराब हो जाएगी। उन्होंने कहा कि हम इस संकट के पहले दो महीनों में कई नौकरियां अधिक आसानी से खो देंगे।

पीएम मोदी ने ट्रंप को पूरा सहयोग देने का वादा किया

नई दिल्ली, प्रेट्र: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को फोन कर कोरोना से जंग में पूरा सहयोग करने का वादा किया है। दोनों देशों के प्रमुखों के बीच शनिवार को हुई इस बातचीत में पीएम ने भारत-अमेरिका सझेदारी को पूरी ताकत से लगाने की बात कही है।

प्रधानमंत्री ने इस बात की जानकारी एक ट्वीट में देते हुए बताया कि हम लोगों के बीच फोन पर विस्तृत बातचीत हुई है। हम लोग भारत अमेरिका साझेदारी को पूरी क्षमता से इस काम में लगाने पर सहमत हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने इसके साथ ही ब्राजील के राष्ट्रपति जेयर बोलसोनारो के साथ भी फोन पर बातचीत कोरोना से जंग में सहयोग की पेशकश की है। यह बातचीत ऐसे समय हो रही जब दोनों देश इस महामारी से पूरी ताकत से निपट रहे हैं। हालांकि अमेरिका में मरने वालों का आंकड़ा भारत के मुकाबले ज्यादा है।

ब्रिटेन बनने लगा महामारी का केंद्र

▸ एक दिन में 708 मौतें, मरने वालों का आंकड़ा 4,313 पर पहुंचा

▸ इटली में आइसीयू में पहली बार मरीजों की संख्या में आई गिरावट

▸ स्पेन ने 26 अप्रैल तक आपातकाल बढ़ाने का किया एलान

ब्राजील के साओ पाउलो में कोरोना वायरस से मृतकों की बढ़ रही संख्या के बाद विला फारमोसा कब्रिस्तान में खोदी जा रही नई कब्रें। यह ब्राजील का सबसे बड़ा कब्रिस्तान है। रायटर

▸ सिंगापुर में शनिवार को कोरोना से छठी मौत हुई। एक सप्ताह में यह चौथी मौत है। वहां पर संक्रमित लोगों की संख्या 1,114 हो गई है

▸ इटली में शू डिजाइनर सर्गियो रोसी की कोरोना से मौत। वह 84 वर्ष के थे

▸ बांग्लादेश में शनिवार को संक्रमण के नौ मामले सामने आए। वहां पर लॉकडाउन को 11 अप्रैल तक बढ़ा दिया गया है

लंदन, एजेंसियां : यूरोप में इटली के बाद ब्रिटेन कोरोना वायरस के बढ़ते प्रकोप का केंद्र बनते जा रहा है। शनिवार को ब्रिटेन में 708 लोगों की मौत हो गई, जिनमें पांच साल के बच्चा भी शामिल है। स्पेन में 809 लोगों की मौत हुई है, लेकिन मरने वालों की संख्या में लगातार दूसरे दिन गिरावट आई है। वहीं, इटली में भी 681 लोगों की जान गई, पर वहां भी हालात में सुधार देखने को मिल रहे हैं, क्योंकि वहां पहली बार आइसीयू में मरीजों की संख्या में गिरावट देखी गई है।

ब्रिटेन में लगातार मामले बढ़ रहे हैं। यहां मरने वालों की संख्या 4,313 हो गई है। प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन के बाद उनकी गर्भवती मंगेतर कैरी साइमंड में भी कोरोना के लक्षण देखे गए हैं। हालांकि, साइमंड ने कहा है कि एक हफ्ते के आराम के बाद वह बेहतर महसूस कर रही हैं। ब्रिटेन के कैबिनेट ऑफिस मंत्री माइकल गोव ने प्रेस ब्रीफिंग में लोगों से एक बार फिर शारीरिक दूरी के लिए निर्धारित मानकों का पालन करने का आग्रह किया। संक्रमितों की संख्या 40 हजार के पार पहुंच गई है।

स्पेन में मरने वालों की संख्या 11,744 हो गई है। संक्रमितों की संख्या भी एक दिन में 7,026 बढ़कर 1,24,736 हो गई है। अभी तक 34 हजार से ज्यादा लोग स्वस्थ भी हुए हैं। स्पेन के प्रधानमंत्री पेड्रो सांचेज ने 26 अप्रैल तक आपातकाल बढ़ाने की घोषणा की है। ग्रीस ने भी 27 अप्रैल तक लॉकडाउन बढ़ा दिया है।

इटली में मरने वालों की तादाद 15,362 हो गई है। यह दुनिया में सबसे ज्यादा है, लेकिन मरीजों की संख्या में यहां गिरावट आ रही है। संक्रमितों की संख्या 1,24,632 हो गई है, जो स्पेन से नीचे आ गया है। पहली बार यहां इनसेंटिव केयर यूनिट यानी आइसीयू में मरीजों की संख्या कम होने लगी है। आइसीयू में 3,994 मरीज हैं। यह संख्या पिछले दिन 4068 की तुलना में कम हुई है। अभी तक आइसीयू में मरीजों की संख्या बढ़ती ही जा रही थी। फ्रांस में 441 लोगों की मौत हुई और मृतकों की संख्या 7,560 हो गई है।

जापान ने डब्ल्यूएचओ पर उठाए सवाल : कोरोना को लेकर जापान ने चीन के बारे में डब्ल्यूएचओ के नजरिये पर सवालिया निशाना खड़ा किया है। शनिवार को जापानी सांसदों से बात करते हुए जापान के उप प्रधानमंत्री आसो ने डब्ल्यूएचओ के महानिदेशक टेड्रोस अदनोम ग्रेब्रियेसस को हटाने के संदर्भ में एक ऑनलाइन याचिका चेंजडॉटओआरजी का हवाला दिया। आसो ने कहा कि डब्ल्यूएचओ के पूर्व प्रमुख एक चीनी नागरिक थे और उस समय भी विभिन्न देशों ने शिकायतें की थीं। उन्होंने कहा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन को डब्ल्यूएचओ के बदले चीनी स्वास्थ्य संगठन कहा जाना चाहिए। बता दें कि डब्ल्यूएचओ ने 23 जनवरी को कोरोना को वैश्विक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित करने से मना कर दिया था, जबकि संक्रमण के मामले तेजी से बढ़ रहे थे।

इंडोनेशिया में मौत के आंकड़ों पर उठे सवाल : इंडोनेशिया की सरकार के मुताबिक, देश में संक्रमण के 2092 मामले हैं, जबकि 191 लोगों की मौत हो चुकी है। हालांकि राजधानी जाकार्ता में पिछले महीने अंतिम संस्कार में हुई अप्रत्याशित वृद्धि को देखते हुए इन आंकड़ों पर सवाल उठने लगे हैं। इंडोनेशिया में अभी भी राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन नहीं है और सोशल डिस्टेंसिंग के माध्यम से महामारी से लड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

ईरान में 158 और लोगों की मौत : ईरान में पिछले चौबीस घंटे में 158 और लोगों की मौत हुई है। इस तरह वहां मरने वालों की कुल तादाद 3,452 हो गई है। कुल संक्रमित लोगों की संख्या 55,743 हो गई है। इनमें से 4,103 लोगों की हालत चिंताजनक है।

पाकिस्तान में 2700 से ज्यादा संक्रमित : शनिवार को पाकिस्तान में कोरोना संक्रमण के मामले बढ़कर 2,748 हो गए हैं। अकेले पंजाब प्रांत में संक्रमित लोगों की संख्या एक हजार से ज्यादा हो गई है।

देश	मौतें	संक्रमण
इटली	15,362	1,24,632
स्पेन	11,744	1,24,736
अमेरिका	7,406	2,77,613
फ्रांस	7,560	82,165
ब्रिटेन	4,313	41,903
ईरान	3,452	55,743
चीन	3,326	81,639
जर्मनी	1,295	92,050

नेशनल हेल्थ सर्विस के मुताबिक, अब तक देश में संक्रमण से 41 लोगों की मौत हो चुकी है।

उधर, शुक्रवार को विश्व बैंक ने कोरोना महामारी से लड़ने के लिए पाकिस्तान को 200 मिलियन डॉलर (1500 करोड़ रुपये से ज्यादा) की आर्थिक सहायता को मंजूरी प्रदान कर दी।

पूरी दुनिया में 60 हजार से ज्यादा मौतें : पूरी दुनिया में अभी तक 63,913 लोगों की कोरोना वायरस के संक्रमण से मौत हो चुकी है। अकेले यूरोप में 44,132 लोगों की जान गई है। यूरोप के दो देश इटली और स्पेन सर्वाधिक प्रभावित हैं। अकेले 25 हजार से ज्यादा मौतें इन्हीं देशों में हुई हैं। संक्रमित लोगों का आंकड़ा 11,82,398 हो गया है। अकेले यूरोप में 6,10,846 लोग इस महामारी से बीमार हैं। एशिया की बात करें तो यहां अभी तक 1,15,730 संक्रमण के मामले दर्ज किए गए हैं जबकि 4,123 लोगों की मौत हुई है। दुनियाभर में 2,44,108 लोग स्वस्थ भी हुए हैं।

आइसीजे ने यूएनएचआरसी से किया चीन के खिलाफ कार्रवाई का अनुरोध

▸ कहा, कोरोना वायरस फैलाने के लिए दुनियाभर की क्षतिपूर्ति करे चीन

आदिश सी. अग्रवाल। फाइल

जिनेवा, एएनआइ : दुनियाभर में जानलेवा कोरोना वायरस फैलाकर मानवता के खिलाफ जघन्य अपराध करने के लिए इंटरनेशनल काउंसिल ऑफ ज्यूरिस्ट (आइसीजे) ने संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद (यूएनएचआरसी) से चीन के खिलाफ कार्रवाई का अनुरोध किया है।

लंदन स्थित आइसीजे के प्रेसीडेंट और ऑल इंडिया बार एसोसिएशन के चेयरमैन आदिश सी. अग्रवाल ने शिकायत दाखिल करके यूएनएचआरसी से तत्काल दखल देने और चीन को दुनिया खासकर भारत को क्षतिपूर्ति देने का निर्देश देने की मांग की है। शिकायत में कहा गया है कि कोरोना वायरस का प्रसार रोक पाने में चीन सरकार की निष्क्रियता की वजह से दुनियाभर में मंदी, खरबों डॉलर का नुकसान, भारत और दुनिया में करोड़ों कामगारों की बेरोजगारी की स्थिति पैदा हो गई है।

सुपरपावर बनने के लिए चीन ने रची साजिश : आदिश अग्रवाल ने संयुक्त राष्ट्र का ध्यान इस तथ्य की ओर आकृष्ट कराया है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) ने चीन सरकार की साजिश की वजह से कोविड-19 को महामारी करार दिया है। चीन की इस साजिश का मकसद जैविक युद्ध के जरिये खुद को सुपरपावर के तौर पर स्थापित करना और डब्लूएचओ एवं शेष दुनिया को अलर्ट नहीं करके अन्य देशों को कमजोर करना है।

चीन ने दुनियाभर में कारोबार ठप किया : आइसीजे प्रेसीडेंट ने आगे कहा, 'चीन ने करोड़ों लोगों की जिंदगी खतरे में डाल दी है और दुनियाभर में कारोबार को बिल्कुल ठप कर दिया है। कोरोना वायरस के प्रसार के बारे में जानकारी देने में पारदर्शिता का अभाव और लगातार गुमराह करने वाले बयानों ने पूरी विश्व बिरादरी के मानवाधिकारों का गंभीर उल्लंघन किया लिहाजा यूनिवर्सल डिक्लेरेशन ऑफ ह्यूमन राइट्स के अनुच्छेद 21 के तहत तत्काल हस्तक्षेप करके चीन के खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए।'

आखिर देश के सभी प्रांतों में क्यों नहीं फैली महामारी

आदिश अग्रवाल के मुताबिक, यह अभी भी रहस्य है कि चीन के सभी प्रांतों में कोरोना वायरस कैसे नहीं फैला, लेकिन उसी समय यह दुनिया के सभी देशों में फैल गया। उन्होंने कहा, 'ऐसे शक्तिशाली और जानलेवा वायरस के विकास का मकसद अभी भी रहस्य है। हालांकि इस बात के ठोस सुबूत हैं कि चीन सरकार का इरादा इसका इस्तेमाल करके दुनिया की अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण करने का है।'

वैश्विक खाद्य आपूर्ति पर पड़ सकता है गहरा प्रभाव

▸ बड़े खाद्य निर्यातक दहशत में आए, तो जल्द बिगड़ सकती है स्थिति

▸ फिलहाल खाद्य आपूर्ति पर्याप्त है और बाजार अपेक्षाकृत स्थिर है

संयुक्त राष्ट्र, एजेंसियां : कोरोना वायरस महामारी के तेजी से बढ़ते प्रकोप का अब तक वैश्विक खाद्य आपूर्ति श्रृंखला पर बहुत कम प्रभाव पड़ा है। लेकिन, चिंता से ग्रस्त बड़े खाद्य निर्यातक यदि दहशत में आए, तो यह स्थिति बहुत जल्द बिगड़ सकती है। विश्व खाद्य कार्यक्रम (डब्ल्यूएफपी) ने अपनी नई रिपोर्ट में कहा है कि मूल अनाजों के लिए वैश्विक बाजार पूरी तरह भरे-पूरे हैं और कीमतें आमतौर पर कम हैं। हालांकि खाद्य उत्पादन एवं आपूर्ति की वैश्वीकृत प्रकृति को देखते हुए इन सामग्रियों को उत्पादन के मुख्य केंद्र से निकालकर वहां तक पहुंचाने की जरूरत है, जहां इनकी खपत है।

डब्ल्यूएफपी की वरिष्ठ प्रवक्ता एलिजाबेथ बिर्स ने कहा कि अभी तक किसी तरह की कमी नहीं है। खाद्य आपूर्ति पर्याप्त है और बाजार अपेक्षाकृत स्थिर है। उन्होंने कहा कि वैश्विक अनाज भंडार सहज स्तर पर है और गेहूं तथा अन्य मुख्य अनाजों की संभावना भी पूरे साल सकारात्मक नजर आ रही है। लेकिन, बहुत जल्द हमें आपूर्ति श्रृंखला में दरार पड़ती दिख सकती है।

बिर्स ने कहा कि ऐसा इसलिए होगा क्योंकि अगर बड़े निर्यातकों का मूल खाद्य सामग्रियों की उपलब्धता में यकीन नहीं रहेगा तो हड़बड़ी में खरीदारी बढ़ेगी और कीमतों में उछाल आएगा। रिपोर्ट में खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) के एक अनाज बाजार विशेषज्ञ के हवाले से कहा गया कि समस्या आपूर्ति की नहीं बल्कि खाद्य सुरक्षा को लेकर व्यावहारगत परिवर्तन है। एक विशेषज्ञ ने कहा कि थोक में खरीदारी करने वाले अगर सोचने लगें कि मई और जून में वे गेहूं या चावल नहीं खरीद पाएंगे, तो सोचिए क्या होगा? इस सोच के कारण वैश्विक खाद्य आपूर्ति संकट पैदा हो सकता है। कम आय वाले देशों के लिए यह बर्बादी लाने वाला हो सकता है और यह लंबे समय के लिए हानिकारक प्रभाव ला सकता है।

ऑस्ट्रेलिया में सिख अभावग्रस्तों को करा रहे मुफ्त भोजन

मेलबर्न, प्रेट्र : कोरोना वायरस से पैदा संकट के दौर में ऑस्ट्रेलिया में भारतीय मूल के सिख परेशानहाल लोगों को मुफ्त में भोजन कराकर और उन्हें सब्जी इत्यादि मुहैया कराकर मदद कर रहे हैं। सिख समुदाय के लोग उन लोगों की मदद कर रहे हैं जो सेल्फ आइसोलेशन में हैं या फिर आर्थिक रूप से अभावों के शिकार हैं। ऑस्ट्रेलिया में कोविड-19 ग्रस्त मरीजों की संख्या 5,500 को पार कर गई है।

ऑस्ट्रेलिया में सरकार ने कोरोना से बचाव के लिए लोगों से घरों में रहने के लिए कहा है। इसके चलते अकेले रहने वाले और गरीब लोगों को खाने-पीने के सामान की दिक्कत पैदा हो गई है। विक्टोरिया राज्य में सिख वालंटियर्स ऑस्ट्रेलिया (एसवीए) ने अपने सदस्य परिवारों से अपील की है कि वे अभावग्रस्त लोगों के नजदीक जाएं और उन्हें मुफ्त भोजन और अन्य जरूरी सामान मुहैया कराएं। एसवीए के लोग जरूरतमंदों में सूप, पास्ता, चावल और करी बांट रहे हैं। डिलिवरी वैन के जरिये ये प्रतिदिन 800 से ज्यादा लोगों को भोजन मुहैया कराया जा रहा है।

महाभियोग मामले में इंस्पेक्टर जनरल पर बरसे डोनाल्ड ट्रंप

▸ ठहराया अयोग्य, पद से हटाने की सिफारिश

माइकल अकिंसन। फाइल

वाशिंगटन, एपी : अमेरिका में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अब महाभियोग मामले में व्हिसल ब्लोअर की अर्जी पर शुरुआती जांच करने वाले माइकल अकिंसन को निशाने पर लिया है। अकिंसन अमेरिका की राष्ट्रीय खुफिया के इंस्पेक्टर जनरल हैं। इस अर्जी में ट्रंप पर राजनीतिक फायदे के लिए राष्ट्रपति पद के इस्तेमाल का आरोप लगाया गया था। बाद में महाभियोग का प्रस्ताव सीनेट में गिर गया और ट्रंप को कोई नुकसान नहीं हुआ।

ट्रंप ने अमेरिकी संसद के उच्च सदन सीनेट की खुफिया मामलों की समिति को लिखे पत्र में अकिंसन पर गंभीर आरोप लगाए हैं। कहा है कि इंस्पेक्टर जनरल को सबसे पहले अपने नियुक्तिकर्ता को उस शिकायत के बारे में बताना चाहिए था लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। इसलिए अकिंसन अब इस पद पर कार्य करने की योग्यता खो चुके हैं। पत्र में ट्रंप ने लिखा है कि अकिंसन ने व्हिसल ब्लोअर की अर्जी संसद को दी, जो उनके अधिकार क्षेत्र में नहीं था।

इस अर्जी में ट्रंप पर यूक्रेन के राष्ट्रपति से टेलीफोन पर बात कर डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता जो बिडेन और उनके बेटे को जांच में फंसाने की कोशिश का आरोप था। कहा गया था कि ट्रंप ने यह कार्य राजनीतिक फायदे के लिए किया। यह अमेरिकी राष्ट्रपति के पद का दुरुपयोग था। इसी अर्जी को आधार बनाकर अमेरिकी संसद के निचले सदन प्रतिनिधि सभा में ट्रंप के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव पारित हुआ था लेकिन उच्च सदन सीनेट में वह गिर गया था।

जान गंवाने वालों की याद में चीन ने मनाया राष्ट्रीय शोक दिवस

बीजिंग, एजेंसियां : कोरोना महामारी के चलते जान गंवाने वाले मरीजों और चिकित्साकर्मियों की याद में शनिवार को चीन में तीन मिनट का मौन रख कर राष्ट्रीय शोक दिवस मनाया गया। इस दौरान सड़कों पर ना केवल यातायात थम गया, बल्कि देश का झंडा भी आधा झुका रहा। राष्ट्रपति शी चिनफिंग के नेतृत्व में मनाए गए शोक दिवस में जिन लोगों को श्रद्धांजलि दी गई, उनमें वायरस के खतरे के बारे में सबसे पहले बताने वाले डॉ. ली वेनलियांग भी शामिल हैं। नेशनल हेल्थ कमीशन के मुताबिक, चीन में अभी तक इस महामारी से 3,326 की मौत हो चुकी है जबकि 81,326 लोग इससे संक्रमित हैं। बता दें कि इससे पहले चीन में तीन बार राष्ट्रीय शोक दिवस मनाया गया है।

स्थानीय समयानुसार सुबह 10 बजे बीजिंग में राष्ट्रपति शी चिनफिंग और चीन के अन्य नेताओं ने कोरोनावायरस के मृतकों को श्रद्धांजलि देने के लिए आयोजित राष्ट्रीय शोक दिवस समारोह में भाग लिया। अपने सीने पर सफेद फूल लगाए इन नेताओं ने आधे झुके राष्ट्रीय ध्वज के सामने मृतकों को श्रद्धांजलि दी।

डेनियल पर्ल हत्याकांड में अमेरिका ने पाकिस्तान पर बढ़ाया दबाव

▸ विदेश मंत्री पोंपियो बोले–अमेरिकी पत्रकार को हरहाल में न्याय दिलाए पाक सरकार

अमेरिकी विदेश मंत्री माइक पोंपियो। रायटर

वाशिंगटन, एजेंसियां: पत्रकार डेनियल पर्ल के हत्यारों की सजा कम करने से खफा अमेरिका ने पाकिस्तान पर दबाव बढ़ा दिया है। विदेश मंत्री माइक पोंपियो ने इस संबंध में पाकिस्तान से अमेरिकी डेनियल पर्ल को हर हाल में न्याय दिलाने की मांग की है। पोंपियो की यह प्रतिक्रिया सिंध हाई कोर्ट के उस फैसले के बाद सामने आई है, जिसमें अदालत ने पर्ल की हत्या के मुख्य दोषी और ब्रिटिश मूल के अलकायदा आतंकी अहमद उमर सईद शेख की मौत की सजा को सात साल कैद में तब्दील कर दिया। साथ ही तीन अन्य दोषियों फहद नसीम, सलमान साकिब और शेख मुहम्मद आदिल को रिहा कर दिया था। इन तीनों को निचली अदालत ने सात-सात साल कैद की सजा सुनाई थी। खास बात यह है कि अमेरिका द्वारा कोर्ट के फैसले को अपमानजनक करार दिए जाने के बाद शुक्रवार को चारों दोषियों को फिर से तीन महीने के लिए गिरफ्तार कर लिया गया था।

पोंपियो ने एक ट्वीट में कहा, 'अमेरिका डेनियल पर्ल को कभी नहीं भूलेगा। हम एक साहसी पत्रकार की विरासत का सम्मान करते हैं और उनकी क्रूर हत्या के लिए न्याय की मांग करते हैं।' वहीं राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार परिषद ने एक ट्वीट में परिषद ने कहा, 'अमेरिकी नागरिकों के खिलाफ आतंकवाद के सभी मामलों में न्याय के प्रति अमेरिका प्रतिबद्ध है।' सीनेट की विदेश मामलों की समिति के चेयरमैन जिम रिच ने कहा, 'हत्या से आतंकवादी समूहों द्वारा पश्चिमी देशों के लोगों को निशाना बनाने का नया दौर शुरू हुआ है।'

सुप्रीम कोर्ट जाएगी सरकार

पर्ल हत्याकांड में आए ताजे फैसले को लेकर पाकिस्तान की सिंध प्रांत की सरकार अगले सप्ताह सुप्रीम कोर्ट में अपील करेगी। गृह मंत्रालय के अनुसार, 'संघीय सरकार सिंध हाई कोर्ट के फैसले से पूरी तरह अवगत है। इससे वह चिंतित है, लेकिन संवैधानिक प्रावधानों के मुताबिक आपराधिक मामलों में अभियोजन चलाना प्रांत का विषय है, इसलिए सिंध सरकार के साथ चिंता को साझा किया गया है।'

आइएसआइ और अलकायदा के संबंधों की कर रहे थे पड़ताल

'द वॉल स्ट्रीट जर्नल' के दक्षिण एशिया ब्यूरो प्रमुख 38 वर्षीय पर्ल को 2002 में कराची से अगवा किया गया था और उसके बाद उनकी हत्या कर दी गई। वह पाकिस्तान की जासूसी एजेंसी आइएसआइ और आतंकी संगठन अलकायदा के बीच संबंधों की पड़ताल करने वाली एक खोजी खबर के सिलसिले में वहां गए थे।

दैनिक जागरण
राष्ट्रीय संस्करण
रविवार 5 अप्रैल 2020
स्पोर्ट्स
12
www.jagran.com

लॉकडाउन के समय में लोगों को अपने घर में लगातार एक्सरसाइज करनी चाहिए।
— मिल्खा सिंह, भारत के पूर्व एथलीट

सौरव गांगुली ने की दिहाड़ी मजदूर की मदद

राज्य ब्यूरो, कोलकाता : बीसीसीआइ अध्यक्ष सौरव गांगुली ने कोरोना संकट के कारण खाने-पीने की किल्लत से जूझ रहे कोलकाता के एक दिहाड़ी मजदूर की मदद की है। उन्हें जैसे ही इसकी जानकारी हुई, उन्होंने अपनी संस्था सौरव गांगुली फाउंडेशन के जरिए उस मजदूर के घर पर खाने-पीने का सामान भिजवाया। दिहाड़ी मजदूर का नाम मृदुल देव है। वह दक्षिण कोलकाता की श्री कॉलोनी का रहने वाला है।

एक नजर में

हॉकी इंडिया ने दिया एक करोड़ का दान

नई दिल्ली : हॉकी इंडिया ने कोरोना वायरस महामारी के खिलाफ लड़ाई में शनिवार को प्रधानमंत्री राहत कोष में 75 लाख रुपये का और योगदान देने की घोषणा की। इसके साथ ही हॉकी इंडिया अब तक एक करोड़ रुपये की मदद कर चुका है। इससे पहले हॉकी इंडिया कार्यकारी बोर्ड ने प्रधानमंत्री राहत कोष में 25 लाख रुपये का योगदान दिया था। हॉकी इंडिया के अध्यक्ष मुहम्मद मुश्ताक अहमद ने कहा कि वर्तमान संकट को देखते हुए हमें सरकार के साथ खड़े होने की जरूरत है। कोविड-19 महामारी से लड़ने के लिए सरकार वे सब कुछ कर रही हैं, जो कर सकती है। (प्रेट्र)

अभी खेल नहीं : यूएस टेनिस

न्यूयॉर्क : यूएस टेनिस संघ ने कहा कि फिलहाल यही अच्छा है कि खेल नहीं हों, क्योंकि अभी कोरोना वायरस लगातार बढ़ रहा है। यूएस ओपन का आयोजन करने वाले संघ ने कहा कि टेनिस की बॉल को छूने, नेट को छूने और कोर्ट सरफेस के साथ बैंच या गेट हैंडल से कोरोना फैल सकता है। ऐसे में हम खिलाड़ियों से कहना चाहते हैं कि वह संयम रखें। (एपी)

ध्यान दे रहे तीरंदाज राय

कोलकाता : लॉकडाउन के बीच भारतीय तीरंदाज तरुणदीप राय अपने कंधों की ताकत बढ़ाने पर ध्यान दे रहे हैं। वह इस समय सेना खेल इंस्टीटयूट पुणे में हैं। उन्हें विश्वास है कि टोक्यो ओलंपिक तक वह पूरी तरह से खुद को तैयार कर लेंगे। दो बार के विश्व चैंपियनशिप के रजत पदक विजेता को लगता है कि टोक्यो गेम्स का स्थगित होना उनकी तैयारियों के लिहाज से सही है। (प्रेट्र)

हिस्सा नहीं लेंगे भरोत्तोलक

बुडापेस्ट : थाईलैंड और मलेशिया के भरोत्तोलक टोक्यो ओलंपिक में हिस्सा नहीं सकेंगे। अंतरराष्ट्रीय भरोत्तोलन फेडरेशन ने शनिवार को थाई एमेच्योर भरोत्तोलन संघ पर तीन साल का और मलेशियन भरोत्तोलन संघ पर एक साल का प्रतिबंध लगाने का फैसला किया है। अंतरराष्ट्रीय फेडरेशन ने कहा है कि ओलंपिक का आयोजन चाहे जब भी हो, इन देशों के खिलाड़ी ओलंपिक में हिस्सा नहीं ले सकेंगे। थाई फेडरेशन ने 2018 विश्व चैंपियनशिप के दौरान अपने नौ भरोत्तोलकों के डोपिंग में फंसने के बाद स्वत: ही ओलंपिक से नाम वापस ले लिया था। (आइएएनएस)

कोरोना के कारण भारत में होने वाला अंडर-17 महिला विश्व कप स्थगित

दो से 21 नवंबर तक देश के पांच शहरों में खेले जाने थे फुटबॉल विश्व कप के मुकाबले

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: भारत में नवंबर में होने वाला फीफा अंडर-17 महिला फुटबॉल विश्व कप कोरोना वायरस महामारी के कारण शनिवार को स्थगित कर दिया गया। यह टूर्नामेंट पांच शहरों कोलकाता, गुवाहाटी, भुवनेश्वर, अहमदाबाद और नवी मुंबई में दो से 21 नवंबर के बीच होना था। टूर्नामेंट में 16 टीमें भाग लेने वाली थीं जिसमें मेजबान होने के नाते भारत को स्वत: प्रवेश मिला था।

यह अंडर-17 महिला विश्व कप में भाग लेने का भारत का पहला मौका था। फीफा परिसंघों के कार्यसमूह ने यह फैसला लिया। फीफा परिषद के ब्यूरो ने कोरोना वायरस महामारी के परिणामों से निपटने के लिए इस कार्य समूह का गठन किया है। कार्यसमूह ने फीफा परिषद से पनामा कोस्टा रिका में 2020 में होने वाला फीफा अंडर-20 विश्व कप भी स्थगित करने का अनुरोध किया जो अगस्त-सितंबर में होना था। इसके साथ ही नवंबर में भारत में होने वाला अंडर-17 महिला विश्व कप भी स्थगित करने का अनुरोध किया था। फीफा ने कहा कि नई तारीखों की घोषणा की जाएगी। इसके साथ ही महिलाओं के अंतरराष्ट्रीय कैलेंडर पर काम करने के लिए एक उप कार्य समूह के गठन का भी फैसला लिया गया जो फीफा के स्थगित टूर्नामेंटों के कार्यक्रम में बदलाव पर गौर करेगा।

कार्यसमूह में फीफा प्रशासन और महासचिव तथा सभी परिसंघों के शीर्ष कार्यकारी शामिल थे। टेली कांफ्रेंस के जरिए हुई पहली बैठक में इसमें कई सुझावों पर सर्वसम्मति से मंजूरी जताई गई। टूर्नामेंट को भले ही अभी पांच महीने का वक्त था, लेकिन अभी तक सिर्फ एशिया के ही क्वालीफाइंग हो पाए थे, जहां जापान और उत्तर कोरिया ने क्वालीफाई कर लिया था।

पांच बचे हुए क्वालीफाइंग में अफ्रीका, यूरोप, ओसेनिया, दक्षिण अमेरिका और केंद्रीय उत्तरी अमेरिका और कैरेबियाई हैं। भारत में अंडर-17 महिला विश्व कप का कार्यक्रम फरवरी में जारी किया गया जिसका फाइनल नवी मुंबई में होना था। स्थानीय आयोजन समिति ने कहा कि वह इस फैसले का समर्थन करती है हालांकि वह नवंबर में टूर्नामेंट की मेजबानी का इंतजार कर रही थी। आयोजन समिति ने कहा कि यह सभी संबंधित लोगों की सेहत को ध्यान में रखकर लिया गया फैसला है। इस समय स्वास्थ्य सर्वोपरि है। हम कोई जोखिम नहीं लेना चाहते। हमें आगे भी फीफा को पूरा समर्थन देंगे और आगे निकट भविष्य में मेजबानी के लिए तैयार हैं।

- ओलंपिक के बाद स्थगित होने वाला सबसे बड़ा टूर्नामेंट

यह फैसला अपेक्षित था : एआइएफएफ

अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआइएफएफ) ने कहा कि यह फैसला अपेक्षित था। एआइएफएफ महासचिव कुशल दास ने कहा कि कोरोना वायरस के कारण जिस तरह बाकी खेल आयोजन स्थगित हुए हैं, यह तो होना ही था। हमें यह फैसला मानना ही होगा। दास ने कहा कि यूरोप और अफ्रीका तथा अन्य परिसंघों में क्वालीफाइंग टूर्नामेंट भी नहीं हो सके हैं। इसलिए यह फैसला अपेक्षित था। उन्होंने कहा कि टूर्नामेंट अब अगले साल ही होने की संभावना है।

घर पर रहकर ही जीती जा सकती है लड़ाई : पुजारा

नई दिल्ली: भारतीय टेस्ट बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा चाहते हैं सभी देशवासी घर पर रहें क्योंकि कोविड-19 महामारी के खिलाफ लड़ाई घर पर रहकर ही जीती जा सकती है।

पुजारा उन शीर्ष भारतीय खिलाड़ियों में से एक है जिन्होंने कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई के तरीकों पर चर्चा के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ हुई वीडियो कॉल में हिस्सा लिया था। देश में अभी 21 दिन का लॉकडाउन चल रहा है। भारत के मुख्य टेस्ट बल्लेबाज ने कहा कि इस समय प्रत्येक व्यक्ति एक सैनिक है। अगर आप घर में रहोगे तो आप अपने देश के लिए युद्ध लड़ रहे हो। इसके लिए एकजुट प्रयास की जरूरत है, वर्ना हम इसे जीत नहीं सकते। पिछले महीने सौराष्ट्र को पहला रणजी ट्रॉफी खिताब दिलाने में मदद करने वाले पुजारा ने सोचा नहीं होगा कि वह इस तरह घर पर समय व्यतीत कर रहे होंगे। हालांकि वह इस ब्रेक का आनंद ले रहे हैं और उनका ज्यादातर समय अपनी दो साल की बेटी के साथ खेलने में जाता है। वह अपनी बेटी के साथ प्लास्टिक के बल्ले से खेलते हैं। ऐसा मुझे अपनी बेटी के लिए करना होता है।

बिना दर्शकों के ही हो आइपीएल : पीटरसन

नई दिल्ली, प्रेट्र: कोरोना वायरस की वजह से सारी खेल गतिविधियां इस वक्त बंद हैं, लेकिन इंग्लैंड के पूर्व बल्लेबाज केविन पीटरसन ने कहा कि उन्हें पूरी उम्मीद है कि आइपीएल का 13वां सत्र होगा। यह कराया जा सकता है। उन्होंने बिना दर्शकों के संक्षिप्त आइपीएल कराने की बात कही।

उन्होंने स्टार स्पोर्ट्स से कहा कि जुलाई-अगस्त में इसे कराना जल्दी हो सकती है। मुझे विश्वास है कि यह होना चाहिए। इससे क्रिकेट सत्र की शुरुआत की जा सकती है। उनका कहना था कि मुझे लगता है कि दुनिया का हर एक खिलाड़ी आइपीएल में खेलने के लिए बेताब है। इसकी वजह से ही एक रास्ता निकले फ्रेंचाइजी टीमों के लिए कुछ पैसे कमाने का और ऐसी स्थिति में अर्थव्यवस्था को भी मदद मिल पाएगी। आप तीन ऐसी जगहों में इसको करा सकते हैं जो दर्शकों के लिए पूरी तरह से बंद हो। खिलाड़ी जाएं वहां और तीन या चार हफ्ते में यह टूर्नामेंट खेलें। ऐसी स्थिति में आइपीएल को कराने के क्या तरीके हो सकते हैं पर उन्होंने कहा कि यह एक बेहद ही छोटा टूर्नामेंट रहेगा जो तीन आयोजन स्थल पर कराया जा सकता है। जिससे हमें यह भी आश्वासन मिलेगा की हम पूरी तरह से सकुशल और सुरक्षित हैं। मुझे नहीं लगता है ऐसी स्थिति में दर्शकों को खतरे में डाला जा सकता है।

बीसीसीआइ लगातार विदेशी बोर्ड के संपर्क में

नई दिल्ली : आइपीएल के 13वें संस्करण का भविष्य अधर में लटका हुआ है, लेकिन भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआइ) और आइपीएल फ्रेंचाइजी अभी भी इसके आयोजन को लेकर उम्मीद बनाए हुए हैं। बीसीसीआइ लगातार विदेशी बोर्ड के साथ संपर्क बनाए हुआ है। बीसीसीआइ के एक अधिकारी ने कहा कि क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए), इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) और क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका (सीएसए) जैसे अन्य सभी विदेशी बोर्ड को भी मौजूदा स्थिति और सरकार के निर्देशों से लगातार अवगत कराया गया है। विभिन्न विकल्पों पर चर्चा की गई है जैसे कि एक बंद दरवाजों के बीच टूर्नामेंट।

89 की उम्र में फिर पापा बनेंगे एफ-1 के पूर्व बॉस

नई दिल्ली, एएफपी : फॉर्मूला-वन के पूर्व बॉस (मुख्य कार्यकारी) बर्नी एक्लेस्टोन फिर पापा बनने की तैयारी में हैं। 89 साल के बर्नी की पत्नी फैबियाना फ्लॉसी 44 वर्ष की हैं। वह जुलाई में मां बनेंगीं। दोनों ने 2012 में स्विट्जरलैंड में शादी की थी।

फॉर्मूला वन के बॉस बनने के बाद बर्नी एक्लेस्टोन ने इस खेल में नई क्रांति ला दी थी। वह 1978-2017 तक फॉर्मूला वन के बॉस रहे। बर्नी की निजी जिंदगी की बात करें तो फैबियाना से शादी रचाने से पहले वह दो शादियां कर चुके थे। पहली दो शादियों से उनकी तीन बेटियां हैं। उनकी पहली शादी इवी बेमफोर्ड से हुई थी जिनसे उन्हें एक बेटी देबराह हैं। देबराह की उम्र 65 वर्ष है। दूसरी शादी से उनकी दो बेटी तमारा और पेट्रा हैं जिनकी उम्र क्रमशः 35 और 31 साल है। बर्नी ने कहा कि इसमें कुछ भी अजीब नहीं है? मैं जवान महसूस करता हूं। मुझे 29 और 89 की उम्र में अंतर नहीं दिखता।

पत्नी फैबियाना फ्लॉसी के साथ बर्नी एक्लेस्टोन ● फाइल फोटो, ट्विटर

रोनाल्डो से बेहतर हैं मेसी : काका

लीड्स, एएनआइ: जब ब्राजील के दिग्गज फुटबॉल काका से पूछा गया कि आप लियोन मेसी और क्रिस्टियानो रोनाल्डो में से किसे चुनना पसंद करेंगे। तो इस पूर्व खिलाड़ी ने अर्जेंटीना के दिग्गज स्ट्राइकर मेसी को चुना। काका ने कहा कि मैं रोनाल्डो के साथ खेला हूं और वह शानदार हैं, लेकिन मैं मेसी के साथ जाऊंगा। वह अद्भुत है और उनके पास विशुद्ध कौशल है। जिस तरह से वह खेलते हैं वह सच में शानदार हैं। काका ने आगे कहा कि रोनाल्डो तो मशीन हैं।

कोरोना की लड़ाई में नेमार का 7.6 करोड़ रुपये का योगदान: पेरिस सेंट जर्मेन (पीएसजी) के स्टार स्ट्राइकर और विश्व के सबसे महंगे फुटबॉलर नेमार ने ब्राजील में कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई में 7.6 करोड़ रुपये का दान दिया है। नेमार ने यह दान यूनिसेफ और टेलीविजन प्रसारणकर्ता द्वारा जारी अभियान को दिया है।

सचिन की 241 रन की पारी सबसे अनुशासित : लारा

क्रिकेट डायरी

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: वेस्टइंडीज के दिग्गज बल्लेबाज ब्रायन लारा ने कहा है कि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ रिकॉर्ड के बादशाह सचिन तेंदुलकर की नाबाद 241 रन की पारी उनके टेस्ट करियर की सबसे अनुशासित पारी थी। टेस्ट में 16 साल की उम्र में पदार्पण करने वाले दिग्गज सचिन इस प्रारूप में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं।

सचिन ने अपने 24 साल के लंबे करियर में कई शानदार और मैच विजयी पारियां खेलीं। लारा ने अपने इंस्टाग्राम पोस्ट में सचिन की 241 वाली पारी का जिक्र किया। लारा ने लिखा कि क्या आप 16 की उम्र से अगले 24 साल तक क्रिकेट खेलने की कल्पना कर सकते हैं। यह अविश्वसनीय है। सचिन ने अपने पूरे करियर में कुछ आश्चर्यजनक पारियां खेलीं, लेकिन सिडनी क्रिकेट ग्राउंड (एससीजी) पर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ नाबाद 241 की तरह अधिक अनुशासन और दृढ़ संकल्प के साथ कोई नहीं लगी। साल 2004 में सचिन ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 436 गेंदों पर नाबाद 241 रन बनाए थे और भारत ने पहली पारी में सात विकेट पर 705 रन का विशाल स्कोर बनाया। हालांकि यह मैच ड्रॉ रहा और सचिन को मैन ऑफ द मैच चुना गया। तब सचिन फॉर्म से जूझ रहे थे और उन्होंने उस सीरीज के फाइनल टेस्ट में कवर ड्राइव तक नहीं लगाने का फैसला किया था। इसके बावजूद उन्होंने दोहरा शतक जड़ा। उनकी इस पारी की काफी तारीफ हुई थी।

रोहित और वार्नर सर्वश्रेष्ठ टी-20 सलामी बल्लेबाज : मूडी

नई दिल्ली : पूर्व ऑलराउंडर टॉम मूडी ने भारत के रोहित शर्मा और साथी ऑस्ट्रेलियाई डेविड वार्नर को टी-20 में सर्वश्रेष्ठ सलामी बल्लेबाज के तौर पर चुना। एक सवाल-जवाब सत्र में मूडी ने चेन्नई सुपरकिंग्स को अपनी पसंदीदा आइपीएल टीम और महेंद्र सिंह धौनी को पसंदीदा कप्तान बताया। जब उनसे टी-20 में सर्वश्रेष्ठ सलामी बल्लेबाज के बारे में पूछा गया तो उन्होंने लिखा कि बहुत मुश्किल है, लेकिन मैं डेविड वार्नर और रोहित शर्मा का नाम लूंगा। भारत में क्रिकेट की अपार प्रतिभा मौजूद है लेकिन मूडी को लगता है कि इनमें शुभमन गिल सबसे बेहतर हैं।

इंग्लैंड के क्रिकेटरों ने वेतन में कटौती की पेशकश की

लंदन : इंग्लैंड के पुरुष और महिला क्रिकेटरों ने कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई के लिए वेतन में कटौती और 4.68 करोड़ रुपये दान देने की पेशकश की है। इससे पहले इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड ने खिलाड़ियों के वेतन में 20 प्रतिशत की कटौती का प्रस्ताव रखा था। 4.68 करोड़ रुपये दान पुरुष क्रिकेटरों के वेतन में 20 प्रतिशत कटौती के बराबर है जबकि महिला क्रिकेटरों ने अप्रैल, मई और जून के वेतन में कटौती का प्रस्ताव रखा है। कुछ क्रिकेटर व्यक्तिगत तौर पर भी योगदान दे चुके हैं।

मियांदाद बोले, कोई भी फिक्सिंग का दोषी हो, उसे फांसी दो: पाकिस्तान के दिग्गज क्रिकेटर जावेद मियांदाद का मानना है कि जो खिलाड़ी क्रिकेट में भ्रष्टाचार करे, उसे सजा के तौर पर फांसी पर चढ़ा देना चाहिए। उन्होंने कहा कि जो भी क्रिकेटर इस खेल में फिक्सिंग करता है, वह अपने परिवार के साथ भी धोखाधड़ी करता है। फिक्सिंग में शामिल क्रिकेटरों को कड़ी सजा देनी चाहिए। बोर्ड को एक उदाहरण पेश करना चाहिए और ऐसे गलत करने वालों को फांसी पर लटका देना चाहिए। क्रिकेट से लोग जुड़ते हैं।

कश्मीर को मिला संघ का सहारा

जागरण विशेष

नवीन नवाज, श्रीनगर

- अलगाववादियों और जिहादियों के गढ़ में आरएसएस के स्थानीय मुस्लिम कार्यकर्ता आम लोगों तक पहुंचा रहे मदद
- लॉकडाउन में जरूरतमंदों तक राशन, दवाएं, मास्क वितरित कर रहे, समस्याओं को प्रशासन के समक्ष उठा रहे

कश्मीर भी कोरोना से कराह रहा है। तेजी से बढ़ते मामलों ने कश्मीरियों में अलग सी बेचैनी और चिंता को बढ़ा दिया है। अजीब सी खामोशी पसरी हुई है। वीरान सड़कों पर सुरक्षाकर्मी मुस्तैद हैं। बीते दिनों आतंकियों ने भी कुछ हलचल दिखाई, जिन्हें काबू कर लिया गया। अलगाववादियों और जिहादियों का गढ़ कहलाने वाले बारामुला, हंदवाड़ा और बड़गाम के दूरदराज के इलाकों में कुछ युवक-युवतियां बेखौफ होकर आम लोगों के घरों तक मदद पहुंचा रहे हैं ताकि कोई भूखा न सोए। ये स्थानीय मुस्लिम युवक-युवतियां राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) की इकाई सेवा भारती के कार्यकर्ता हैं।

ये स्वयं सेवक किसी को राशन दे रहे हैं तो किसी को दवाएं। सिर्फ यही नहीं लोगों की दिक्कतों और आवश्यकताओं को भी ये दर्ज करते चलते हैं और फिर प्रशासन के संज्ञान में लाकर समाधान का प्रयास करते हैं। कोरोना संक्रमण पर काबू पाने के लिए जारी इस लॉकडाउन में कश्मीर के कई छिपे रहस्य उजागर होने लगे हैं। श्रीनगर से सटे बड़गाम में ही नहीं, बारामुला और हंदवाड़ा में भी सेवा भारती के कार्यकर्ताओं द्वारा, जिनमें युवतियों की संख्या अधिक है, जरूरतमंदों में राहत सामग्री वितरित की जा रही है। कश्मीर में ईंट भट्ठों पर काम करने वाले अन्य राज्यों के मजदूरों, गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले स्थानीय लोगों, दिव्यांगों, बुजुर्गों तक ये नियमित पहुंच रहे हैं। उनकी जरूरत के मुताबिक राशन सामग्री, दवाएं, साबुन, सैनिटाइजर व अन्य आवश्यक सामान वितरित किया जा रहा है।

बाशिंदों की मदद इमदाद करना हमारा फर्ज... डंगीबाचा सोपोर में राहत सामग्री जरूरतमंदों तक पहुंचाने में जुटी मुबीना बेगम ने कहा कि अब आप मुझसे यह सवाल मत पूछना कि मुसलमान होकर सेवा भारती के साथ क्यों हो? हमारा मकसद लोगों की सेवा करना है, वतन की सेवा करना है। भारत हमारा मुल्क है, उसकी और उसके बाशिंदों की मदद इमदाद करना हमारा फर्ज। हमारा मजहब भी हमें यही सिखाता है। आपकी तसल्ली के लिए मैं बता देती हूं कि यहां कम से कम डेढ़ सौ लड़कियां हैं जो सेवा भारती की सक्रिय कार्यकर्ता हैं। अगर कोई सेवा भारती या आरएसएस से जुड़ने से मजहब को नुकसान पहुंचता तो फिर हम इसका हिस्सा क्यों बनतीं। हां, हम तो सभी को यही कहते हैं कि अगर आपको लोगों की मदद करनी है तो हमारे साथ चलो। सेवा भारती के स्थानीय कार्यकर्ताओं ने ग्रामीण और दूरदराज के इलाकों को चुना है क्योंकि अन्य लोगों का ध्यान सिर्फ शहरी इलाकों पर है। मजदूरों और ग्रामीणों के पास मदद आसानी से नहीं पहुंच पाती है, इसलिए हमने इन इलाकों को चुना है।

कश्मीर का दुश्मन बताते हैं... जानकारों ने बताया कि कश्मीर में अलगाववादी और जिहादी तत्व हमेशा से ही आरएसएस व उससे जुड़े संगठनों को इस्लाम और कश्मीर का दुश्मन करार देते आए हैं।

मुस्लिम राष्ट्रीय मंच और भाजपा से जुड़े चंद चेहरों को अगर छोड़ दिया जाए तो वादी के मुस्लिमों में शायद ही कोई आरएसएस से प्रत्यक्ष-परोक्ष संबंध रखता हो। ऐसे में इन सैकड़ों स्थानीय स्वयं सेवकों का यह सेवाकार्य लोगों की आंखों पर चढ़ाया गया चश्मा उतारने का भी काम कर रहा है।

जागरण विशेष की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/jagran-special

बारामुला में एक परिवार तक खाद्य सामग्री पहुंचाती सेवा भारती की स्थानीय कार्यकर्ता। जागरण

बारामुला में मास्क वितरित करने में जुटी सेवा भारती की एक स्थानीय कार्यकर्ता। जागरण

कौन कहता है कि संघ हमारा दुश्मन है...

बारामुला के ओल्डटाउन के बाहरी छोर पर एक बस्ती में सेवा भारती के स्वयं सेवक से राशन सामग्री ले रहे गुलाम मुहम्मद ने कहा कि आप कैसे कह सकते हैं कि आरएसएस हमारा दुश्मन है। यह उन लोगों का दुश्मन हो सकता है जिनका मकसद हम लोगों को हमेशा जाहिल बनाए रखना होगा। अगर यह हमारे दुश्मन हैं तो फिर हमारे कश्मीर के पढ़े लिखे मुस्लिम लड़के-लड़कियां क्यों इसके साथ जाएंगे।

घर-घर अखबार पहुंचा जन-जागरण में जुटीं 'कर्मयोगी' बेटियां

विजय प्रताप सिंह, फर्रुखाबाद

- घरों में सिमटे लोगों तक अखबार पहुंचाने में जुटीं फर्रुखाबाद की दो बेटियां
- हर किसी के लिए प्रेरणा हैं 'कर्मयोगी' की ये दो बेटियां रोजाना सुबह शहर में समाचार पत्र वितरित करती हैं तो शेष समय पढ़ाई
- पहली बार बेटियों ने काम की इजाजत मांगी तो मुंह देखते रह गए थे पिता

आज जब कोरोना से लड़ाई लड़ने के लिए लोग घरों में सिमटे हुए हैं, ऐसे में उन्हें अपने आस-पड़ोस और देश-दुनिया की हरसंभव जानकारी मुहैया कराने के लिए शहर की दो बेटियां प्राणपण से जुटी हुई हैं। कर्मयोग का संदेश देते हुए कोरोना से बिना डरे लोगों तक अखबार पहुंचा रही हैं। सुबह साढ़े चार बजे उठकर सेंटर पर जाकर अखबार उठाना, बांटना जितनी तन्मयता से होता है, उतनी ही तन्मयता से वह पढ़ाई भी करती हैं।

स्वस्थ समाज

फर्रुखाबाद, उप्र की इन दोनों कर्मयोगी बेटियों की चाहत प्रशासनिक सेवा में जाने की है और इस जच्बे को जीवंत किए हुए उनके पैर अपनी मंजिल पर हमेशा समय से आगे बढ़ते हैं। ये दो बेटियां हैं मीनाक्षी मिश्र और हिमांशी मिश्र। फतेहगढ़ के मोहल्ला नगला दीना निवासी 55 वर्षीय सतेंद्र मिश्र काफी समय से कर्मयोगी (दैनिक जागरण परिवार अपने उन अग्रणी सहयोगियों को जो हर मौसम, हर रुकावट को भेद रोज सवेरे आपके घरों तक जागरण पहुंचाते हैं, कर्मयोगी कह संबोधित-सम्मानित करता है) हैं। उनकी तीन बेटियां हैं, जो पिता को बेटों की कमी अखरने नहीं देती हैं। 17 साल की मीनाक्षी ने दो साल पहले जब कर्मयोगी पिता से समाचार पत्र घरों तक पहुंचाने का काम करने की मंशा जताई तो वह हैरान होकर मुंह देखने लगे। वह इसके लिए तैयार नहीं थे लेकिन मीनाक्षी ने दोबारा जोर देकर 15 साल की बहन हिमांशी के साथ यही काम करने की बात कही तो पिता को उनकी बात माननी पड़ी। बेटियां इस बहाने पिता का हाथ भी बंटाना चाहती थीं। आत्मविश्वास से लबरेज दोनों बेटियां कर्मयोगी पिता के इस काम को बखूबी अंजाम दे रही हैं। दोनों बहनें सुबह सेंटर से समाचार पत्र लेने के बाद फतेहगढ़ के सिविल लाइन, नवदिया, तिर्वा कोठी, बनखड़िया, जेएनवी रोड पर घरों में पहुंचाती है। वह कहतीं हैं, जब लोग घरों में हैं, ऐसे में अखबार उनका सबसे बड़ा सहारा है। हमारा दायित्व है कि हम उन तक उनके आस-पड़ोस और देश-दुनिया की खबर पहुंचाएं। मीनाक्षी ने कहा, यूं तो टीवी पर भी खबरें मिल जाती हैं, लेकिन अखबार में आस-पड़ोस की भी तमाम ऐसी खबरें होती हैं, जो स्थानीय निवासी को सजग रखने के लिए आवश्यक हैं, यह टीवी पर नहीं होती हैं। इसीलिए हमने अब तक एक भी दिन का गेप नहीं किया। खासकर ऐसे दौर में अखबार वह एकमात्र साधन है जो अहम सूचनाओं से तो अपडेट रखता ही है, इसके जरिये भय और बोझिलता को कम करता है। कई लोगों के लिए तो यह दिन की मानसिक खुराक ही है। हम इसे लोगों तक हर हाल में पहुंचाने को कटिबद्ध रहती हैं।

सरोकार की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/positive-news

फर्रुखाबाद में साइकिल से अखबार वितरित करने जातीं मीनाक्षी मिश्रा। जागरण

घरों में अखबार पहुंचाती हिमांशी मिश्रा। जागरण

मैं बीएससी फाइनल कर रही हूं। सुबह जल्दी अखबार वितरण के बाद पढ़ाई करती हूं। सरकारी नौकरी में जाने की ख्वाहिश है। -मीनाक्षी मिश्र

मैं हाई स्कूल में हूं। दो घंटे अखबार वितरण के बाद पढ़ाई करती हूं। पढ़ लिख कर प्रशासनिक सेवा में जाना चाहती हूं ताकि पिता की मदद कर सकूं। -हिमांशी मिश्र

मेरी बेटियों ने कभी बेटे न होने का अहसास नहीं होने दिया। वह काम में हाथ बंटाती हैं तो मन को सुकून मिलता है। कई बार तो बाइक भी ले जाती हैं। -सतेंद्र मिश्र, कर्मयोगी

इस सराहना का हकदार है आपका समाचार पत्र वितरक

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

- मार्च के साथ अप्रैल के बिल का अग्रिम भुगतान कर संदेश दीजिए कि आप उनकी कर्तव्यनिष्ठा का सम्मान करते हैं

महीने के पहले सप्ताह में आप हमेशा अपने समाचार पत्र वितरक का बिल भुगतान करते हैं। वह समय आ गया। संभव है कि लॉकडाउन के कारण समाचार पत्र वितरक आपके दरवाजे न आ सके। ऐसे में सुविधाजनक ऑनलाइन विकल्प चुनकर उसके बिल का भुगतान कर दीजिए, पर सिर्फ मार्च का नहीं। इस बार आपको मार्च के साथ अप्रैल का भी अग्रिम भुगतान करना है। सिर्फ इतना कर आप यह संदेश दे सकेंगे कि आप अपने समाचार पत्र वितरक की कर्तव्यनिष्ठा का सम्मान करते हैं और उसका हर तरह सहयोग करने को तैयार हैं।

वैसे तो समाचार पत्र वितरक का कार्य हर दिन कठिन होता है, पर कोरोना संकट के बीच तरह-तरह की अफवाहों और आशंकाओं से जूझते हुए उसने जिस साहस के साथ हमेशा की तरह आपके दरवाजे समाचार पत्र पहुंचाना जारी रखा, वह कतई आसान नहीं है। इसके लिए वह आपकी सराहना का हकदार है।

बेहतर होगा कि संकट की इस घड़ी में आप आर्थिक सहयोग कर उसकी कर्तव्यनिष्ठा की सराहना करिए। आपके लिए एक महीने के बिल का अग्रिम भुगतान बिल्कुल मामूली बात है, पर सभी ग्राहकों की उदारता का योग उसके परिवार का भरण-पोषण सुगम कर देगा। आपके वितरक ने पिछले महीने आपको जो बिल दिया था, उस पर उसका मोबाइल नंबर लिखा है। आप उसे कॉल करके उसके एकाउंट डिटेल पूछ लीजिए और अपनी सुविधानुसार ऑनलाइन भुगतान कर दीजिए। यदि इसके अलावा भुगतान का कोई विकल्प है तो आप उसे भी चुन सकते हैं। इसी तरह समाचार पत्र वितरकों के पास भी विकल्प है कि वे कॉल करके या मैसेज के जरिये अपने ग्राहकों को अपना एकाउंट की डिटेल बता दें ताकि वे ऑनलाइन बिल भुगतान कर सकें और उन्हें किसी प्रकार की परेशानी न हो।

5 फीसद घटा है कार्बन का उत्सर्जन लॉकडाउन की वजह से। इसी के साथ धरती का शोर और कंपन भी कम हो गया है।

गरीबों का तारणहार बना एनआरआइ भांवरा परिवार

कोरोना के योद्धा

वरामपाल भारद्वाज, माहिलपुर/होशियारपुर

होशियारपुर के कस्बा माहिलपुर के गांव गोहगड़ो में अपने घर पर (बाएं से) परमजीत सिंह, वरिंदर सिंह भांवरा, सुरिंदर कौर भांवरा, कुलवीर कौर व जसविंदर कौर भांवरा। जागरण

जब-जब भारत में परिस्थितियां विषम हुई हैं, तब-तब यहां के लोग अपने देशवासियों की मदद के लिए आगे आए हैं। इस बार जब पूरा देश कोरोना वायरस के प्रकोप से जूझ रहा है और एहतियात के तौर पर देशव्यापी लॉकडाउन जारी है, ऐसे में एक एनआरआइ परिवार ने आगे आकर अपने गांव के लोगों के लिए जरूरी सामान उपलब्ध कराने का बीड़ा उठाया है। वहीं, 82 साल की एक महिला ने अपनी जमा पूंजी से प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री राहत कोष में दान देने की पहल की है...

पंजाब में जब भी कोई मुसीबत खड़ी हुई है विदेश में बैठे पंजाबी एनआरआइ ने लोगों की सहायता दिल खोलकर की है, चाहे वह खुद भी मुसीबतों का सामना कर रहे हों। ऐसे ही अब भी देखने को मिला जब सारी दुनिया के साथ-साथ भारत के लोग कोरोना वायरस से बचने के लिए सरकार द्वारा घोषित लॉकडाउन से अपने घरों में बंद हैं। कई व्यक्ति जो दिन में मजदूरी करने के बाद अपने परिवार को खाने खिला पाते हैं, उन लोगों को लॉकडाउन के कारण बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे लोगों की मदद के लिए पंजाब में जहां कई समाजसेवी संगठन आगे आए हैं, वहीं एक एनआरआइ परिवार ने भी जिम्मेदारी संभाली है।

पंजाब के होशियारपुर के गांव गोहगड़ो के एनआरआइ भांवरा परिवार ने सोशल मीडिया व गांव में लाउडस्पीकर पर एलान करते हुए गांववासियों को कहा है कि वे अपने घरों के अंदर रहें और जिन लोगों के पास खाने का सामान नहीं है उनके घर पर राशन पहुंचा दिया जाएगा। भांवरा परिवार ने लोगों को राशन से लेकर दवाएं तक निःशुल्क देने का एलान करते हुए कहा कि इस संकट की घड़ी में वे गांववासियों के साथ खड़े हैं। सुरिंदर कौर भांवरा व उनके बेटे व कण्व ग्रीन फाउंडेशन के प्रधान वरिंदर सिंह भांवरा, इंदरजीत सिंह भांवरा व सुखविंदर सिंह भांवरा द्वारा लिए गए फैसले की प्रशंसा इलाके में हो रही है। इस घोषणा के बाद अन्य गांवों के एनआरआइ भी अपने गांव के जरूरतमंद लोगों की सहायता करने के लिए आगे आने शुरू हो गए हैं। यहां यह बताना भी जरूरी है कि भांवरा परिवार समय-समय पर गांववासियों की सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहता है। गांव में यह परिवार जरूरतमंद लोगों की सहायता करता रहता है। युवा पीढ़ी को सामाजिक बुराइयों से दूर रखने के लिए यह परिवार खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन भी करता है। कण्व ग्रीन फाउंडेशन के प्रधान वरिंदर सिंह भांवरा 24 मार्च से ही अपने साथियों के सहयोग से माहिलपुर इलाके के जरूरतमंद लोगों के घरों पर राशन सामग्री व जीवनरक्षक दवाएं निःशुल्क उपलब्ध करवा रहे हैं।

सुरिंदर कौर भांवरा व वरिंदर सिंह भांवरा ने सभी एनआरआइ को अपील करते हुए कहा कि वे लोग अपने गांव के जरूरतमंद लोगों को राशन सामग्री उपलब्ध कराएं, ताकि संकट की इस घड़ी में लोगों को बाहर निकलने से रोका जा सके। बता दें माहिलपुर व गढ़शंकर इलाके में समाजसेवी संगठन लोगों तक राशन सामग्री पहुंचा रहे हैं। नांगा फुटबॉल क्लब के सदस्य घर-घर लोगों को राशन पहुंचा रहे हैं। भांवरा परिवार ने चार फोन नंबर जारी किए हैं, ताकि लोग उन्हें फोन पर अपनी समस्या बता सकें। गांव की आबादी करीब 700 है और इनमें से करीब 200 जरूरतमंदों को राशन मुहैया कराया जा रहा है।

वरिंदर सिंह भांवरा 1989 में गए थे दुबई: 1989 में बारहवीं की पढ़ाई करने के बाद वरिंदर सिंह दुबई में अपने पिता केहर सिंह के पास चले गए और उनके काम में हाथ बंटाने लगे। इस दौरान उनके दोनों भाई सुखविंदर सिंह और इंदरजीत सिंह भी दुबई उनके पास पहुंचकर उनके साथ सहयोग करने लगे। शारजाह में1994 में ट्रांसपोर्ट का काम शुरू किया। 2001 में उन्होंने महिलपुरिया ट्रेलर के नाम से शारजाह में इंडस्ट्री शुरू की तो फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। 2012 में महिलपरी ट्रांसपोर्ट एलसीसी के नाम से शुरू की जो निरंतर चल रही है। इनके साथ करीब 250 लोग जुड़े हुए हैं जो साथ में काम कर रहे हैं। दुबई में भाई इंद्रजीत सिंह भांवरा और बेटा जसमीत सिंह भांवरा बिजनेस संभाल रहे हैं।

82 वर्षीय महिला ने पेश की मिसाल

जागरण संवाददाता, रुड़की

जहां एक ओर लोग कोरोना वायरस से जंग लड़ रहे हैं, वहीं उत्तराखंड की 82 वर्ष की एक बुजुर्ग महिला समाज कल्याण की एक अनूठी मिसाल पेश कर सबके लिए उदाहरण बन गई हैं। दरअसल, इस वयोवृद्ध महिला बैंक प्रबंधक को घर बुलाकर उन्हें प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री राहत कोष के लिए 51-51 हजार रुपये के चेक दिए। इसके अलावा 11 हजार रुपये जरूरतमंदों को खाना खिलाने के लिए भी दिए। बैंक प्रबंधक ने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर बुजुर्ग महिला की भावनाओं से अवगत कराया है।

विपदा की इस घड़ी में तमाम लोग मदद के लिए हाथ बढ़ा रहे हैं। इसी कड़ी में रुड़की की आवास विकास कॉलोनी में रहने वाली 82 साल की कृष्णा देवी भी शामिल हैं। 27 मार्च को महिला अपने पड़ोस में रहने वाले भारतीय स्टेट बैंक के शाखा प्रबंधक वीके गुप्ता को घर बुलाया और बताया कि उन्हें 14 हजार रुपये मासिक पेंशन मिलती है। इसमें से वह कुछ राशि प्रधानमंत्री राहत कोष में रुपये भेजना चाहती हैं। कृष्णा देवी ने 51 हजार रुपये का चेक बैंक प्रबंधक को सौंपा। चेक में गलती से इतनी रकम न भर गई हो, इसकी पुष्टि के लिए बैंक प्रबंधक ने उन्हें बताया कि यह चेक तो 51 हजार का है तो महिला ने हामी भरी। महिला ने 11 हजार रुपये का चेक जरूरतमंदों को खाना खिलाने के लिए अलग से दिया।

कृष्णा देवी फाइल

तीन दिन बात फिर बुलाया और चेक दिया

कृष्ण देवी यहीं नहीं रुकीं। तीन रोज बाद उन्होंने फिर से बैंक प्रबंधक को अपने घर बुलाया और उन्हें 51 हजार रुपये का चेक मुख्यमंत्री राहत कोष के लिए दिया। बैंक प्रबंधक ने बैंक स्टाफ के साथ यह बात साझा की तो उन्होंने महिला की खुले मन से तारीफ की। बैंक प्रबंधक ने बुजुर्ग महिला की भावनाएं प्रधानमंत्री तक पहुंचाने के लिए पत्र लिखा है। महिला के पति की काफी पहले मृत्यु हो चुकी है, वह अकेली रहती हैं।

कृष्णा देवी की दरियादिली बाहर आने के बाद चारों ओर उनकी प्रशंसा हो रही है।

हारा कोरोना
दृढ़ इच्छाशक्ति की जीत

कोरोना विजेता

रजिया नूर, श्रीनगर

अगर सकारात्मक सोच और मजबूत इच्छाशक्ति के बल पर आगे बढ़ा जाए तो बड़ी से बड़ी परेशानी को भी मात दी जा सकती है। कुछ ऐसा ही कर दिखाया है कश्मीर की इस महिला ने जो वहां की पहली कोरोना पॉजिटिव पाई गई थी। इलाज के दौरान उसने सभी नियमों का पालन किया और अंतत: रिपोर्ट निगेटिव हो गई...

कोरोना वायरस की जांच रिपोर्ट पॉजिटिव आने पर किसी मरीज और उसके परिवार पर क्या बीतती होगी, इसका अंदाजा लगाना भी मुश्किल है, लेकिन दृढ़ इच्छाशक्ति और सकारात्मक सोच हो तो इंसान बड़ी से बड़ी चुनौती को भी मात दे सकता है। ऐसा ही कुछ कर दिखाया है कश्मीर की पहली संक्रमित 65 वर्षीय महिला और उसके परिवार ने। इस बहादुर महिला ने दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर कोरोना वायरस से 14 दिन लड़कर जंग जीती। महिला की दोबारा टेस्ट रिपोर्ट निगेटिव आई है। हालांकि, रिपोर्ट निगेटिव आने के बाद भी महिला को अस्पताल में ही क्वारंटाइन रखा गया और डॉक्टरों के अनुसार 14 दिन बाद ही छुट्टी दी जा सकती है।

श्रीनगर के खानयार इलाके की रहने वाली महिला सऊदी अरब से उमराह कर लौटी थी। 18 मार्च को उनकी जांच रिपोर्ट पॉजिटिव आई। उक्त महिला कश्मीर में करोना वायरस से संक्रमित होने वाली पहली मरीज थी। इसके बाद प्रशासन ने वायरस को फैलने से रोकने के लिए समूची वादी में पाबंदियां लगा दीं। महिला के पैतृक इलाके को पूरी तरह से सील कर दिया और उसे शेर-ए-कश्मीर आयुर्विज्ञान केंद्र (सौरा) अस्पताल के आइसोलेशन वार्ड और उसके परिजनों को अस्पताल में क्वारंटाइन में रखा गया। अस्पताल में महिला के स्वास्थ में तेजी से सुधार आया।

बीते दिनों महिला का टेस्ट निगेटिव आया। उसके परिवार के अन्य सदस्यों के टेस्ट पहले ही निगेटिव आ गए थे। रिपोर्ट निगेटिव आने से न केवल महिला व उसके परिजन बल्कि डॉक्टर भी उत्साहित हैं।

महिला ने दिया पूरा सहयोग : सौरा मेडिकल इंस्टीट्यूट के मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डॉ. फारूक जान ने बताया कि महिला को कोविड-19 के संक्रमण के अलावा पहले कोई अन्य बीमारी नहीं थी। वह जब हमारे पास पहुंचीं तो हमने तुरंत इसका इलाज शुरू कर हमने उसे विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा अनुमोदित दवाएं देनी शुरू कर दीं। मरीज ने भी पूरा सहयोग किया और हमारी हिदायतों पर अमल किया। नतीजतन अब वह स्वस्थ हो गई हैं। वहीं, सौरा के नोडल अधिकारी डॉ. जीएन यत्तु ने भी कहा कि उक्त महिला व अन्य परिजन पूरी तरह स्वस्थ हैं।

परिवार के लिए 14 जनम से कम नहीं थे 14 दिन

कोरोना वायरस से संक्रमित महिला के परिजनों के लिए 14 दिन 14 जनम से कम नहीं थे। महिला की एक निकट परिजन ने कहा, 'उमराह से लौटने के दो दिन बाद हमारी अम्मी को बुखार हुआ। हमने सोचा शायद खांसी या जुकाम के कारण हुआ है। हम उन्हें अस्पताल लेकर गए तो डॉक्टर ने टेस्ट करवाने की सलाह दी। उनकी कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव आई तो हमारे पांव तले जमीन खिसक गई। प्रशासन ने हमारे घर के साथ पूरे इलाके को सील कर दिया।' महिला के पति, दामाद (आइपीएस), बेटों, बहुओं और बेटियों को भी क्वरटांइन के लिए भेज दिया। एक बेटे और बहु व एक बेटी को घर में ही क्वरटांइन किया गया, जबकि अन्य को अस्पताल में भर्ती किया गया था। परिजन ने कहा कि हमें अम्मी से मिलने नहीं दिया जाता था। डर के मारे हमने अपने मोबाइल फोन भी बंद कर दिए थे, क्योंकि कुछ लोग फोन पर हमसे अजीब अंदाज से सवाल करते थे। इस दौरान हम सभी के भी टेस्ट किए गए। हमें लग रहा था कि हमारी दुनिया खत्म है। अब कोई अस्ताल से जिंदा वापस घर नहीं जाएगा, लेकिन हमारे टेस्ट निगेटिव आए। हमें घर जाने की इजाजत दी गई, लेकिन हमारी अम्मी अस्पताल में रही। हमारे पूरे परिवार ने एक-दूसरे का साथ नहीं छोड़ा और हौसला बनाए रखा।

अगर हम इस महिला की तरह मजबूत इच्छा शक्ति व सकारात्मक सोच से काम लें और पूरी तरह मेडिकल गाइडलाइन पर चलें तो इस घातक बीमारी को हरा सकते हैं।

-डॉ. फारूक जान, मेडिकल सुपरिंटेंडेंट, सौरा मेडिकल इंस्टीट्यूट

'मैं 27 साल से नहीं ऊबा, आप भी रखें हिम्मत'

इनसे सीखें

मृगेंद्र पांडये, रायपुर

जहां एक तरफ पूरी दुनिया कोरोना वायरस से लड़ रही है, वहीं दूसरी ओर हमारे आस-पास ऐसे लोग भी मौजूद हैं जो अपनी सकारात्मक सोच और जीवटता से हमें प्रभावित कर रहे हैं। ऐसी ही एक कहानी है छत्तीसगढ़ के बसंत साहू की, जो एक दुर्घटना के बाद व्हीलचेयर पर आ गए। 27 वर्षों से वह ऐसे ही जीवन बिता रहे हैं, लेकिन अपनी रचनात्मकता के बल पर वह अपने जीवन में ऐसे रंग घोल रहे हैं, जो हमारे लिए मिसाल हैं...

टूटे हाथ में लकड़ी के सहारे ब्रश फंसाकर पेंटिंग बनाते छत्तीसगढ़ के बसंत साहू। नईदुनिया

दिव्यांग बसंत की रचनात्मकता और हौसला लॉकडाउन में लोगों का संबल बन रहा है। टूटे हाथों में लकड़ी के सहारे बंधी कूची जब कैनवास पर हौसले की तस्वीर उकेरती है तो उसमें नसीहत के रंग चटख दिखते हैं। बसंत की पेंटिंग में मोर का जोड़ा तो है, लेकिन एक किसी शाख पर है तो दूसरा उससे दूर। इसके पीछे उनका गहरा संदेश भी है। लॉकडाउन से घर परिवार से दूर फंसे लोगों के साथ ही घर में ऊबते लोगों के लिए भी संदेश है। बसंत कहते हैं कि जब हादसे में अक्षम होने के बाद मैं मोर के इस जोड़े की तरह घर में 27 साल जी सकता हूं, तो 21 दिन के लॉकआउट में आप क्यों नहीं। उनकी यह प्रेरणादायक पेंटिंग खूब वायरल हो रही है।

छत्तीसगढ़ के धमतरी जिला स्थित कुरद निवासी बसंत साहू पैदाइशी दिव्यांग नहीं थे। करीब 27 साल पहले सड़क हादसे में उनका हाथ-पैर टूट गया। उनका शरीर पैरालिसिस का शिकार हो गया। वह चलने में अक्षम होकर व्हीलचेयर पर आ गए। बसंत ने बताया कि सड़क हादसे के बाद भी वे टूटे नहीं, बल्कि मजबूती के साथ जीवन जीने के लिए पेंटिंग बनाना सीखने लगे। अब भी उनका हाथ सही से काम नहीं करता है। बावजूद इसके वह असहनीय दर्द के साथ हाथों में पट्टी बंधाकर पेंटिंग बनने में जुट जाते हैं। बसंत कहते कि वह लगभग 27 सालों से एक तरह से लॉकडाउन में हैं और घर से बाहर कम ही जा पाते हैं। परिवार के सदस्यों के सहयोग से एक से दूसरे कमरे तक ही जा सकते हैं। वह कहते हैं कि इन सबके बावजूद मैं ऊबा नहीं हूं। जीवन में किसी न किसी तरह मनोरंजन तलाश ही लेता हूं। यह सब सकारात्मक सोच से ही संभव हो सका है। यदि व्यक्ति अच्छा सोचे तो कुछ भी कर सकता है। उसका जीवन उसके विचारों से ही आगे बढ़ता है। मैंने जीवन के रंगों को समझने के लिए पेंटिंग का सहारा लिया है।

कोरोना से सुरक्षा करेगा 2 .3 ग्राम का नैनो नैजल फिल्टर

तलाशी राह

जागरण संवाददाता, कानपुर

कोरोना से लड़ने के लिए दुनियाभर के वैज्ञानिक अपने-अपने तरीके से प्रयासरत हैं। इसी कड़ी में आइआइटी कानपुर के विशेषज्ञों ने एक खास उपकरण तैयार किया है, जो इससे बचाने में मददगार साबित हो सकता है...

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) कानपुर ने कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव के लिए महज 2.3 ग्राम का नैनो नैजल ब्रीथिंग फिल्टर बनाया है। इसे आसानी से न सिर्फ नाक पर पहना जा सकता है, बल्कि सैनिटाइजर से साफ भी किया जा सकता है। एक फिल्टर की अनुमानित कीमत 150 रुपये है, जबकि यह 10 से 12 दिन तक चल सकता है। एक फिल्टर के इस्तेमाल के लिए औसत आठ घंटे समय रखा गया है।

संस्थान के रिसर्च स्टेब्लिशमेंट ऑफिसर रवि पांडेय ने पिछले साल बायो इंक्यूबेशन लैब में नैजल फिल्टर तैयार किया था। यह वायु प्रदूषण, बैक्टीरिया व वायरस के लिए था। इस फिल्टर को पेटेंट कराया गया, लेकिन उसका वजन 25 ग्राम था। प्रोटोटाइप बनने के बाद नाक पर टिकने में कुछ समस्या खड़ी हो गई। बिना धागे और इलास्टिक के सपोर्ट करना मुश्किल था। रवि पांडेय ने संस्थान के विशेषज्ञों के साथ ही डॉक्टरों से राय ली। इसके बाद सिलिकॉन मैटेरियल से प्रोटोटाइप बनाया। पहले के मॉडल में नाक से पसीना आने पर फिल्टर भीग जा रहा था। इस बार इस दिक्कत को दूर किया गया है।

फोर लेयर के मास्क की तरह ही नैनो नैजल फिल्टर काम करता है। यह बच्चों की दूध की बोतल के निप्पल की तर्ज पर सिलिकॉन मैटेरियल से बना है। सांस लेने पर दूषित कण फिल्टर में ही रह जाएंगे।

नाक के मुताबिक छह मॉडल बनाए: विशेषज्ञ ने मोटी, पतली, लंबी और चिपटी नाक के अनुरूप छह प्रोटोटाइप विकसित किए हैं। इन्हें जल्द ही पेटेंट कराया जाएगा।

नैनो फिल्टर पूरी तरह से एंटी वायरस है। बैक्टीरिया, वायरस और धूल के कण से बचाव हो सकता है। कुछ कंपनियों से बात हुई है, जल्द ही मार्केट में आएगा।

- रवि पांडेय, रिसर्च स्टेब्लिशमेंट ऑफिसर, आइआइटी

लॉकडाउन के साइड इफेक्ट

कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने के लिए शारीरिक दूरी बनाए रखना आवश्यक है। इसलिए कई देशों ने लॉकडाउन घोषित कर लोगों को अपने घरों में ही रहने को कहा है। इसे सकारात्मक तौर पर लिया जाए तो दोहरा फायदा दिखता है। एक तो आप कोरोना के संक्रमण से बच सकते हैं और दूसरा यह कि फैमिली के साथ क्वालिटी टाइम गुजार सकते हैं, जिसका मौका आपको अपनी व्यस्तताओं की वजह से आमतौर पर मिलता ही नहीं। भारतीय संस्कृति में परिवार की अवधारणा भी ऐसे ही मानसिक जुड़ाव और बंधन को संजोने की है। कई सारे लोग अपने परिजनों के साथ कई तरह के क्रियाकलापों में मशगुल होकर समय खुशी-खुशी गुजार रहे हैं। लेकिन, चीन तथा पश्चिमी देशों में, जहां परिवार की अवधारणा पर भौतिकवाद हावी है, इसका दूसरा पहलू भी सामने आ रहा है। घरेलू कलह और हिंसा बढ़ने की भी रिपोर्ट्स सामने आ रही हैं। इससे परिवार टूटने में अनायास ही तेजी दर्ज की गई है। जानिए अनबन के कुछ ऐसे ही ब्योरे।

क्या हैं पुराने अनुभव

वैसे तो महामारी समाप्त होने के बाद जिंदगी पटरी पर लौटती दिखने लगती है। लेकिन इसके मानसिक और आर्थिक दंश महीनों पीछा करते हैं। हांगकांग में साल 2002-2003 के सार्स महामारी के अध्ययन से पता चलता है कि सार्स के प्रकोप के बाद प्रभावित लोग करीब साल भर तक मानसिक तनाव झेलते रहे। हांगकांग में साल 2004 में तलाक के मामले 2002 के मुकाबले 21 फीसद बढ़ गए थे। जबकि सार्स से करीब 1800 लोग संक्रमित हुए थे और 299 लोग मारे गए थे। इस बार तो चीन में अब तक 80 हजार से ज्यादा लोग संक्रमित हुए तथा 3,300 से ज्यादा मौतें हुई हैं।

कुछ के लिए यादगार पल भी

ऐसा नहीं है कि सबके लिए लॉकडाउन या क्वारंटाइन परेशानी का ही सबब बना है। कुछ ऐसे भी लोग हैं, जिन्हें अपने बीते दिनों की याद में खोने और उसे फिर से महसूस करने का मौका भी मिला है। हांगकांग में रह रही कनाडियाई कलाकार रैचेल स्मिथ कहती हैं, 'होम क्वारंटाइन और दूसरे लोगों से अलग-थलग रहने के दौरान मुझे फिर से यह एहसास हुआ है कि मैंने जिस व्यक्ति से शादी की है, उससे मैं कितना प्यार करती हूं।' उनकी शादी 21 साल पहले हुई थी। इतने सालों में अलग-अलग क्षेत्रों में काम करने के दौरान कभी एक साथ खाली समय व्यतीत का ऐसा मौका मिला ही नहीं। लेकिन लॉकडाउन के दौरान कंप्यूटर पर घर से काम करते हुए बीच-बीच में हम थोड़ा ब्रेक लेकर आपस में बातचीत कर लेते हैं।

तलाक के नियमों में बदलाव पर विचार

तलाक के बढ़ते इन मामलों को देखते हुए चीन की नेशनल पीपुल्स कांग्रेस इस साल के आखिर में तलाक कानून में बदलाव पर विचार कर सकती है। इसके तहत तलाक की अर्जी दायर करने वाले युगल को 30 दिनों का कूलिंग-ऑफ पीरियड दिया जाएगा, जिसके तहत पति-पत्नी अपनी अर्जी वापस ले सकते हैं। मौजूदा समय में तलाक की अर्जी सुनने वाले जज व्यभिचार या परित्यक्त जैसे किसी गंभीर कारण पर विचार कर तलाक मंजूर करते हैं या यदि वे सोचते हैं कि दंपती बहुत ही युवा हैं और जल्दबाजी कर रहे हैं तो तलाक मंजूर करने से मना कर सकते हैं। लेकिन छह महीने बाद यदि फिर से तलाक की अर्जी आती है तो जज मान लेते हैं कि दंपती में आगे बनने वाली नहीं है।

चीन से हुई शुरुआत

यहां तलाक के आंकड़े वार्षिक आधार पर जारी होते हैं, लेकिन मीडिया रिपोर्टों में दावा किया जा रहा है कि कई सप्ताह के लॉकडाउन समाप्त होने के बाद तलाक के मामले बढ़ गए हैं। यह ट्रेंड अमेरिका, ब्रिटेन, इटली जैसे देशों के लिए भी चिंता के कारण हो सकते हैं। सिचुआन प्रांत के शहर शियान तथा दाजहू शहरों में मार्च की शुरुआत में रिकॉर्ड संख्या में तलाक की अर्जियां दाखिल हुई हैं। इसके कारण सरकारी दफ्तरों में बैकलॉग का अंबार लग गया है। हुनान प्रांत में मिलुओ शहर के बारे में मध्य मार्च में सरकारी वेबसाइट की रिपोर्ट के अनुसार, हालात ये बन गए हैं कि तलाक की अर्जियां दाखिल करने वालों की भीड़ इतनी बढ़ गई है कि दफ्तर में काम करने वाले बाबुओं को पानी पीने तक की फुर्सत नहीं मिल रही है। सिटी रजिस्ट्रेशन सेंटर के डायरेक्टर यी शियोयान कहते हैं कि छोटी-छोटी बातों पर तकरार बढ़ी और दंपतियों ने तलाक का फैसला ले लिया। शंघाई में जेंटल एंड ट्रस्ट लॉ फर्म में तलाक मामलों के वकील स्टीव ली बताते हैं कि मध्य मार्च में शहर में लॉकडाउन खुलने के बाद से तलाक के केस 25 फीसद तक बढ़ गए हैं। मध्य जनवरी में जब कोरोना का प्रकोप बढ़ा तो यह समय त्योहारों, खासकर चीन में कई दिनों तक मनाए जाने वाला चंद्र नववर्ष का था। ऐसे में दो महीने घर में बंद रहने से उनमें आपसी खीझ पैदा हुई। लैंगिक हिंसा पर नजर रखने वाले बीजिंग स्थित एक गैरसरकारी संगठन (एनजीओ) की सहसंस्थापक फेंग युआन भी कहती हैं, 'लॉकडाउन के कारण पीड़ितों को समय पर मदद नहीं मिलती, क्योंकि पुलिस तो क्वारंटाइन लागू कराने में व्यस्त रही है। वहीं, पीड़ित महिला की रक्षा के लिए आदेश देने वाले कोर्ट भी बंद रहे हैं।

एक पहलू यह भी

ब्रिटेन में लॉकडाउन के बाद हाल के सप्ताहों में डेटिंग वेबसाइट यूजरों की संख्या में काफी इजाफा हुआ है। ऐसे ही एक वेबसाइट इलिसिटएनकाउंटर डॉट कॉम पर पुरुषों की गतिविधियों में 18 फीसद और महिला की गतिविधियां 12 फीसद बढ़ी हैं। सर्वे के मुताबिक, करीब 74 फीसद पुरुष नई पाबंदियों के कारण बोर हो गए हैं, इसलिए कुछ अलग चाहते हैं। वहीं, करीब दो-तिहाई (64 फीसद) बताती हैं कि साथ में ज्यादा समय व्यतीत करने से उनकी शादी की कमजोरियां सामने आ रही हैं। यूजर यह भी बताते हैं कि वे किस प्रकार से अपने नए पार्टनर को फेसटाइम या स्काइप के जरिए 'एक्स रेटेड' फोटो भेज कर वर्जुअल डेटिंग कर रहे हैं, क्योंकि वे आमने-सामने एक-दूसरे को देख नहीं सकते हैं। (स्रोत: ब्लूमबर्ग)

राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 5 अप्रैल 2020
आजकल
14
www.jagran.com

नमक कानून तोड़ने के लिए दांडी पहुंचे महात्मा गांधी

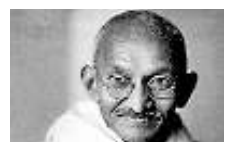

महात्मा गांधी अपने समर्थकों के साथ नमक कानून तोड़ने के लिए आज ही 1930 में दांडी पहुंचे। इसके लिए उन्होंने ऐतिहासिक मार्च निकाला, जिसे नमक सत्याग्रह और दांडी मार्च के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने अपने 78 समर्थकों के साथ 12 मार्च 1930 को इसकी शुरुआत की थी।

केरल की पहली विधानसभा का गठन हुआ

आज ही के दिन 1957 में केरल की पहली विधानसभा का गठन हुआ। त्रावणकोर, कोच्चि और मालाबार के हिस्सों को शामिल करते हुए केरल राज्य का गठन किया गया था। कुल 126 सीटों के लिए चुनाव 28 फरवरी से 11 मार्च के मध्य हुए। कुल मतदाताओं की संख्या 75,14,626 थी।

समावेशी समाज के पुरोधा थे बाबू जगजीवन राम

स्वतंत्रता सेनानी और राजनेता बाबू जगजीवन राम का जन्म आज ही के दिन वर्ष 1908 में बिहार में हुआ था। वे सबसे लंबे समय तक केंद्र में कैबिनेट मंत्री रहे। उनका कार्यकाल 30 वर्षों का रहा। वर्ष 1946 में जवाहरलाल नेहरू की प्रोविजनल कैबिनेट में सबसे युवा मंत्री के रूप में शामिल हुए। श्रम मंत्री के तौर पर उनका कार्यकाल यादगार रहा। उनके बनाए कानून भारत के इतिहास में मजदूरों और कर्मचारियों के हित की दिशा में मील का पत्थर माने जाते हैं। वे वर्ष 1977 से 1979 तक देश के उप प्रधानमंत्री भी रहे। 6 जुलाई 1986 को उनका देहांत हो गया।

अपने तनाव को वश में करें और सेहतमंद रहें

सकारात्मक पहल ▶ इसके लिए त्रिस्तरीय फार्मूला हो सकता है कारगर, घरों में रह रहे लोगों के लिए यह कवायद बड़े काम की

न्यूयॉर्क टाइम्स से

वाशिंगटन :कोरोना की चपेट में आने से बचने के लिए अमेरिका सहित अनेक देशों में करोड़ों लोग घरों में रहने को मजबूर हैं। 24 घंटे घर में रहने के कारण लोगों में तनाव भी बढ़ रहा है। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है इस इस तनाव को पहचानकर ठीक से निदान किया जाए तो यह सेहत के लिए फायदेमंद भी साबित हो सकता है।

दरअसल एक शोध हमें इस बारे में राह दिखा सकता है। करीब एक दशक तक किए गए अध्ययन में पाया गया है कि तनाव का प्रकार और उसकी मात्रा सेहत के लिए इतनी नुकसानदेह नहीं होती जितनी कि हमारी मनोदशा। दूसरे शब्दों में हमारा स्वास्थ्य इस तनाव से कितना प्रभावित होगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम इसे किस रूप में लेते हैं।

तनाव के उच्चतम स्तर पर रहने वाले करीब 30 हजार अमेरिकियों पर किए गए अध्ययन के अनुसार तनाव को घातक मानने वालों में 43 फीसद की मौत का कारण तनाव हो सकता है। वहीं जो इस तनाव को घातक नहीं मानते उनकी इससे मौत की आशंका न के बराबर होती है।

शोधकर्ताओं के अनुसार हम लोगों में तनाव के प्रति अपना रवैया बदलने की क्षमता है। वर्ष 2008 की मंदी के दौरान फाइनेंसियल सेक्टर के कर्मचारियों पर किए गए शोध के अनुसार उनसे अपने तनाव के प्रति अपनी सोच बदलने को कहा गया।

तीन स्तर की इस तकनीक पर काम करने के बाद इन सभी में तनाव के नकारात्मक असर में काफी कमी देखी गई। उनकी काम करने की क्षमता काफी बढ़ गई। खास बात यह रही कि इस दौरान उन्हें उन्हीं तनावपूर्ण स्थितियों में काम करने दिया गया। वे भी जान रहे थे कि उनका

प्रतीकात्मक

तनाव कम नहीं हुआ, लेकिन उनके बदले रवैये से चीजें आसान हो गईं।

नैवी सील्स कमांडो, छात्रों और बड़े बिजनेस लीडर्स पर किए गए सर्वे से साबित होता है कि हम भी अगर तनाव से निपटने के लिए त्रिस्तरीय फार्मूले पर काम करें तो इस समस्या से उबर सकते हैं।

पहला कदम : अपने तनाव की पहचान करें

तनाव को वश में करने के लिए सबसे पहले आपको इसकी पहचान करनी होगी। यह काम हमें बहुत ध्यान से करना होगा। जब हम तनाव की पहचान करते हैं तो हम दिमाग के उस हिस्से (अमेगडला, जिससे भय उत्पन्न होता है) से बाहर प्रिफ्रंटल कोरटेक्स से सोचने लगते हैं। सरल शब्दों में जब हम तनाव की पहचान कर लेते हैं तो भय के माहौल से बाहर आ जाते हैं।

दूसरा कदम : अपने तनाव को स्वीकार करें

जब आपको अपने तनाव की पहचान हो जाए तो उसे स्वीकार करने का अभ्यास करें। ऐसा करने के बाद हम उसे सकारात्मक विचारों और मूल्यों से जोड़ें। आपको विचार करना होगा कि किन प्रेरक बातों व मूल्यों के लिए आप इस तनाव को जी रहे हैं।

तीसरा कदम : तनाव का इस्तेमाल करें

अपने तनाव को बुनियादी मूल्यों से जोड़ने के बाद जो सबसे जरूरी काम है वह यह देखना है कि इस तनाव से आपका जो मुख्य लक्ष्य है और जो बातें सबसे महत्वपूर्ण हैं वे क्या हासिल हो पा रही हैं। इस तनाव की वजह से क्या आपके परिवार की सही देखभाल हो पा रही है। आपके आस-पास के लोगों का हित हो रहा है। इन विचारों से आप अपने तनाव को वश में करने में कामयाब हो जाएंगे। इस तरह के अभ्यास से आप अपने तनाव को ऊर्जा में बदल लेंगे। यह हम पर हावी होकर सेहत को बिगाड़ नहीं पाएगा।

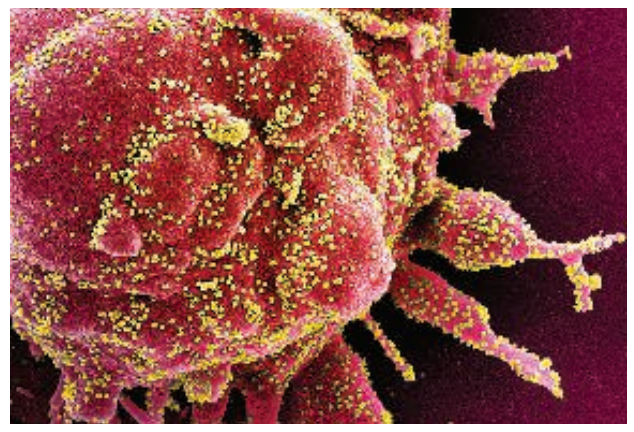

नोवल कोरोना वायरस से संक्रमित एपाप्टोसिस सेल (रेड) की कलराइज्ड स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोग्राफ। एक मरीज के सैंपल से पृथक्कृत तस्वीर में वायरस पार्टिकल यलो में हैं। यह तस्वीर अमेरिका के मैरीलैंड स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एलर्जी एंड इनफेक्सियस डिजीज (एनआइएआइडी) के इंटीग्रेटेड रिसर्च फैसिलटीज (आइआरएफ) में ली गई। रायटर

कोरोना का सफाया कर सकती है परजीवी रोधी दवा

शोध अनुसंधान

नए कोरोना वायरस के लिए उपचार तलाशने की दिशा में हो रहे अध्ययनों के बीच ऑस्ट्रेलियाई शोधकर्ताओं को एक अहम सफलता मिली है। उन्होंने पाया कि एक आम एंटी-पैरासाइटिक या परजीवी रोधी दवा इस खतरनाक वायरस को खत्म कर सकती है। लैब में यह दवा महज 48 घंटे में कोरोना वायरस को मारने में प्रभावी पाई गई है। एंटी-पैरासाइटिक दवाएं परजीवी से होने वाली बीमारियों के इलाज में काम आती है। एंटीवायरल रिसर्च पत्रिका में छपे ऑस्ट्रेलिया की मोनाश यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं के अध्ययन से जाहिर होता है कि इवरमेक्टिन दवा की एक खुराक कोशिका स्तर पर कोरोना वायरस की वृद्धि को रोक सकती है। परजीवी रोधी यह दवा एचआइवी, डेंगू, इंफ्लुएंजा और जीका वायरस के खिलाफ पहले ही प्रभावी पाई जा चुकी है। प्रमुख शोधकर्ता डॉ. केली वेजस्टाफ ने कहा, 'हमने पाया कि एक खुराक भी 48 घंटे के अंदर सभी वायरल आरएनए का सफाया कर सकती है। हालांकि इंसानों पर आजमाने से पहले अभी इसके और परीक्षणों की जरूरत है।' -आइएएनएस

वाटर ट्रीटमेंट से खत्म हो सकता है कोविड-19

शोधकर्ता कोरोना वायरस (कोविड-19) को खत्म करने में वाटर ट्रीटमेंट विधियों में संभावनाएं तलाश रहे हैं। उनका कहना है कि यह जानने के लिए अभी और जांच की जरूरत है कि क्या ये विधियां कोरोना का सफाया करने प्रभावी हो सकती हैं या नहीं? शोधकर्ताओं के अनुसार, कोविड-19 महामारी की वजह माने जाने वाले खतरनाक सार्स-कोवी-19 समेत कई कोरोना वायरस कई दिनों तक सीवेज और पेयजल में भी संक्रामक रह सकते हैं। ये वायरस वाष्पीकरण या स्प्रे के जरिये भी हवा में प्रवेश कर सकते हैं। अमेरिका की कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने कहा कि विकसित देशों की सरकारों को जल और सफाई व्यवस्थाओं को मजबूत करना चाहिए। -आइएएनएस

इधर-उधर की

महंगे कपड़े पहनकर कूड़ा डालने का चैलेंज

सिडनी, एजेंसी : कोरोना के कारण लोगों को बाहर निकलने का मौका नहीं मिल रहा है और उनके घरों में पार्टी में पहनने वाले कपड़े सिर्फ अलमारियों की शोभा बढ़ा रहे हैं। एक महिला ने इसका बेहद रचनात्मक हल निकाला है, जो महिलाओं को काफी पसंद आ रहा है। डेनियेले आस्के ने एक मनोरंजन प्रवृत्ति शुरू की है। जिसमें महिलाएं कूड़ा डालने के लिए फैंसी ड्रेस पहनकर के बाहर निकल रही हैं। ऐसा करते हुए ऑस्ट्रेलिया के क्वींसलैंड की रहने वाली डेनियल ने खुद की भी तस्वीर शेयर की है। उन्होंने फेसबुक ग्रुप बनाया और अपना विचार प्रस्तुत किया। इसके बाद महिलाओं को उनका यह विचार काफी पसंद आया। अब महिलाएं एक दूसरे को ऐसा करने की चुनौती दे रही हैं।

आंखों में बसने लगे ओझल तारे

रमेश चंद्रा, नैनीताल

- देश-दुनिया के महानगरों से इन दिनों देखे जा सकते हैं बड़े व चमकदार तारे
- लॉकडाउन के चलते प्रदूषण की कमी ने आसमान को कर दिया है साफ

झिलमिल सितारों की रोशनी। चमकता चांद। दक्षिण-पूर्व कोने पर दमकते सप्तऋषि मंडल। बृहस्पति, शनि, बुध व नेपच्यून के निखार का क्या कहना। ध्रुव तारे को भी खोजने की जरूरत नहीं पड़ रही। छत की तरफ नजर उठाते ही सभी साफ नजर आ रहे। इनमें तो कुछ टेलीस्कोप से भी नजर नहीं आ रहे थे। यह संभव हो सका है लॉकडाउन से। यह हमें कोरोना के संक्रमण से बचा रहा है तो पर्यावरण की भी सेहत दुरुस्त कर रहा है। प्रदूषण के कारण जो ग्रह-नक्षत्र आंखों से ओझल हो चुके थे वह भी इन दिनों करीब आ गए हैं। अंतरिक्ष के रहस्यों का अध्ययन करने वालों के साथ-साथ आमजन के लिए यह बदलाव सुखद है।

नैनीताल स्थित आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एरीज) के खगोल वैज्ञानिक डॉ. शशिभूषण पांडे बताते हैं कि कोरोना महामारी से भारत समेत दुनिया के अधिकतर देश आहत और परेशान हैं। इस बीच लॉकडाउन से धरती पर ही नहीं आसमान के स्तर पर भी प्रदूषण नाममात्र रह गया है। इन दिनों सांझ ढलने के बाद शुक्र यानी वीनस को पश्चिम के आकाश में टिमटिमाते बल्ब की तरह देखा जा सकता है। कृतिका नक्षत्र अपनी अलग चमक बिखेर रहा है। इनके अलावा बृहस्पति, शनि को भी स्पष्ट देखा जा सकता है। नेपच्यून व बुध को टेलीस्कोप से निहार सकते हैं। हालांकि पहले प्रदूषण के कारण यह संभव नहीं था। इन दिनों नजर आ रहे आसमान की कल्पना करना तो दूर ही था।

भारतीय तारा भौतिकी संस्थान बेंगलुरु के सेवानिवृत्त वैज्ञानिक प्रो. आरसी कपूर बताते हैं कि मानवीय व मशीनी गतिविधियां न्यून हो जाने से वातावरण अभी शांत है। दिन में आसमान साफ हो चला है। रात में टिमटिमाते तारे अनोखी चमक बिखेरते नजर आ रहे हैं। यह वातावरण खगोलीय अध्ययन के लिए भी बेहद उपयोगी है। अगर आगे भी लॉकडाउन रहा तो वायु प्रदूषण में और कमी आएगी।

लॉकडाउन से प्रदूषण का स्तर न्यून हो गया है। खगोलीय दृष्टि से तारों को निहारने के लिहाज से भी यह बेहद अलग अनुभव है। लॉकडाउन और आगे बढ़ा तो वायु प्रदूषण में और कमी आएगी।

- डॉ शशिभूषण पांडे, खगोल वैज्ञानिक एरीज

शुक्र के पास आया कृतिका नक्षत्र

डॉ. शशिभूषण पांडे ने कहा कि आठ साल बाद तीन अप्रैल को एक और संयोग बना। कृतिका नक्षत्र के शुक्र के नजदीक आने का मनमोहक नजारा दिखा। वीनस इस समय वैसे ही अधिक चमकीला नजर आया।

स्टारशिप के प्रोटोटाइप का तीसरा परीक्षण भी हुआ असफल

सैन फ्रांसिस्को, आइएएनएस : स्पेस-एक्स कंपनी के मालिक एलन मस्क के अगली पीढ़ी के अंतरिक्ष यान 'स्टारशिप' (एसएन3) के प्रोटोटाइप का तीसरा परीक्षण भी असफल रहा है। टेक्सास के बोका चीका स्थित कंपनी के परीक्षण स्थल पर प्रेशर टेस्ट के दौरान यह फट गया। परीक्षण असफल होने के थोड़ी देर बाद मस्क ने ट्वीट करके कहा कि इस संबंध में उपलब्ध आंकड़ों का विश्लेषण किया जाएगा, लेकिन लगता है कि कंफिगरेशन की गलती के चलते ऐसा हुआ है।

घटना से जुड़े एक वीडियो में प्रोटोटाइप का ऊपरी हिस्सा फटता हुआ दिखाई दे रहा है। वहीं टेक्नोलॉजी और साइंस से जुड़ी एक वेबसाइट के मुताबिक, विस्फोट इसलिए हुआ, क्योंकि लिक्विड नाइट्रोजन को रॉकेट के प्रणोदक टैंक में डाला गया था। यह स्टारशिप प्रोटोटाइप का तीसरा असफल परीक्षण है।

बॉलीवुड अपडेट

रश्मि देसाई ने शुरू किया अपना 'आरडी' शो

घर पर रहकर एएसतारे काफी रचनात्मक हो रहे हैं। वक्त बिताने के लिए कोई न कोई काम कर रहे हैं। अभिनेत्री रश्मि देसाई भी क्रिएटिव काम करते रहने में यकीन रखती हैं। उन्होंने अब सोशल मीडिया पर अपना शो शुरू किया है, जिसका नाम है 'आर डी' शो। इस शो में रश्मि देसाई लाइव बातचीत करेंगी। उनका कहना है कि उन्हें घर में बैठने की आदत नहीं है। ऐसे में वह कुछ करने की सोच रही थीं। तब उनकी मम्मी ने इसका सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि मैं दूसरों से सोशल मीडिया पर जाकर लाइव बातचीत कर रही थी, तब मेरी मम्मी ने मुझसे कहा कि तुम ऐसा कुछ करो, जिससे तुम्हारे फॉलोवर्स और दूसरे लोग प्रेरित हो सकें। उसके जरिये एक खूबसूरत संदेश दो, जो लोगों के काम आए। कई बार कठिनाइयों से घिरने पर आत्मविश्वास डगमगा जाता है, ऐसे समय में लोगों का मार्गदर्शन किया जा सकता है। घर पर रहने की वजह से खुद पर काम करने का मौका मिला है। ऐसे में लोगों को खुद से प्यार करना चाहिए। सेल्फ लव के भी अलग-अलग जरिए हैं, उनके बारे में बातें होंगी, जो जानकारियों से भरपूर होंगी। लोग इस दौरान काम पर कैसे फोकस करें, उस पर चर्चाएं होंगी।

एक खूबसूरत सुबह होगी : अनीता राज

परिवार के बीच रहकर पुरानी यादों को ताजा कर रही हैं अभिनेत्री अनीता राज। वह अपने शो 'छोटी सरदानी' के पुराने एपिसोड भी देख रही हैं। वह बताती हैं कि पुराने एपिसोड देखकर लगता है कि कितना बदलाव आ गया है हमारी शक्लों में। अपनी पुरानी फिल्में फिलहाल नहीं देख रही हूं। इतनी लंबी छुट्टी को लेकर उनका कहना है कि जब फिल्में करती थी, तब एक हफ्ते की छुट्टी कई बार मिल जाती थी, लेकिन इतनी लंबी छुट्टी कभी नहीं मिली। मैं बुद्धिज्म को मानती हूं, इसलिए चिंता नहीं घेरती है। उनका कहना है कि जब भी चिंताएं या डिप्रेशन हो, तो ध्यान लगाएं। विटामिन सी का सेवन करें और प्राणायम करें। अनीता बताती हैं कि घर के काम

करने में उन्हें कभी दिक्कत नहीं रही है, क्योंकि उनके माता-पिता ने उन्हें सारे काम सिखाए थे। वह हमेशा से घर की साफ-सफाई करती रही थीं। अनीता बताती हैं कि आजकल सुबह से शाम तक घर में क्या खाना बनना है, इसको लेकर खूब चर्चाएं होती रहती हैं। साल 2020 हर किसी को याद रह जाएगा। अनीता बताती हैं कि उन्हें अपनी शादी का एलबम देखने के वक्त मिला है। पुरानी तस्वीरें देखकर खूबसूरत यादें ताजा हो गईं। सफाई के दौरान उन्हें कई किताबें मिलीं, जिन्हें पढ़ने का मौका मिल रहा है। मेरी दोस्त ने एक तस्वीर भेजी थी, जिसमें मैं 6-7 साल की थी। किन हालातों से हम गुजरकर यहां तक पहुंचे हैं, वह सब याद आ गया। यह वक्त परिवार की अहमियत के साथ ही लोगों को यह भी सिखा जाएगा कि पर्यावरण को हल्के में बिल्कुल भी न लें। अनीता का कहना है कि यह वक्त बहुत अहम है। सरकार जो निर्देश दे रही है, उसका पालन ईमानदारी से करें। इस रात के बाद एक खूबसूरत सुबह होगी।

'पैरासाइट' फिल्म के एक जैसे रिव्यू पर उर्वशी ने दी सफाई

चार ऑस्कर अवॉर्ड से सम्मानित फिल्म 'पैरासाइट' हाल ही में ओटीटी प्लेटफॉर्म पर आई है। इस फिल्म का जो रिव्यू उर्वशी रौतेला ने सोशल मीडिया पर साझा किया है, उसे लेकर विवाद हो गया था। उस पर उर्वशी के प्रवक्ता ने सफाई दी है। दरअसल, उर्वशी के रिव्यू का एक-एक अक्षर अमेरिकी लेखक जेपी ब्रैमर के रिव्यू से मिलता है। उर्वशी के प्रवक्ता ने इस पर कहा है कि वह ट्वीट उर्वशी ने नहीं, बल्कि उनकी टीम ने उनसे बिना पूछे किया था। जब हमें इस बात का पता चला, तब हमने इस पर उचित कदम उठाए। इस असुविधा के लिए हमें खेद है। वैसे जीपी ब्रैमर ने उर्वशी के अकाउंट पर अपने लिखे रिव्यू के कॉपी किए हुए ट्वीट का स्क्रीनशॉट साझा करते हुए लिखा कि उन्होंने (उर्वशी ने) व्याकरण क्यों नहीं सुधारा। मेरा व्याकरण बुरा है। फिल्मों की बात करें, तो उर्वशी रौतेला की आगामी फिल्म वर्जिन भानुप्रिया होगी।

सुष्मिता सेन ने दिखाई 'आर्या' की पहली झलक

पूर्व मिस यूनिवर्स सुष्मिता सेन पिछले दस वर्षों से हिंदी सिनेमा से दूर हैं। वह जल्द ही वेब सीरीज 'आर्या' से डिजिटल डेब्यू करने वाली थीं, लेकिन उनकी वेब सीरीज की रिलीज टल गई। इस वेब सीरीज को 29 मार्च को हॉटस्टार और डिज्नी प्लस पर रिलीज करने की योजना थी। सुष्मिता ने शनिवार को सोशल मीडिया पर 'आर्या' का ताजा अपडेट साझा किया। वेब सीरीज की पहली झलक साझा करते हुए उन्होंने लिखा, 'लोग आर्या की प्रगति और रिलीज के बारे में लगातार पूछ रहे थे। मैं आपको बताना चाहती हूं कि भगवान की कृपा से कोरोना वायरस के महामारी घोषित होने से पहले ही 'आर्या' की शूटिंग पूरी हो चुकी थी। पोस्ट प्रोडक्शन का काम रुका हुआ था, इसलिए इसमें विलंब है। इस वेब सीरीज को यादगार बनाने के लिए लगभग तीन सौ लोगों ने बिना थके काम किया। जल्द ही हम सब एक

साथ 'आर्या' देखेंगे। आपके लिए 'आर्या' की एक छोटी सी झलक। धैर्य रखने के लिए धन्यवाद।' आर्या के पोस्टर, ट्रेलर और रिलीज के बारे में एक प्रशंसक द्वारा पूछे सवाल पर सुष्मिता ने बताया कि काम जारी है। स्वस्थ रहो। राम माधवानी के निर्देशन में बन रही 'आर्या' राजस्थान की पृष्ठभूमि पर आधारित है। सुष्मिता साल 2010 में रिलीज फिल्म नो प्रॉब्लम में आखिरी बार स्क्रीन पर नजर आई थी। इस बीच उन्होंने साल 2015 में श्रीजीत मुखर्जी के निर्देशन में बनी फिल्म से बांग्ला सिनेमा में डेब्यू किया था।

मनरंजन

कार्तिक की 'बागबान' के लिए भूमि का आवेदन

कार्तिक आर्यन सोशल मीडिया पर अपने प्रशंसकों का मनोरंजन करते रहते हैं। शुक्रवार को उन्होंने उम्र बढ़ाने वाले एक एप से संपादित की हुई अपनी एक तस्वीर साझा की, जिसमें उनकी उम्र काफी ज्यादा दिखाई दे रही है। इस तस्वीर को साझा करते हुए उन्होंने लिखा, 'इस समय उम्र तेजी से बढ़ रही है। चलो 'बागबान' की रीमेक बनाई जाए। हीरोइनों की कास्टिंग शुरू है, कृपया अपने-अपने आवेदन भेजें।' अर्जुन कपूर ने इस पर टिप्पणी

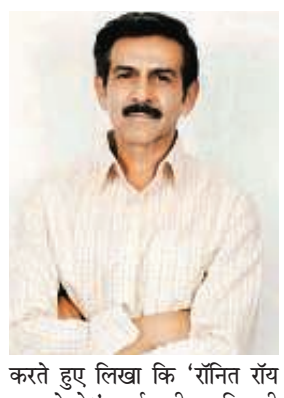

करते हुए लिखा कि 'रॉनित रॉय लग रहे हो।' अर्जुन की इस टिप्पणी पर कई प्रशंसकों ने भी सहमति जताई। जाह्नवी कपूर ने टिप्पणी की कि 'अपना आवेदन भेज रही हूं। उम्मीद है कि इसके लिए मैं ज्यादा बड़ी नहीं हूं। मुझे कथक करना आता है और मेरे पास एक वैध पासपोर्ट भी है।' मजाकिया अंदाज में इसका जवाब देते हुए कार्तिक ने लिखा, 'क्या आपके पास चीन का वीजा है, क्योंकि फिल्म चीन में सेट है।' कार्तिक की इस काल्पनिक 'बागबान' के लिए भूमि पेडणेकर ने भी दिलचस्पी दिखाई। भूमि ने कार्तिक को टैग करते हुए सोशल मीडिया पर फिल्म 'सांड की आंख' की तस्वीर साझा की और लिखा, 'सर, मैं कास्टिंग के लिए अपना आवेदन भेज रही हूं। फिल्म 'सांड की आंख' में आप पूरा शो रील देख सकते हैं। कृपया मुझे अपनी फिल्म में कास्ट कीजिए।' इसके जवाब में कार्तिक ने लिखा कि 'आप इस किरदार के लिए अभी बहुत छोटी हैं, फिर भी हम आपके बारे में सोचेंगे।' बता दें कि कार्तिक और भूमि ने फिल्म 'पति पत्नी और वो' में एक साथ काम किया था। कार्तिक इससे पहले भी लॉकडाउन में घर में रहने को लेकर अपना मोनोलॉग वीडियो साझा कर चुके हैं।

मिलिंद सोमण की 81 वर्षीय मां ने दिया 28 वर्षीय बहू को 'लंगड़ी टांग चैलेंज'

शरीर अगर स्वस्थ हो तो इंसान किसी भी उम्र के इंसान को मात दे सकता है। ऐसा ही कुछ हो रहा है मिलिंद सोमण की मम्मी और उनकी पत्नी के बीच। कई मैराथन में दौड़ चुके मिलिंद सोमण खुद तो फिट हैं ही, साथ ही उनकी मम्मी ऊषा सोमण भी काफी फिट हैं। उनके फिटनेस वीडियो भी मिलिंद साझा करते रहते हैं। अब जो वीडियो मिलिंद ने साझा की है,

वह बेहद ही प्रभावित और प्रेरित करने वाला है। इस वीडियो में मिलिंद की 81 वर्षीय मम्मी उनकी 28 साल की पत्नी अंकिता कुंवर के साथ 'लंगड़ी टांग' खेल रही हैं। कमाल की बात है कि मिलिंद की मम्मी की ऊर्जा कहीं से भी कम नहीं नजर आ रही हैं। वह इस खेल में अंकिता को पछाड़ते हुए नजर आ रही हैं। इस वीडियो का साझा करते हुए मिलिंद ने लिखा, '28 और 81, हर उम्र में फिट रहें।' इन दोनों के वीडियो को दर्शकों की खूब प्रतिक्रिया मिल रही है।

टूटे चश्मे और चप्पल के साथ मैनेज कर रही हैं ट्विंकल

ट्विंकल ने एक वीडियो पोस्ट किया है, जिसमें उन्होंने एक टूटा चश्मा और टूटी हुई चप्पल दिखाई। चश्मे को टेप की मदद से जोड़ा गया था, जबकि चप्पल को गम की मदद से जोड़ने

की कोशिश की जा रही थी। इसमें बेटा आरव उनकी मदद कर रहे हैं। ट्विंकल ने इसके साथ लिखा, 'पहले चश्मे पर टेप लगाया। अब जो मैं स्लीपर पहन रही थी, वह भी टूट गई है, जो मैं अपने प्लास्टर लगे पैरों के साथ मैच करके पहना करती थी। ग्लू से जोड़ने की कोशिश कर रही हूं, लेकिन हो नहीं पा रहा है। इस पोस्ट पर यूजर्स खूब प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। एक ने लिखा, 'आप इसके लिए चीन का दोष दे सकती हैं।' अन्य ने लिखा, 'क्या आपके पास अतिरिक्त चप्पल नहीं है।' जबकि एक ने लिखा, 'लेदर की चप्पल पर ये वाली ग्लू काम नहीं करती है।' एक यूजर ने लिखा, 'कहां से मिला इतना पुराना स्लीपर और चश्मा।'

जिसका बेटा लंबा उसका भी बड़ा नाम है ..

शुक्रवार को विक्की कौशल ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो साझा की, जिसमें वह अपने घर का पंखा साफ करते हुए नजर आ रहे हैं। वीडियो के अंत में वह कहते हैं कि 'जिसका

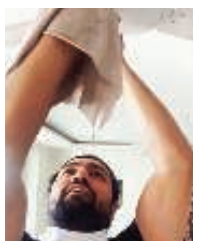

बेटा लंबा उसका भी बड़ा नाम है, पंखे साफ करा लो स्टूल का क्या काम है।' उन्होंने लिखा, 'मैंने सोचा था कि आज फैंस से बात करूंगा।' इस पर अर्जुन कपूर ने टिप्पणी की 'फैंस के साथ तुम बहुत व्यक्तिगत हो रहे हो।' जैक्लिन ने टिप्पणी की- बहुत ध्यान से। इसके जवाब में विक्की ने कहा कि मैं अपने फैंस को बहुत गंभीरता से लेता हूं। कृति सैनन ने लिखा, 'लंबे होने का फायदा और नुकसान। इसके अलावा प्रशंसकों ने भी विक्की के इस वीडियो पर खूब मजे लेते हुए उन्हें मैरिज मटीरियल (शादी लायक लड़का) बताया।

आज के प्रमुख टीवी कार्यक्रम

डीडी नेशनल
रंगोली : सुबह 8.00
रामायण : सुबह 9.00/रात 9.10
कोविड 19 अपडेट्स : सुबह 10.30/शाम 7.00
व्योमकेश बक्शी : सुबह 11.00
गोदान : दोपहर 12.30
बातें फिल्मों की : दोपहर 1.30
सर्कस : दोपहर 3.00
श्रीमान श्रीमती : शाम 4.00
बुनियाद : शाम 5.00
शक्तिमान : रात 8.00

डीडी भारती
महाभारत : दोपहर 12.00/शाम 7.00

स्टार प्लस
महाराज की जय हो : सुबह 6.30/दोपहर 2.30
महाभारत : सुबह 7.00
ये रिश्ता क्या कहलाता है : दोपहर 12.00
डांस प्लस : शाम 5.00
टोटल धमाल : रात 9.30

कलर्स
श्रीमद्भागवत महापुराण : सुबह 8.00
लवकुश : शाम 5.00
कॉमेडी नाइट्स विद कपिल : शाम 6.00
नागिन : रात 8.00
खतरों के खिलाड़ी : रात 9.00

सोनी
क्राइम पेट्रोल डायल 100 : सुबह 6.06
बेस्ट ऑफ द कपिल शर्मा शो : सुबह 7.00
सुपर डांसर : दोपहर 3.30
इंडियाज बेस्ट डांसर : रात 8.00

सब टीवी
मैडम सर : सुबह 6.30
तारक मेहता का उल्टा चश्मा : सुबह 7.00/शाम 7.00